अध्याय १४

वृन्दावन लीलाओं का सम्पादन

महाराज प्रतापरुद्र एक वैष्णव का वेश धारण करके बलगंडि में अकेले एक बगीचे में गये और *श्रीमद्भागवत* के श्लोक उच्चारण करने लगे। फिर उन्हें श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमल दबाने का अवसर प्राप्त हुआ। महाप्रभु ने कृष्ण-प्रेमावेश में तुरन्त राजा का आलिंगन कर लिया और इस तरह उसे अपनी कृपा का दान दिया। जब बगीचे में प्रसाद बाँटा गया, तो भगवान् चैतन्य ने भी उसे ग्रहण किया। इसके बाद जब जगन्नाथजी का रथ चलते-चलते रुक गया, तो राजा प्रतापरुद्र ने उसे खींचने के लिए कई हाथी मँगाये, किन्तु वे असफल रहे। यह देखकर महाप्रभु ने जब रथ को पीछे से अपने सिर से ठेलना शुरू किया, तो वह रथ चलने लगा। तब भक्तों ने रथ को रस्सों से खींचना शुरू किया। गुण्डिचा मन्दिर के पास ही आइटोटा नाम का एक स्थान है। यहाँ पर श्री चैतन्य महाप्रभु के विश्राम की व्यवस्था की गई थी। जब भगवान् जगन्नाथ सुन्दराचल पर आरूढ़ हो गये, तो श्री चैतन्य महाप्रभु ने इसे वृन्दावन के रूप में देखा। उन्होंने इन्द्रद्युम्न सरोवर के जल में क्रीड़ाएँ कीं। महाप्रभु रथयात्रा के समय नौ दिनों तक लगातार सुन्दराचल में रहे। पाँचवे दिन महाप्रभु तथा स्वरूप दामोदर ने लक्ष्मी की लीलाएँ देखीं। उस समय गोपियों की लीलाओं की बड़ी चर्चा होती रही। जब रथ पुन: खींचा जाने लगा और कीर्तन शुरू हो गया, तो कुलीन ग्राम के रामानन्द वसु तथा सत्यराज खान नामक दो भक्तों से अनुरोध किया गया कि वे प्रतिवर्ष रथयात्रा उत्सव के लिए रेशमी रस्से लाएँ।

গৌরঃ পশ্যন্নাত্ম-বৃন্দৈঃ শ্রী-লক্ষ্মী-বিজয়োত্সবম্ ।
শ্রুত্বা গোপী-রসোল্লাসং হৃষ্টঃ প্রেম্ণা ননর্ত সঃ ॥ ১ ॥

गौरः पश्यन्नात्म-वृन्दैः श्री-लक्ष्मी-विजयोत्सवम् ।
श्रुत्वा गोपी-रसोल्लासं हृष्टः प्रेम्णा ननर्त सः ॥ १ ॥

गौरः—श्री चैतन्य महाप्रभु; **पश्यन्**—देखकर; **आत्म-वृन्दैः**—अपने निजी पार्षदों के साथ; **श्री-लक्ष्मी**—लक्ष्मी-देवी के; **विजय-उत्सवम्**—विजय उत्सव; **श्रुत्वा**—सुनकर; **गोपी**—गोपियों की; **रस-उल्लासम्**—रस की उत्तमता; **हृष्टः**—अति प्रसन्न होकर; **प्रेम्णा**—प्रेमावेश में; **ननर्त**—नृत्य किया; **सः**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने।

अनुवाद

अपने निजी भक्तों के साथ श्री चैतन्य महाप्रभु लक्ष्मी विजयोत्सव में गये। वहाँ उन्होंने गोपियों के सर्वोत्कृष्ट प्रेम की चर्चा की। इन सबको सुनने से ही वे परम प्रसन्न हुए और भगवत्प्रेम से अभिभूत होकर खूब नाचे।

জয় জয় গৌরচন্দ্র শ্রী-কৃষ্ণ-চৈতন্য ।
জয় জয় নিত্যানন্দ জয়াদ্বৈত ধন্য ॥ ২ ॥

जय जय गौरचन्द्र श्री-कृष्ण-चैतन्य ।
जय जय नित्यानन्द जयाद्वैत धन्य ॥ २ ॥

जय जय—जय हो; **गौरचन्द्र**—गौरचन्द्र की; **श्री-कृष्ण-चैतन्य**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **जय जय**—जय हो; **नित्यानन्द**—नित्यानन्द प्रभु की; **जय**—जय हो; **अद्वैत**—अद्वैत आचार्य की; **धन्य**—धन्य।

अनुवाद

गौरचन्द्र नाम से विख्यात श्री चैतन्य महाप्रभु की जय हो! नित्यानन्द प्रभु की जय हो! परम धन्य अद्वैत आचार्य की जय हो!

জয় জয় শ্রীবাসাদি গৌর-ভক্ত-গণ ।
জয় শ্রোতা-গণ,——যাঁর গৌর প্রাণ-ধন ॥ ৩ ॥

जय जय श्रीवासादि गौर-भक्त-गण ।
जय श्रोता-गण,——याँर गौर प्राण-धन ॥ ३ ॥

जय जय—जय हो; **श्रीवास-आदि**—श्रीवास आदि की; **गौर-भक्त-गण**—भगवान्

चैतन्य महाप्रभु के भक्तों की; **जय**—जय हो; **श्रोता-गण**—श्रोताओं की; **ग्राँर**—जिनके; **गौर**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **प्राण-धन**—जीवन और आत्मा (सर्वस्व)।

अनुवाद

श्रीवास ठाकुर इत्यादि समस्त भक्तों की जय हो! उन सारे पाठकों की जय हो, जिन्होंने श्री चैतन्य महाप्रभु को अपने प्राणधन माने हैं।

এই-মত প্রভু আছেন প্রেমের আবেশে ।
হেন-কালে প্রতাপরুদ্র করিল প্রবেশে ॥৪॥

এइ-মত প্রভু আছেন প্রেমের আবেশে ।
হেন-কালে প্রতাপরুদ্র করিল প্রবেশে ॥৪॥

এइ-মত—इस प्रकार; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **আছেন**—थे; **প্রেমের আবেশে**—प्रेमावेश में; **হেন-কালে**—इस समय; **প্রতাপরুদ্র**—राजा प्रतापरुद्र ने; **করিল প্রবেশে**—प्रवेश किया।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु प्रेमाविष्ट होकर विश्राम कर रहे थे, तभी राजा प्रतापरुद्र बगीचे के भीतर प्रविष्ट हुए।

সার্বভৌম-উপদেশে ছাড়ি' রাজ-বেশ ।
একলা বৈষ্ণব-বেশে করিল প্রবেশ ॥৫॥

সার্বভৌম-উপদেশে ছাড়ি' রাজ-বেশ ।
একলা বৈষ্ণব-বেশে করিল প্রবেশ ॥৫॥

সার্বভৌম—सार्वभौम भट्टाचार्य के; **উপদেশে**—उपदेशानुसार; **ছাড়ি'**—त्यागकर; **রাজ-বেশ**—राजसी वेशभूषा; **একলা**—अकेले; **বৈষ্ণব-বেশে**—वैष्णव के वेश में; **করিল প্রবেশ**—प्रवेश किया।

अनुवाद

सार्वभौम भट्टाचार्य के उपदेशानुसार राजा ने अपना राजसी वेश छोड़ दिया और अब वह वैष्णव-वेश में बगीचे में प्रविष्ट हुए।

तात्पर्य

कभी-कभी अन्तर्राष्ट्रीय कृष्णभावनामृत संघ के सदस्यों को पुस्तक वितरित करते समय, विशेषतया पाश्चात्य देशों में लोगों तक पहुँचने में कठिनाई

होती है, क्योंकि वहाँ के लोग भक्तों के परम्परागत गेरुवे वस्त्र से अपरिचित होते हैं। इसलिए भक्त पूछते हैं कि क्या वे जनता के समक्ष यूरोपीय तथा अमरीकी वेशभूषा में जा सकते हैं? सार्वभौम भट्टाचार्य ने राजा प्रतापरुद्र को जो उपदेश दिया था, उसके अनुसार हम अपने सेवा-कार्य की सुविधा हेतु अपना वेश जैसा चाहें, बदल सकते हैं। अत: जब हमारे भक्तगण जनता से मिलते समय या हमारी पुस्तकों का प्रचार करते समय, अपना वेश बदलते हैं, तो वे भक्ति के नियमों को तोड़ते नहीं हैं। असली सिद्धान्त तो कृष्णभावनामृत आन्दोलन का प्रसार करना है और यदि इस कार्य के लिए किसी को सामान्य पाश्चात्य वेशभूषा पहननी पड़े, तो इसमें कोई एतराज नहीं होना चाहिए।

सब-भक्तेर आज्ञा निल योड़-हात हञा ।
प्रभु-पद धरि' पड़े साहस करिया ॥ ६॥

सब-भक्तेर आज्ञा निल योड़-हात हञा ।
प्रभु-पद धरि' पड़े साहस करिया ॥ ६॥

सब-भक्तेर—सभी भक्तों की; **आज्ञा निल**—आज्ञा ली; **योड़-हात हञा**—हाथ जोड़कर; **प्रभु-पद धरि'**—श्री चैतन्य महाप्रभु के चरण पकड़कर; **पड़े**—गिर पड़े; **साहस करिया**—साहस करके।

अनुवाद

महाराज प्रतापरुद्र इतने विनीत थे कि सर्वप्रथम उन्होंने सारे भक्तों से हाथ जोड़कर अनुमति माँगी। तब साहस बटोरकर वे महाप्रभु के चरणों पर गिर पड़े और उनका स्पर्श किया।

आङ्खि मुदि' प्रभु प्रेमे भूमिते शयान ।
नृपति नैपुण्ये करे पाद-संवाहन ॥ ७॥

आङ्खि मुदि' प्रभु प्रेमे भूमिते शयान ।
नृपति नैपुण्ये करे पाद-संवाहन ॥ ७॥

आङ्खि मुदि'—आँखे मूँदकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **प्रेमे**—प्रेमावेश में; **भूमिते**—भूमि पर; **शयान**—लेटे थे; **नृपति**—राजा; **नैपुण्ये**—बड़ी निपुणता से; **करे**—किया; **पाद-संवाहन**—चरण दबाए।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु प्रेमाविष्ट होकर आँखें मूँदे चबूतरे पर लेटे थे और राजा बड़ी निपुणता से उनके पाँव दबाने लगे।

রাস-লীলার শ্লোক পড়ি' করেন স্তবন ।
''জয়তি তেঽধিকং'' অধ্যায় করেন পঠন ॥৮॥

রাস-লীলার শ্লোক পড়ি' করেন স্তবন ।
"জয়তি তেঽধিকং" অধ্যায় করেন পঠন ॥৮॥

রাস-লীলার—रास लीला के; **শ্লোক**—श्लोक; **পড়ি'**—पढ़कर; **করেন**—किया; **স্তবন**—स्तवन (स्तुति); **জয়তি তেঽধিকম্**—*जयति तेऽधिकम्* शब्दों के आरम्भ करके; **অধ্যায়**—अध्याय; **করেন**—किया; **পঠন**—पठन।

अनुवाद

वे श्रीमद्भागवत से रासलीला विषयक श्लोक पढ़कर सुनाने लगे। उन्होंने "जयति तेऽधिकम्" से प्रारम्भ होने वाला अध्याय पढ़ा।

तात्पर्य

श्रीमद्भागवत के दसवें स्कंध, अध्याय इकतीस के ये श्लोक *गोपी-गीत* के नाम से विख्यात हैं।

শুনিতে শুনিতে প্রভুর সন্তোষ অপার ।
'বল, বল' বলি' প্রভু বলে বার বার ॥৯॥

শুনিতে শুনিতে প্রভুর সন্তোষ অপার ।
'বল, বল' বলি' প্রভু বলে বার বার ॥৯॥

শুনিতে শুনিতে—सुनकर; **প্রভুর**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **সন্তোষ অপার**—अपार सन्तोष; **বল বল**—बारम्बार पढ़ो; **বলি'**—कहा; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **বলে**—कहा; **বার বার**—बारम्बार।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु ने इन श्लोकों को सुना, तो वे अत्यन्त प्रसन्न हुए और बारम्बार कहने लगे "सुनाते रहो, सुनाते रहो।"

"तव कथामृतं" श्लोक राजा ये पड़िल ।
उठि' प्रेमावेशे प्रभु आलिङ्गन कैल ॥ १० ॥

"तव कथामृतं" श्लोक राजा ये पड़िल ।
उठि' प्रेमावेशे प्रभु आलिङ्गन कैल ॥ १० ॥

तव कथामृतम्—*तव कथामृतम्* शब्दों से आरम्भ होने वाला श्लोक; **श्लोक**—श्लोक; **राजा**—राजा; **ये पड़िल**—जैसे उन्होंने पढ़ा; **उठि'**—उठकर; **प्रेम-आवेशे**—प्रेमावेश में; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **आलिङ्गन कैल**—आलिंगन किया।

अनुवाद

ज्योंही राजा ने "तव कथामृतं" शब्दों से आरम्भ होने वाला श्लोक पढ़ा, त्योंही महाप्रभु तुरन्त प्रेमावेश में आकर उठे और उन्होंने राजा का आलिंगन कर लिया।

तुमि मोरे दिले बहु अमूल्य रतन ।
मोर किछु दिते नाहि, दिलुँ आलिङ्गन ॥ ११ ॥

तुमि मोरे दिले बहु अमूल्य रतन ।
मोर किछु दिते नाहि, दिलुँ आलिङ्गन ॥ ११ ॥

तुमि—तुमने; **मोरे**—मुझे; **दिले**—दिया; **बहु**—बहुत; **अमूल्य**—अमूल्य; **रतन**—रत्न; **मोर**—मेरा; **किछु**—कुछ; **दिते**—देने के लिए; **नाहि**—नहीं; **दिलुँ**—मैं देता हूँ; **आलिङ्गन**—आलिंगन।

अनुवाद

राजा द्वारा सुनाये गये श्लोक को सुनकर श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "तुमने मुझे अमूल्य रत्न प्रदान किये हैं, किन्तु मेरे पास बदले में तुम्हें देने के लिए कुछ भी नहीं है। इसीलिए मैं तुम्हारा आलिंगन-मात्र कर रहा हूँ।"

एत बलि' सेइ श्लोक पड़े बार बार ।
दुइ-जनार अङ्गे कम्प, नेत्रे जल-धार ॥ १२ ॥

एत बलि' सेइ श्लोक पड़े बार बार ।
दुइ-जनार अङ्गे कम्प, नेत्रे जल-धार ॥ १२ ॥

एत बलि'—यह कहकर; **सेइ श्लोक**—वह श्लोक; **पड़े**—पढ़ा; **बार बार**—बारम्बार; **दुइ-जनार**—दोनों के (श्री चैतन्य महाप्रभु और राजा प्रतापरुद्र के); **अङ्गे**—शरीरों में; **कम्प**—कँपन; **नेत्रे**—नेत्रों में; **जल-धार**—जलधारा।

अनुवाद

यह कहकर श्री चैतन्य महाप्रभु उसी श्लोक को बारम्बार पढ़ने लगे। राजा तथा श्री चैतन्य महाप्रभु दोनों ही काँप रहे थे और उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे।

तव कथामृतं तप्त-जीवनं
कविभिरीड़ितं कल्मषापहम् ।
श्रवण-मङ्गलं श्रीमदाततं
भुवि गृणन्ति ये भूरिदा जनाः ॥१३॥

तव कथामृतं तप्त-जीवनं
कविभिरीड़ितं कल्मषापहम् ।
श्रवण-मङ्गलं श्रीमदाततं
भुवि गृणन्ति ये भूरिदा जनाः ॥ १३॥

तव—आपकी; **कथा-अमृतम्**—कथामृत; **तप्त-जीवनम्**—भौतिक संसार में दुःखी लोगों के लिए जीवन है; **कविभिः**—महान् पुरुषों द्वारा; **ईड़ितम्**—वर्णित; **कल्मष-अपहम्**—सभी पापफलों को नष्ट करने वाले; **श्रवण-मङ्गलम्**—सुनने वालों को आध्यात्मिक लाभ प्रदान करने वाले; **श्री-मत्**—सभी दिव्य शक्ति से युक्त; **आततम्**—सारे विश्व में प्रसारित; **भुवि**—भौतिक जगत् में; **गृणन्ति**—जपते हैं और प्रचार करते हैं; **ये**—वे जो; **भूरि-दाः**—अत्यन्त परोपकारी; **जनाः**—व्यक्ति।

अनुवाद

"हे प्रभु, आपकी वाणी का अमृत तथा आपके कार्यकलापों का वर्णन इस भौतिक जगत् से संतप्त जीवों के लिए प्राणतुल्य हैं। ये कथाएँ महापुरुषों द्वारा संप्रेषित की जाती हैं और ये सभी पापफलों का नाश करने वाली हैं। जो भी इन कथाओं को सुनता है, उसे सौभाग्य प्राप्त होता है। ये कथाएँ विश्वभर में प्रसारित होती हैं और आध्यात्मिक शक्ति से युक्त होती हैं। जो लोग ईश्वर के सन्देश का प्रचार करते हैं, वे निश्चय ही महान् दानी तथा कल्याणकर्ता हैं।'"

तात्पर्य

यह श्लोक *श्रीमद्भागवत* (१०.३१.९) से लिया गया है।

'ভূরিদা' 'ভূরিদা' বলি' করে আলিঙ্গন ।
ইঁহো নাহি জানে,—ইহোঁ হয় কোন্‌জন ॥ ১৪॥

'भूरिदा' 'भूरिदा' बलि' करे आलिङ्गन ।
इँहो नाहि जाने,—इहों हय कोन्जन ॥ १४॥

भूरि-दा—अत्यन्त परोपकारी; **भूरि-दा**—अत्यन्त परोपकारी; **बलि'**—पुकारकर; **करे**—किया; **आलिङ्गन**—आलिंगन; **इँहो**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **नाहि जाने**—नहीं जानते थे; **इहों**—प्रतापरुद्र महाराज; **हय**—है; **कोन् जन**—कौन।

अनुवाद

इस श्लोक को पढ़ने के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु ने तुरन्त राजा प्रतापरुद्र का आलिंगन कर लिया और कहा, "तुम अत्यन्त वदान्य (दानी) हो! तुम अत्यन्त दानी हो।" अभी तक श्री चैतन्य महाप्रभु यह नहीं जानते थे कि राजा कौन थे।

পূর্ব-সেবা দেখি' তাঁরে কৃপা উপজিল ।
অনুসন্ধান বিনা কৃপা-প্রসাদ করিল ॥ ১৫॥

पूर्व-सेवा देखि' ताँरे कृपा उपजिल ।
अनुसन्धान विना कृपा-प्रसाद करिल ॥ १५॥

पूर्व-सेवा—पिछली सेवा; **देखि'**—देखकर; **ताँरे**—उनके प्रति; **कृपा**—कृपा; **उपजिल**—उत्पन्न हुई; **अनुसन्धान**—पूछताछ; **विना**—बिना; **कृपा**—कृपा का; **प्रसाद**—प्रसाद; **करिल**—दिया।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु में राजा की पिछली सेवा के फलस्वरूप दयाभाव जागा था। अतएव बिना पूछे कि वह कौन है, महाप्रभु ने तुरन्त उस पर कृपा की।

এই দেখ,—চৈতন্যের কৃপা-মহাবল ।
তার অনুসন্ধান বিনা করায় সফল ॥ ১৬॥

एइ देख,—चैतन्येर कृपा-महाबल ।
तार अनुसन्धान विना कराय सफल ॥ १६॥

एइ—यह; **देख**—जरा देखो; **चैतन्येर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **कृप-महा-बल**—कृपा का महान् बल; **तार अनुसन्धान**—उसके बारे में पूछे; **विना**—बिना; **कराय**—वे करते हैं; **स-फल**—सफल।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा कितनी शक्तिशाली है! महाप्रभु ने राजा से पूछे बिना हर काम को सफल बना दिया।

तात्पर्य

श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा इतनी बलशाली है कि वह स्वत: कार्य करती है। यदि कोई व्यक्ति कृष्ण की प्रेममयी सेवा करता है, तो वह कभी व्यर्थ नहीं जाती। इसको आध्यात्मिक खाते में लिख लिया जाता है और सही समय आने पर वह फलदायक होती है। इसकी पुष्टि *भगवद्गीता* (२.४०) द्वारा होती है :

नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते।
स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्॥

"इस प्रयास में कोई हानि या कमी नहीं है और इस मार्ग पर थोड़ी-सी भी प्रगति मनुष्य की भयानक से भयानक भय से रक्षा कर सकती है।"

इस युग में श्री चैतन्य महाप्रभु ने समस्त पतितात्माओं को भक्ति की संकीर्तन नामक अर्थात् भगवान् के पवित्र नाम के सामूहिक कीर्तन की सर्वोच्च शक्तिशाली विधि प्रदान की है और जो भी इसे श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा से ग्रहण करता है, वह तुरन्त दिव्य पद को प्राप्त होता है। *श्रीमद्भागवत* (११.५.३२) की संस्तुति है—*यज्ञै: सङ्कीर्तन प्रायैर्यजन्ति हि सुमेधस:।*

कृष्णभावनामृत के जिज्ञासु को श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा अवश्य प्राप्त होगी, तभी उसकी भक्ति शीघ्र सफल होगी। राजा प्रतापरुद्र के साथ यही हुआ। मनुष्य पर श्री चैतन्य महाप्रभु की दृष्टि पड़नी चाहिए और श्रद्धापूर्वक थोड़े-से ही प्रयास से की गई सेवा से महाप्रभु आश्वस्त हो जायेंगे कि वह व्यक्ति

भगवद्धाम वपास जाने के लिए सुपात्र है। शुरू में महाराज प्रतापरुद्र को श्री चैतन्य महाप्रभु से भेंट करने का अवसर प्राप्त होने की गुँजाईश नहीं थी, किन्तु जब महाप्रभु ने देखा कि वह राजा क्षुद्र झाड़ू देने वाले के रूप में भगवान् जगन्नाथ की सेवा कर रहा है, तो राजा पर महाप्रभु की कृपा निश्चित हो गई। जब महाराज प्रतापरुद्र वैष्णव के रूप में महाप्रभु की सेवा कर रहे थे, तो महाप्रभु ने यह भी नहीं पूछा कि वह कौन है। प्रत्युत उन्हें उन पर दया आ गई और उन्होंने उनका आलिंगन कर लिया।

कृष्णदास कविराज गोस्वामी इंगित करना चाहते हैं कि महाराज प्रतापरुद्र के प्रति महाप्रभु की कृपा के साथ किसी भी वस्तु की तुलना नहीं की जा सकती; इसीलिए वे *देख* (अर्थात् "जरा देखो") और *चैतन्येर कृपा-महाबल* ("श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा कितनी शक्तिशाली है") शब्दों का प्रयोग करते हैं। श्रील प्रबोधानन्द सरस्वती भी इसकी पुष्टि करते हैं—*यत्कारुण्य-कटाक्षवैभववताम्* (*चैतन्य चन्द्रामृत* ५)। आध्यात्मिक प्रगति में महाप्रभु की रंचमात्र भी कृपा बहुत बड़ी निधि बन जाती है। अतएव कृष्णभावनामृत आन्दोलन का श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा के माध्यम से प्रचार करना चाहिए। जब श्रील रूप गोस्वामी को श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा तथा दयालुता का अनुभव हुआ, तो उन्होंने कहा :

नमो महावदान्याय कृष्णप्रेमप्रदाय ते।
कृष्णाय कृष्णचैतन्यनाम्ने गौरत्विषे नमः॥

"मैं उन भगवान् श्रीकृष्ण चैतन्य को सादर नमस्कार करता हूँ, जो किसी अन्य अवतार से, यहाँ तक कि स्वयं कृष्ण से भी अधिक दयालु हैं, क्योंकि वे मुक्तहस्त से वह—शुद्ध कृष्ण-प्रेम—प्रदान कर रहे हैं, जो किसी ने कभी नहीं दिया।" श्रील लोचन दास ठाकुर ने भी गाया है—*परम करुण, पहुँ दुइ जन, निताई-गौरचन्द्र*—"निताई तथा गौर—ये दोनों भाई इतने दयालु हैं कि कोई उनकी बराबरी नहीं कर सकता।" इसी प्रकार श्रील नरोत्तम दास ठाकुर ने गाया है :

व्रजेन्द्रनन्दन येइ, शचीसुत हैल सेइ,
बलराम हइल निताइ

दीन-हीन यत छिल, हरि नामे उद्धारिल,
ता'र साक्षी जगाइ-माधाइ॥

"पवित्र नाम का प्रचार करके इस युग के सभी पापियों का उद्धार करने के लिए, भगवान् कृष्ण और भगवान् बलराम श्री चैतन्य महाप्रभु और नित्यानन्द प्रभु के रूप में अवतरित हुए हैं। जगाई और माधाई उनकी सफलता के जीवंत उदाहरण हैं।"

श्री चैतन्य महाप्रभु का विशिष्ट मिशन है—कलियुग में सारे पतित जीवों का उद्धार करना। कृष्ण-भक्तों को भगवद्धाम जाने योग्य बनने के लिए महाप्रभु की कृपा की निरन्तर खोज करनी चाहिए।

প্রভু বলে,—কে তুমি, করিলা মোর হিত? ।
আচম্বিতে আসি' পিয়াও কৃষ্ণ-লীলামৃত? ॥১৭॥

প্রভু বলে,—কে তুমি, করিলা মোর হিত? ।
আচম্বিতে আসি' পিয়াও কৃষ্ণ-লীলামৃত? ॥১৭॥

प्रभु बले—महाप्रभु ने कहा; **के तुमि**—तुम कौन हो; **करिला**—तुमने किया है; **मोर**—मेरा; **हित**—भला; **आचम्बिते**—अचानक; **आसि'**—आकर; **पियाओ**—तुमने मुझे पिलाया है; **कृष्ण-लीला-अमृत**—कृष्ण लीला का अमृत।

अनुवाद

अन्त में श्री चैतन्य महाप्रभु बोले, "तुम कौन हो? तुमने मेरे लिए इतना किया है। सहसा यहाँ आकर तुमने मुझे कृष्ण की लीलाओं का अमृतपान कराया है।"

রাজা কহে,—আমি তোমার দাসের অনুদাস ।
ভৃত্যের ভৃত্য কর,—এই মোর আশ ॥১৮॥

রাজা কহে,—আমি তোমার দাসের অনুদাস ।
ভৃত্যের ভৃত্য কর,—এই মোর আশ ॥১৮॥

राजा कहे—राजा ने कहा; **आमि**—मैं; **तोमार**—आपके; **दासेर अनुदास**—दासों का अनुदास; **भृत्येर भृत्य**—सेवकों का सेवक; **कर**—मुझे करो; **एइ**—यह; **मोर आश**—मेरी इच्छा।

अनुवाद

राजा ने उत्तर दिया, "हे प्रभु. मैं आपके दासों का परम आज्ञाकारी दास हूँ। मेरी अभिलाषा है कि आप मुझे अपने दासों के दास के रूप में स्वीकार करें।"

तात्पर्य

भक्त की सबसे बड़ी उपलब्धि यही है कि वह भगवान् के दासों का दास बने। वस्तुत: किसी को भगवान् का प्रत्यक्ष दास बनने की आकांक्षा नहीं करनी चाहिए। यह अच्छी बात नहीं है। जब प्रह्लाद महाराज को नृसिंहदेव ने वर दिया, तो प्रह्लाद ने सभी प्रकार के भौतिक वर अस्वीकार कर दिये, केवल यही प्रार्थना की कि वे भगवान् के दासों के दास बनें। इसी प्रकार जब देवताओं के कोषाध्यक्ष कुवेर ने ध्रुव महाराज को वर देना चाहा था, तो ध्रुव चाहते तो असीम भौतिक वैभव माँग सकते थे, किन्तु उन्होंने यही वर माँगा कि वे भगवान् के दासों के दास बने रहें। खोलावेचा श्रीधर एक अत्यन्त निर्धन व्यक्ति थे, किन्तु जब श्री चैतन्य महाप्रभु ने उन्हें वर देना चाहा, तो उन्होंने भी महाप्रभु से यही प्रार्थना की कि उन्हें भगवान् के दासों का दास बना रहने दिया जाए। निष्कर्ष यह है कि पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् के दासों का दास होना ही सर्वोच्च वर है, जिसकी कामना की जा सकती है।

তবে মহাপ্রভু তাঁরে ঐশ্বর্য দেখাইল ।
'কারেহ না কহিবে' এই নিষেধ করিল ॥ ১৯॥

तबे महाप्रभु ताँरे ऐश्वर्य्य देखाइल ।
'कारेह ना कहिबे' एइ निषेध करिल ॥ १९ ॥

तबे—उस समय; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **ताँरे**—राजा को; **ऐश्वर्य्य**—दिव्य शक्ति; **देखाइल**—दिखाइ; **कारेह ना कहिबे**—किसी को न कहना; **एइ**—यह; **निषेध करिल**—मना किया।

अनुवाद

उस समय श्री चैतन्य महाप्रभु ने राजा को अपना कुछ दैवी ऐश्वर्य दिखलाया और उन्हें मना किया कि वे इसे किसी से प्रकट न करे।

'राजा'—हेन ज्ञान कभु ना कैल प्रकाश ।
अन्तरे सकल जानेन, बाहिरे उदास ॥२०॥

'राजा'—हेन ज्ञान कभु ना कैल प्रकाश ।
अन्तरे सकल जानेन, बाहिरे उदास ॥ २० ॥

राजा—राजा; **हेन ज्ञान**—ऐसा ज्ञान; **कभु**—कभी; **ना**—नहीं; **कैल प्रकाश**—प्रकट किया; **अन्तरे**—हृदय के भीतर; **सकल**—सब कुछ; **जानेन**—जानते थे; **बाहिरे**—बाहर से; **उदास**—तटस्थ।

अनुवाद

यद्यपि जो कुछ घटित हो रहा था, उसे महाप्रभु मन ही मन जानते थे, किन्तु बाह्य रूप से उन्होंने उसे प्रकट नहीं किया। न ही उन्होंने यह प्रकट किया कि वे यह जान रहे थे कि वे राजा प्रतापरुद्र से बातें कर रहे थे।

प्रतापरुद्रेर भाग्य देखि' भक्त-गणे ।
राजारे प्रशंसे सबे आनन्दित-मने ॥२१॥

प्रतापरुद्रेर भाग्य देखि' भक्त-गणे ।
राजारे प्रशंसे सबे आनन्दित-मने ॥ २१ ॥

प्रतापरुद्रेर—राजा प्रतापरुद्र का; **भाग्य**—सौभाग्य; **देखि'**—देखकर; **भक्त-गणे**—सारे भक्त; **राजारे**—राजा की; **प्रशंसे**—प्रशंसा की; **सबे**—सभी ने; **आनन्दित-मने**—आनन्दित मनों से।

अनुवाद

राजा प्रतापरुद्र पर महाप्रभु की विशेष कृपा देखकर सारे भक्तों ने राजा के भाग्य की प्रशंसा की और उन सबके मन आनन्दमग्न हो गये।

तात्पर्य

यह वैष्णव का गुण है। यदि किसी अन्य भक्त को श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा तथा शक्ति प्राप्त होती है, तो वह कभी उससे ईर्ष्या नहीं करता। एक शुद्ध वैष्णव किसी व्यक्ति को भक्ति में उन्नति करते देखकर अत्यन्त प्रसन्न होता है। दुर्भाग्यवश ऐसे अनेक तथाकथित वैष्णव हैं, जो श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा कृपाप्राप्त लोगों को देखकर ईर्ष्या करते हैं। यह तथ्य है कि चैतन्य महाप्रभु

की विशेष कृपा प्राप्त किये बिना कोई व्यक्ति महाप्रभु के सन्देश का प्रचार नहीं कर सकता। यह हर वैष्णव को पता है। फिर भी कुछ ऐसे ईर्ष्यालु व्यक्ति हैं, जो यह सहन नहीं कर सकते कि कृष्णभावनामृत आन्दोलन का सारे संसार में विस्तार हो रहा है। वे इस आन्दोलन के प्रचारक में कमियाँ निकालते हैं और उसके द्वारा श्री चैतन्य महाप्रभु के मिशन को पूरा करने हेतु की जाने वाली सर्वोत्तम सेवा के लिए उसकी प्रशंसा नहीं करते।

दण्डवत्करि' राजा बाहिरे चलिला ।
योड़ हस्त करि' सब भक्तेरे वन्दिला ॥२२॥

दण्डवत्करि' राजा बाहिरे चलिला ।
योड़ हस्त करि' सब भक्तेरे वन्दिला ॥ २२॥

दण्डवत् करि'—दण्डवत् प्रणाम करके; **राजा**—राजा; **बाहिरे**—बाहर; **चलिला**—चले गये; **योड़**—जोड़कर; **हस्त**—हाथ; **करि'**—करके; **सब**—सब; **भक्तेरे**—भक्तों को; **वन्दिला**—नमस्कार किया।

अनुवाद

राजा बड़े ही विनीत भाव से हाथ जोड़कर भक्तों को प्रणाम करके और श्री चैतन्य महाप्रभु को नमस्कार करके बाहर चले गये।

मध्याह्न करिला प्रभु लञा भक्त-गण ।
वाणीनाथ प्रसाद लञा कैल आगमन ॥२३॥

मध्याह्न करिला प्रभु लञा भक्त-गण ।
वाणीनाथ प्रसाद लञा कैल आगमन ॥ २३॥

मध्याह्न करिला—दोपहर का भोजन स्वीकार किया; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **लञा**—साथ लेकर; **भक्त-गण**—सभी भक्तों को; **वाणीनाथ**—वाणीनाथ; **प्रसाद लञा**—जगन्नाथ का सभी प्रकार का प्रसाद लेकर; **कैल**—किया; **आगमन**—आगमन।

अनुवाद

इसके बाद वाणीनाथ राय सभी प्रकार के प्रसाद ले आया और श्री चैतन्य महाप्रभु ने भक्तों सहित भोजन किया।

সার্বভৌম-রামানন্দ-বাণীনাথে দিয়া ।
প্রসাদ পাঠা'ল রাজা বহুত করিয়া ॥২৪॥

সার্বভৌম-রামানন্দ-বাণীনাথে দিয়া ।
প্রসাদ পাঠা'ল রাজা বহুত করিয়া ॥ ২৪॥

सार्वभौम—सार्वभौम भट्टाचार्य; **रामानन्द**—रामानन्द राय; **वाणीनाथे दिया**—वाणीनाथ राय द्वारा; **प्रसाद**—प्रसाद; **पाठा'ल**—भेजा था; **राजा**—राजा; **बहुत करिया**—बड़ी मात्रा में।

अनुवाद

राजा ने भी सार्वभौम भट्टाचार्य, रामानन्द राय तथा वाणीनाथ राय के हाथों पर्याप्त प्रसाद भेजा।

'বলগণ্ডি ভোগে'র প্রসাদ—উত্তম, অনন্ত ।
'নি-সকড়ি' প্রসাদ আইল, যার নাহি অন্ত ॥২৫॥

'বলগণ্ডি ভোগে'র প্রসাদ—উত্তম, অনন্ত ।
'নি-সকড়ি' প্রসাদ আইল, যার নাহি অন্ত ॥ ২৫॥

बलगण्डि भोगेर—बलगंडि में दिया गया भोजन; **प्रसाद**—प्रसाद; **उत्तम**—उत्तम; **अनन्त**—सभी प्रकार का; **नि-सकड़ि**—दुग्ध-पदार्थ तथा फल जैसा बिना पकाया भोजन; **प्रसाद**—प्रसाद; **आइल**—आ गया; **यार**—जिसका; **नाहि**—नहीं है; **अन्त**—अन्त।

अनुवाद

राजा द्वारा भेजा गया प्रसाद बलगंडि उत्सव में अर्पित किया गया था। इसमें दूध के बने कच्चे पदार्थ तथा फल थे। ये सभी उत्तम कोटि के थे और अनन्त किस्मों वाले थे।

ছানা, পানা, পৈড়, আম্র, নারিকেল, কাঁঠাল ।
নানা-বিধ কদলক, আর বীজ-তাল ॥২৬॥

ছানা, পানা, পৈড়, আম্র, নারিকেল, কাঁঠাল ।
নানা-বিধ কদলক, আর বীজ-তাল ॥ ২৬॥

छाना—दही; **पाना**—फल का रस; **पैड़**—नारियल; **आम्र**—आम; **नारिकेल**—सूखा नारियल; **काँठाल**—कटहल; **नाना-विध**—नाना प्रकार के; **कदलक**—केले; **आर**—और; **बीज-ताल**—ताड़ फल के बीज।

अनुवाद

उसमें दही, फल का रस, नारियल, आम, सूखा नारियल, कटहल, तरह-तरह के केले तथा ताड़फल के बीज थे।

तात्पर्य

जगन्नाथजी को अर्पित किये जाने वाले प्रसाद की यह पहली सूची है।

नारङ्গ, ছোলঙ্গ, টাবা, কমলা, বীজ-পূর ।
বাদাম, ছোহারা, দ্রাক্ষা, পিণ্ড-খর্জুর ॥২৭॥

नारङ्ग, छोलङ्ग, टाबा, कमला, बीज-पूर ।
बादाम, छोहारा, द्राक्षा, पिण्ड-खर्जुर ॥ २७॥

नारङ्ग—नारंगियाँ; **छोलङ्ग**—अंगूर; **टाबा**—एक प्रकार की नारंगी; **कमला**—सन्तरा; **बीज-पूर**—एक अन्य प्रकार का सन्तरा; **बादाम**—बादाम; **छोहारा**—छुआरा; **द्राक्षा**—किशमिश; **पिण्ड-खर्जुर**—पिण्ड खजूर।

अनुवाद

उसमें नारंगियाँ, चकोतरे, कमला, बादाम, छोहारे, किशमिश तथा खजूरें थीं।

মনোহরা-লাড়ু আদি শতেক প্রকার ।
অমৃত-গুটিকা-আদি, ক্ষীরসা অপার ॥২৮॥

मनोहरा-लाड्डु आदि शतेक प्रकार ।
अमृत-गुटिका-आदि, क्षीरसा अपार ॥ २८॥

मनोहरा-लाड्डु—एक प्रकार का सन्देश; **आदि**—आदि; **शतेक प्रकार**—सैंकड़ों प्रकार; **अमृत-गुटिका**—गोल मिठाई; **आदि**—आदि; **क्षीरसा**—गाढ़ा दूध; **अपार**—विभिन्न प्रकार का।

अनुवाद

उसमें मनोहर लड्डू इत्यादि सैंकड़ों प्रकार की मिठाइयाँ, अमृत गुटिका जैसी मिठाइयाँ तथा औंटे दूध की अनेक किस्में थीं।

অমৃত-মণ্ডা, সরবতী, আর কুমড়া-কুরী ।
সরামৃত, সরভাজা, আর সরপুরী ॥২৯॥

अमृत-मण्डा, सरवती, आर कुम्ड़ा-कुरी ।
सरामृत, सरभाजा, आर सरपुरी ॥ २९ ॥

अमृत-मण्डा—एक प्रकार का पपीता; **सरवती**—एक प्रकार की नारंगी; **आर**—और; **कुम्ड़ा-कुरी**—सीताफल का गुदा; **सरामृत**—क्रीम; **सर-भाजा**—फ्राई की हुई क्रीम; **आर**—और; **सर-पुरी**—क्रीम से बनाई एक प्रकार की पूरी।

अनुवाद

उसमें पपीते, शरबती नारंगी तथा सीताफल का गुदा थे। सरामृत (क्रीम), सरभाजा (तली क्रीम) तथा क्रीम की बनी पूड़ी (सरपुरी) थीं।

হরি-বল্লভ, সেঙোতি, কর্পূর, মালতী ।
ডালিমা মরিচ-লাড়ু, নবাত, অমৃতি ॥৩০॥

हरि-वल्लभ, सेङोति, कर्पूर, मालती ।
डालिमा मरिच-लाड़ु, नवात, अमृति ॥ ३० ॥

हरि-वल्लभ—घी में तली हुई रोटी की तरह की मिठाई; **सेङोति**—एक प्रकार के सुगन्धित पुष्प से बनी मिठाई; **कर्पूर**—एक फूल; **मालती**—मालती पुष्प; **डालिमा**—अनार; **मरिच-लाड़ु**—काली मिर्च से बनी एक प्रकार की मिठाई; **नवात**—बुझी शक्कर की एक अन्य प्रकार की मिठाई; **अमृति**—अमृती-जिलिपी (चावल का आटा, बेसन तथा दही से बनी घी में तली और चाशनी में डुबाई मिठाई)।

अनुवाद

हरिवल्लभ मिठाई तथा सेवंती, कपूर एवं मालती फूलों से बनी मिठाइयाँ भी थीं। उसमें अनार, काली मिर्च से बनी मिठाइयाँ, नवात (चीनी को गलाकर बनाई गई मिठाई) तथा अमृति जिलिपि थीं।

পদ্মচিনি, চন্দ্রকান্তি, খাজা, খণ্ডসার ।
বিয়রি, কদ্মা, তিলাখাজার প্রকার ॥৩১॥

पद्मचिनि, चन्द्रकान्ति, खाजा, खण्डसार ।
वियरि, कद्मा, तिलाखाजार प्रकार ॥ ३१ ॥

पद्म-चिनि—कमल पुष्पों से निकाली शक्कर; **चन्द्र-कान्ति**—उड़द दाल से बनाई गई एक प्रकार की रोटी; **खाजा**—खाजा (खस्ता मिठाई); **खण्ड-सार**—खण्डसारी; **वियरि**—

भुने चावलों से बनी मिठाई; **कद्मा**—सरसों के बीजों से बनाई मिठाई; **तिलाखाजार**—तिलों से बनी मिठाई; **प्रकार**—सभी प्रकार की।

अनुवाद

उसमें कमलचीनी, बड़ा, खाजा, खण्डसारी, वियरि (तले चावल से बनी मिठाई), कद्मा (तिल से बनी मिठाई) तथा तिलखाजा (तिल से बनी मिठाई) थे।

नारङ्ग-छोलङ्ग-आम्र-वृक्षेर आकार ।
फुल-फल-पत्र-युक्त खण्डेर विकार ॥ ३२ ॥

नारङ्ग-छोलङ्ग-आम्र-वृक्षेर आकार ।
फुल-फल-पत्र-युक्त खण्डेर विकार ॥ ३२ ॥

नारङ्ग-छोलङ्ग-आम्र-वृक्षेर आकार—संतरे, निम्बू और आम के वृक्षों के आकार की विभिन्न मिठाइयाँ; **फुल-फल-पत्र-युक्त**—फलों, फूलों तथा पत्तों से युक्त; **खण्डेर विकार**—रतालू से बनाए।

अनुवाद

खण्डसारी से बनी नारंगी, नींबू तथा आम के वृक्ष के आकार की मिठाइयाँ, फल-फूल तथा पत्तियों से सजाई गई थीं।

दधि, दुग्ध, ननी, तक्र, रसाला, शिखरिणी ।
स-लवण मुदगाङ्कुर, आदा खानि खानि ॥ ३३ ॥

दधि, दुग्ध, ननी, तक्र, रसाला, शिखरिणी ।
स-लवण मुद्गाङ्कुर, आदा खानि खानि ॥ ३३ ॥

दधि—दही; **दुग्ध**—दूध; **ननी**—मक्खन; **तक्र**—मठा; **रसाला**—फल-रस; **शिखरिणी**—तले दही और रतालू से बनी मिठाई (शिखरिणी); **स-लवण**—नमकीन; **मुद्ग-अङ्कुर**—मूँग दाल के अंकुरित बीज ; **आदा**—अदरक; **खानि खानि**—टुकड़े किए हुए।

अनुवाद

उसमें दही, दूध, मक्खन, छाछ, फलों का रस, शिखरिणी (दही तथा शक्कर से तलकर बनी) तथा कतरे अदरक से युक्त नमकीन मूँग की दाल के अंकुर थे।

লেম্বু-কুল-আদি নানা-প্রকার আচার ।
লিখিতে না পারি প্রসাদ কতেক প্রকার ॥৩৪॥

লেম্বু-কুল-আদি নানা-প্রকার আচার ।
লিখিতে না পারি প্রসাদ কতেক প্রকার ॥ ৩৪॥

লেম্বু—নিंबू; **কুল**—बेर; **আদি**—आदि; **নানা-প্রকার**—नाना प्रकार के; **আচার**—अचार; **লিখিতে**—लिखने के लिए; **না**—नही; **পারি**—मैं सक्षम हूँ; **প্রসাদ**—प्रसाद; **কতেক প্রকার**—कितने ही प्रकार।

अनुवाद

उसमें कई प्रकार के अचार भी थे—यथा नींबू का अचार, बेर का अचार इत्यादि। मैं भगवान् जगन्नाथजी को अर्पित किये जाने वाले पकवानों के प्रकारों का वर्णन करने में सक्षम नहीं हूँ।

तात्पर्य

श्लोक २६ से ३४ तक लेखक भगवान् जगन्नाथ को चढ़ाये जाने वाले विविध भोजनों का वर्णन कर रहे हैं। लेखक ने यथासम्भव उनका वर्णन किया है, किन्तु अन्त में उन्होंने पूरी तरह से उनका वर्णन कर सकने में अपनी असमर्थता व्यक्त की है।

প্রসাদে পূরিত হইল অর্ধ উপবন ।
দেখিয়া সন্তোষ হৈল মহাপ্রভুর মন ॥৩৫॥

প্রসাদে পূরিত হইল অর্ধ উপবন ।
দেখিয়া সন্তোষ হৈল মহাপ্রভুর মন ॥ ৩৫॥

প্রসাদে—सभी प्रसाद से; **পূরিত হইল**—भर गया; **অর্ধ উপবন**—आधा उद्यान; **দেখিয়া**—देखकर; **সন্তোষ**—सन्तोष; **হৈল**—हुआ; **মহাপ্রভুর মন**—श्री चैतन्य महाप्रभु के मन में।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु ने देखा कि नाना प्रकार के प्रसाद से आधा बगीचा भरा हुआ है, तो वे परम सन्तुष्ट हुए।

এই-মত জগন্নাথ করেন ভোজন ।
এই সুখে মহাপ্রভুর জুড়ায় নয়ন ॥৩৬॥

एइ-मत जगन्नाथ करेन भोजन ।
एइ सुखे महाप्रभुर जुड़ाय नयन ॥ ३६ ॥

एइ-मत—इस प्रकार; **जगन्नाथ**—भगवान् जगन्नाथ ने; **करेन भोजन**—भोजन किया; **एइ सुखे**—इस खुशी में; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **जुड़ाय**—पूर्ण सन्तोष हुआ; **नयन**—नयन।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु यह देखकर पूर्णतया सन्तुष्ट थे कि भगवान् जगन्नाथ ने किस तरह सारा भोजन ग्रहण किया।

तात्पर्य

श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणचिह्नों का अनुसरण करते हुए वैष्णव को भगवान् जगन्नाथ या राधाकृष्ण के अर्चाविग्रह को तरह-तरह के पकवान चढ़ते देखकर पूर्णतया सन्तुष्ट होना चाहिए। उसे अपनी खुद की भूख बुझाने के लिए वह नाना प्रकार के व्यंजन नहीं जुटाने चाहिए, बल्कि उसकी तुष्टि तो अर्चाविग्रह पर चढ़ाये जाने वाले विविध प्रकार के भोजन को देखने में है। श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर ने अपने *गुर्वष्टक* में लिखा है :

चतुर्विधश्रीभगवत्प्रसाद
स्वाद्वन्नतृप्तान् हरि-भक्त-सङ्घान्।
कृत्वैव तृप्तिं भजतः सदैव
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्॥

"गुरु सदैव कृष्ण को चार प्रकार का स्वादिष्ट भोजन अर्पित करता है [चाटने वाला (लेह्य), चबाने वाला (चर्व्य), पीने वाला (पेय) तथा चूसा जाने वाला (चूष्य)]। जब गुरु देखता है कि भक्तगण भगवत्प्रसाद खाकर सन्तुष्ट हो गये हैं, तो वह भी सन्तुष्ट होता है। मैं ऐसे गुरु के चरणकमलों को सादर नमस्कार करता हूँ।"

गुरु का कर्तव्य है कि वह अपने शिष्यों को अर्चाविग्रह पर अर्पित करने के लिए तरह-तरह का उत्तम भोजन तैयार करने में लगाये। अर्पित किये जाने

के बाद यही भोजन भक्तों में प्रसाद के रूप में वितरित किया जाता है। ऐसे कार्यों से गुरु तुष्ट होता है, यद्यपि इतने प्रकार के प्रसाद वह न तो स्वयं खाता है न ही उसे इनकी आवश्यकता पड़ती है। प्रसाद को अर्पित होते तथा वितरित होते देखकर उसे भक्ति में प्रोत्साहन मिलता है।

केया-पत्र-द्रोणी आइल बोझा पाँच-सात ।
एक एक जने दश दोना दिल,—एत पात ॥३७॥

केया-पत्र-द्रोणी आइल बोझा पाँच-सात ।
एक एक जने दश दोना दिल,—एत पात ॥ ३७॥

केया-पत्र-द्रोणी—केतकी वृक्ष के पत्तों से बनी प्लेटें; **आइल**—आ गईं; **बोझा**—बोझों में; **पाँच-सात**—पाँच-सात; **एक एक जने**—प्रत्येक व्यक्ति को; **दश दोना दिल**—ऐसी दस प्लेटें दी गईं; **एत पात**—पत्तों की इतनी प्लेटें।

अनुवाद

फिर केतकी वृक्ष की पत्तियों की बनी प्लेटों के पाँच-सात बोझ आये। प्रत्येक व्यक्ति को ऐसी दस दस प्लेटें दी गईं और इस तरह पत्तों की ये प्लेटें बाँटी गईं।

कीर्तनीयार परिश्रम जानि' गौरराय ।
ताँ-सवारे खाओयाइते प्रभुर मन धाय ॥३८॥

कीर्तनीयार परिश्रम जानि' गौरराय ।
ताँ-सबारे खाओयाइते प्रभुर मन धाय ॥ ३८॥

कीर्तनीयार—सभी गायकों का; **परिश्रम**—परिश्रम; **जानि'**—जानकर; **गौरराय**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ताँ-सबारे**—उन सबको; **खाओयाइते**—खिलाने के लिए; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **मन धाय**—मन अति उत्सुक था।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु सभी कीर्तनियों के परिश्रम को समझ रहे थे, अतएव वे उन्हें पेट भरकर खिलाना चाहते थे।

पाँति पाँति करि' भक्त-गणे वसाइला ।
परिवेशन करिवारे आपने लागिला ॥ ३९ ॥

पाँति पाँति करि' भक्त-गणे वसाइला ।
परिवेशन करिबारे आपने लागिला ॥ ३९ ॥

पाँति पाँति करि'—विभिन्न पंक्तियों में; **भक्त-गणे**—सभी भक्तगण; **वसाइला**—बैठा दिये गये; **परिवेशन**—वितरण; **करिबारे**—करने; **आपने**—स्वयं; **लागिला**—लगे।

अनुवाद

सारे भक्त पाँतों में बैठ गये और श्री चैतन्य महाप्रभु स्वयं प्रसाद का वितरण करने लगे।

प्रभु ना खाइले, केह ना करे भोजन ।
स्वरूप-गोसाञि तबे कैल निवेदन ॥ ४० ॥

प्रभु ना खाइले, केह ना करे भोजन ।
स्वरूप-गोसाञि तबे कैल निवेदन ॥ ४० ॥

प्रभु—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ना खाइले**—खाए बिना; **केह**—कोई; **ना**—नहीं; **करे भोजन**—भोजन स्वीकार करना; **स्वरूप-गोसाञि**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी ने; **तबे**—उस समय; **कैल निवेदन**—निवेदन किया।

अनुवाद

किन्तु भक्त तब तक प्रसाद ग्रहण नहीं कर रहे थे, जब तक स्वयं महाप्रभु प्रसाद ग्रहण न कर लें। स्वरूप गोस्वामी ने यह बात महाप्रभु को बताई।

आपने वैस, प्रभु, भोजन करिते ।
तुमि ना खाइले, केह ना पारे खाइते ॥ ४१ ॥

आपने वैस, प्रभु, भोजन करिते ।
तुमि ना खाइले, केह ना पारे खाइते ॥ ४१ ॥

आपने वैस—आप स्वयं बैठ जाएँ; **प्रभु**—मेरे प्रभु; **भोजन करिते**—भोजन करने के लिए; **तुमि ना खाइले**—आपके खाये बिना; **केह**—कोई; **ना पारे**—नहीं सकता; **खाइते**—खा।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर ने कहा, "हे प्रभु, कृपया आप खाने के लिए बैठ जायें। जब तक आप नहीं खायेंगे, तब तक कोई भी नहीं खायेगा।"

তবে মহাপ্রভু বৈসে নিজ-গণ লঞা ।
ভোজন করাইল সবাকে আকণ্ঠ পূরিয়া ॥ ৪২ ॥

তবে মহাপ্রভু বৈসে নিজ-গণ লঞা ।
ভোজন করাইল সবাকে আকণ্ঠ পূরিয়া ॥ ৪২ ॥

তবে—उस समय; **মহাপ্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **বৈসে**—बैठ गये; **নিজ-গণ লঞা**—अपने निजी साथियों सहित; **ভোজন করাইল**—भोजन कराया; **সবাকে**—उन सबको; **আকণ্ঠ পূরিয়া**—भरपेट।

अनुवाद

तब श्री चैतन्य महाप्रभु अपने निजी संगियों समेत बैठ गये और उन सबको भरपेट भोजन कराया।

ভোজন করি' বসিলা প্রভু করি' আচমন ।
প্রসাদ উবরিল, খায় সহস্রেক জন ॥ ৪৩ ॥

ভোজন করি' বসিলা প্রভু করি' আচমন ।
প্রসাদ উবরিল, খায় সহস্রেক জন ॥ ৪৩ ॥

ভোজন করি'—भोजन करने के पश्चात्; **বসিলা প্রভু**—महाप्रभु बैठ गये; **করি'**—करके; **আচমন**—मुख का आचमन; **প্রসাদ**—प्रसाद; **উবরিল**—इतना अधिक था; **খায়**—खाया; **সহস্রেক জন**—हजारों व्यक्तियों ने।

अनुवाद

भोजन करने के बाद महाप्रभु अपना मुँह धोकर बैठ गये। इतना अधिक प्रसाद बचा था कि उसे हजारों लोगों में वितरित कर दिया गया।

প্রভুর আজ্ঞায় গোবিন্দ দীন-হীন জনে ।
দুঃখী কাঙ্গাল আনি' করায় ভোজনে ॥ ৪৪ ॥

प्रभुर आज्ञाय गोविन्द दीन-हीन जने ।
दुःखी काङ्गाल आनि' कराय भोजने ॥ ४४ ॥

प्रभुर आज्ञाय—श्री चैतन्य महाप्रभु की आज्ञा पर; **गोविन्द**—उनके निजी सेवक गोविन्द; **दीन-हीन जने**—सभी दीन लोगों को; **दुःखी**—दुःखी; **काङ्गाल**—कंगाल; **आनि'**—बुलाकर; **कराय भोजने**—भोजन कराया।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु के आदेश पर उनके निजी सेवक गोविन्द ने सारे दीन-भिखारियों को बुलाया, जो अपनी गरीबी से दुःखी थे और उन्हें भर-पेट भोजन कराया।

কাঙ্গালের ভোজন-রঙ্গ দেখে গৌরহরি ।
'হরি-বোল' বলি' তারে উপদেশ করি ॥ ৪৫ ॥

काङ्गालेर भोजन-रङ्ग देखे गौरहरि ।
'हरि-बोल' बलि' तारे उपदेश करि ॥ ४५ ॥

काङ्गालेर—भिखारियों को; **भोजन-रङ्ग**—खाने की प्रक्रिया; **देखे**—देखा; **गौरहरि**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **हरि-बोल बलि'**—'हरि बोल' कहकर; **तारे**—उनको; **उपदेश करि**—उपदेश दिया।

अनुवाद

गरीबों को प्रसाद ग्रहण करते देखकर श्री चैतन्य महाप्रभु ने "हरिबोल!" का उच्चारण किया और उन्हें उपदेश दिया कि वे इस नाम का कीर्तन करें।

तात्पर्य

श्रील भक्तिविनोद ठाकुर ने एक गीत में कहा है :

मिछे मायार वशे, याच्छ भेसे',
खाच्छ हाबुडुबु, भाइ।
जीव कृष्णदास, ए विश्वास
क'रें त'आर दुःख नाइ॥

"हे लोगों, हर व्यक्ति अज्ञान रूपी सागर की तरंगों के वशीभूत है, किन्तु यदि तुम श्रीकृष्ण को अपने सनातन स्वामी के रूप में स्वीकार कर लो, तो इस तरह

मोह की तरंगों में डूबने की गुंजाईश ही न रहे। तब आपके सारे कष्ट समाप्त हो जायेंगे।" कृष्ण भौतिक प्रकृति के तीन गुणों के अन्तर्गत भौतिक जगत् का संचालन करते हैं, फलत: जीवन के तीन स्तर हैं—उच्च, मध्य तथा निम्न। मनुष्य जिस भी स्तर पर रहता है, वह भौतिक प्रकृति की तरंगों से ऊपर-नीचे उछाला जाता है। फिर चाहे वह धनी हो या मध्य वर्ग का हो अथवा दीन-भिखारी हो, इस से कोई अन्तर नहीं पड़ता। जब तक मनुष्य भौतिक प्रकृति के तीनों गुणों के वशीभूत रहता है, वह इन तीनों विभागों का अनुभव करता रहेगा।

इसीलिए श्री चैतन्य महाप्रभु ने भिखारियों को उपदेश दिया कि वे प्रसाद ग्रहण करते समय "हरिबोल!" का उच्चारण करें। ऐसे उच्चारण का अर्थ है, अपने आपको कृष्ण के नित्य दास के रूप में स्वीकार करना। यही एकमात्र समाधान है, किसी की सामाजिक स्थिति चाहे जो भी हो। हर व्यक्ति माया के वशीभूत होकर कष्ट भोग रहा है; इसलिए सर्वोत्तम उपाय यही है कि माया के पाश से निकलने की विधि सीखी जाए। *भगवद्गीता* (१४.२६) यह विधि बताती है :

मां च योऽव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते।
स गुणान् समतीत्यैतान् ब्रह्मभूयाय कल्पते॥

"जो पूर्ण भक्ति में लगा हुआ है और जो किसी भी परिस्थिति में च्युत नहीं होता, वह तुरन्त ही भौतिक प्रकृति के गुणों को पार कर जाता है और इस तरह ब्रह्म-पद को प्राप्त होता है।"

भगवान् की भक्तिमयी सेवा करना स्वीकार करके मनुष्य माया के पाश से छूट सकता है और दिव्य पद प्राप्त कर सकता है। भक्ति का प्रारम्भ *श्रवणं कीर्तनम्* से होता है, अतएव श्री चैतन्य महाप्रभु ने भिखारियों को उपदेश दिया कि वे दिव्य पद तक ऊपर उठने के लिए हरे कृष्ण महामन्त्र का कीर्तन करें। दिव्य पद पर धनी, मध्यम वर्ग तथा गरीब में कोई अन्तर नहीं रह जाता।

'हरि-बोल' बलि' कांगाल प्रेमे भासि' याय ।
ऐछन अद्भुत लीला करे गौररायं ॥४६॥

'हरि-बोल' बलि' काङ्गाल प्रेमे भासि' ग्राय ।
ऐछन अद्भुत लीला करे गौरराय ॥ ४६ ॥

हरि-बोल बलि'—"हरि बोल" पुकारकर; **काङ्गाल**—भिखारी वर्ग; **प्रेमे**—प्रेमावेश में; **भासि' ग्राय**—तैरने लग गये; **ऐछन**—ऐसी; **अद्भुत**—अद्‌भुत; **लीला**—लीलाएँ; **करे**—कीं; **गौरराय**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने।

अनुवाद

ज्योंही भिखारियों ने "हरिबोल" का उच्चारण किया, वे सभी तुरन्त भगवत्प्रेम में निमग्न हो गये। इस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु ने अद्‌भुत लीलाएँ सम्पन्न कीं।

तात्पर्य

ईश्वर-प्रेम के भाव का अनुभव करना दिव्य पद पर स्थित होने का सूचक है। यदि मनुष्य अपने आपको उस दिव्य स्थिति में रख पाए, तो वह निश्चित रूप से भगवद्‌धाम वापस जायेगा। आध्यात्मिक जगत् में उच्च, मध्य या निम्न वर्ग नहीं होते। इसकी पुष्टि *ईशोपनिषद्* (मंत्र ७) द्वारा होती है :

यस्मिन् सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः ।
तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः ॥

"जो व्यक्ति सारे जीवों को आध्यात्मिक स्फुलिंग के रूप में गुणात्मक दृष्टि से भगवान् से अभिन्न देखता है, वह वस्तुओं का असली ज्ञाता बन जाता है। तो फिर उसके लिए मोह या चिन्ता कैसी ?"

इहाँ जगन्नाथेर रथ-चलन-समय ।
गौड़ सब रथ टाने, आगे नाहि ग्राय ॥ ४७ ॥

इहाँ जगन्नाथेर रथ-चलन-समय ।
गौड़ सब रथ टाने, आगे नाहि ग्राय ॥ ४७ ॥

इहाँ—उद्यान के बाहर; **जगन्नाथेर**—भगवान् जगन्नाथ के; **रथ-चलन-समय**—रथ खींचते समय; **गौड़**—गौड़ नामक कार्यकर्ता जिन्होंने रथ खींचा; **सब**—सब ने; **रथ टाने**—रथ खींचने पर; **आगे**—आगे; **नाहि ग्राय**—नहीं जाता था।

अनुवाद

जब जगन्नाथजी का रथ खींचने का समय हो गया, तो बगीचे के

बाहर सारे कार्यकर्ता (गौड़) उसे खींचने का प्रयास करने लगे, किन्तु रथ आगे नहीं बढ़ा।

টানিতে না পারে গৌড়, রথ ছাড়ি' দিল ।
পাত্র-মিত্র লঞা রাজা ব্যগ্র হঞা আইল ॥৪৮॥

টানিতে না পারে গৌড়, রথ ছাড়ি' দিল ।
পাত্র-মিত্র লঞা রাজা ব্যগ্র হঞা আইল ॥ ৪৮ ॥

टानिते ना पारे—वे खींच न सके; **गौड़**—गौड़; **रथ छाड़ि' दिल**—रथ खींचना छोड़ दिया; **पात्र-मित्र**—सभी अधिकारी तथा मित्र; **लञा**—अपने साथ लेकर; **राजा**—राजा; **व्यग्र**—अति चिन्ताग्रस्त; **हञा**—होकर; **आइल**—आये।

अनुवाद

जब गौड़ों ने देखा कि रथ टस से मस नहीं हो रहा, तो उन्होंने प्रयास करना छोड़ दिया। तभी अत्यन्त चिन्तित राजा वहाँ आये और उनके साथ उनके अधिकारी तथा मित्र थे।

মহা-মল্ল-গণে দিল রথ চালাইতে ।
আপনে লাগিলা রথ, না পারে টানিতে ॥৪৯॥

মহা-মল্ল-গণে দিল রথ চালাইতে ।
আপনে লাগিলা রথ, না পারে টানিতে ॥ ৪৯ ॥

महा-मल्ल-गणे—बड़े-बड़े पहलवानों को; **दिल**—दिया; **रथ**—रथ; **चालाइते**—खींचने के लिए; **आपने**—स्वयं; **लागिला**—लग गये; **रथ**—रथ; **ना पारे टानिते**—चल न सका।

अनुवाद

तब राजा ने रथ खींचने के लिए बड़े-बड़े पहलवानों को लगाया और साथ में राजा भी सम्मिलित हो गये किन्तु रथ हिलाये नहीं हिला।

ব্যগ্র হঞা আনে রাজা মত্ত-হাতী-গণ ।
রথ চালাইতে রথে করিল যোজন ॥৫০॥

व्यग्र हञा आने राजा मत्त-हाती-गण ।
रथ चालाइते रथे करिल ग्रोजन ॥५०॥

व्यग्र हञा—चिन्ताग्रस्त होकर; **आने**—लाये; **राजा**—राजा; **मत्त-हाती-गण**—अति बलशाली हाथी; **रथ चालाइते**—रथ को चलाने के लिए; **रथे**—रथ में; **करिल ग्रोजन**—जोड़ दिये।

अनुवाद

रथ को चलाने की और अधिक उत्सुकता में राजा ने अत्यन्त बलशाली हाथी मँगवाकर रथ में जोते।

मत्त-हस्ति-गण टाने यार यत बल ।
एक पद ना चले रथ, हईल अचल ॥५१॥
मत्त-हस्ति-गण टाने ग्रार ग्रत बल ।
एक पद ना चले रथ, हइल अचल ॥५१॥

मत्त-हस्ति-गण—बलवान हाथी; **टाने**—खींचने लगे; **ग्रार ग्रत बल**—जितनी भी शक्ति उनके पास थी; **एक पद**—एक पग; **ना चले**—नहीं चला; **रथ**—रथ; **हइल**—था; **अचल**—अचल।

अनुवाद

बलशाली हाथियों ने रथ को पूरी शक्ति से खींचा, लेकिन इतने पर भी रथ एक इंच भी नहीं हिला तथा अचल बना रहा।

शुनि' महाप्रभु आइला निज-गण लञा ।
मत्त-हस्ती रथ टाने,—देखे दाण्डाञा ॥५२॥
शुनि' महाप्रभु आइला निज-गण लञा ।
मत्त-हस्ती रथ टाने,—देखे दाण्डाञा ॥५२॥

शुनि'—सुनने के बाद; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **आइला**—आये; **निज-गण लञा**—अपने निजी भक्तों के साथ; **मत्त-हस्ती**—मत्त हाथियों को; **रथ टाने**—रथ को खींचने का प्रयास करते हुए; **देखे**—उन्होंने देखा; **दाण्डाञा**—वहाँ खड़े होकर।

अनुवाद

ज्योंही श्री चैतन्य महाप्रभु ने यह खबर सुनी, वे अपने सारे निजी

संगियों के साथ वहाँ गये। वे वहाँ खड़े होकर हाथियों द्वारा रथ खींचने का प्रयास देखने लगे।

অঙ্কুশের ঘায় হস্তী করয়ে চিৎকার ।
রথ নাহি চলে, লোকে করে হাহাকার ॥৫৩॥

অঙ্কুশের ঘায় হস্তী করয়ে চিৎকার ।
রথ নাহি চলে, লোকে করে হাহাকার ॥৫৩॥

अङ्कुशेर—अंकुश के; **घाय**—मारने से; **हस्ती**—हाथियों ने; **करये**—किया; **चित्कार**—चित्कार; **रथ**—रथ; **नाहि चले**—नहीं चला; **लोके**—सभी लोग; **करे**—करने लगे; **हाहा-कार**—हाहाकार।

अनुवाद

सारे हाथी अंकुश से मारे जाने के कारण चिंघाड़ रहे थे, फिर भी रथ हिल-डुल नहीं रहा था। वहाँ पर एकत्र सारे लोग हाहाकार करने लगे।

তবে মহাপ্রভু সব হস্তী ঘুচাইল ।
নিজ-গণে রথ-কাছি টানিবারে দিল ॥৫৪॥

তবে মহাপ্রভু সব হস্তী ঘুচাইল ।
নিজ-গণে রথ-কাছি টানিবারে দিল ॥৫৪॥

तबे—उस समय; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **सब**—सब; **हस्ती**—हाथियों को; **घुचाइल**—खुलवा दिया; **निज-गणे**—अपने पार्षदों को; **रथ-काछि**—रथ की डोरी; **टानिबारे दिल**—खींचने को दी।

अनुवाद

तब श्री चैतन्य महाप्रभु ने सारे हाथियों को छोड़ दिया और रथ की रस्सियाँ अपने संगियों के हाथों में थमा दीं।

আপনে রথের পাছে ঠেলে মাথা দিয়া ।
হড়্ হড়্ করি, রথ চলিল ধাইয়া ॥৫৫॥

আপনে রথের পাছে ঠেলে মাথা দিয়া ।
হড়ু হড়ু করি, রথ চলিল ধাইয়া ॥৫৫॥

आपने—स्वयं; **रथेर पाछे**—रथ के पीछे; **ठेले**—ढकेला; **माथा दिया**—अपने सिर से; **हड़ू हड़ू करि**—घर्र घर्र ध्वनि करके; **रथ**—रथ; **चलिल**—चलने लगा; **धाइया**—दौड़कर।

अनुवाद

तब श्री चैतन्य महाप्रभु स्वयं रथ के पिछले हिस्से में गये और अपने सिर से रथ को ठेलने लगे। तब वह रथ घर्र घर्र की आवाज करके चलने लगा।

ভক্ত-গণ কাছি হাতে করি' মাত্র ধায় ।
আপনে চলিল রথ, টানিতে না পায় ॥৫৬॥

भक्त-गण काछि हाते करि' मात्र धाय ।
आपने चलिल रथ, टानिते ना पाय ॥५६॥

भक्त-गण—भक्तगण; **काछि**—रस्सियाँ; **हाते**—हाथों में; **करि'**—लेकर; **मात्र**—केवल; **धाय**—दौड़े; **आपने**—अपने आप; **चलिल**—चल पड़ा; **रथ**—रथ; **टानिते**—खींचने का; **ना पाय**—उन्हें अवसर न मिला।

अनुवाद

वास्तव में रथ स्वतः चलने लगा और भक्तगण अपने हाथों में मात्र रस्सियाँ थामे रहे। चूँकि रथ बिना प्रयास के चल रहा था, अतएव भक्तों को खींचने की आवश्यकता नहीं पड़ी।

আনন্দে করয়ে লোক 'জয়' 'জয়'-ধ্বনি ।
'জয় জগন্নাথ' বই আর নাহি শুনি ॥৫৭॥

आनन्दे करये लोक 'जय' 'जय'-ध्वनि ।
'जय जगन्नाथ' बइ आर नाहि शुनि ॥५७॥

आनन्दे—आनन्द में; **करये**—करने लगे; **लोक**—सभी लोग; **जय जय-ध्वनि**—'जय हो' की ध्वनि; **जय जगन्नाथ**—भगवान् जगन्नाथ की जय हो; **बइ**—इसके अतिरिक्त; **आर नाहि शुनि**—और कुछ सुनाई नहीं दिया।

अनुवाद

जब रथ आगे बढ़ने लगा, तो सभी लोग प्रसन्न होकर "जय!" "जय!" तथा "भगवान् जगन्नाथ की जय हो!" बोलने लगे। इसके अतिरिक्त और कुछ भी सुनाई नहीं पड़ रहा था।

নিমেষে ত' গেল রথ গুণ্ডিচার দ্বার ।
চৈতন্য-প্রতাপ দেখি' লোকে চমৎকার ॥৫৮॥

निमेषे त' गेल रथ गुण्डिचार द्वार ।
चैतन्य-प्रताप देखि' लोके चमत्कार ॥५८॥

निमेषे—एक क्षण में; **त'**—निस्सन्देह; **गेल**—पहुँच गया; **रथ**—रथ; **गुण्डिचार द्वार**—गुण्डिचा मन्दिर के द्वार पर; **चैतन्य-प्रताप**—श्री चैतन्य महाप्रभु की शक्ति को; **देखि'**—देखकर; **लोके**—सभी लोग; **चमत्कार**—चकित हो गये।

अनुवाद

वह रथ क्षण-भर में गुण्डिचा मन्दिर के द्वार पहुँच गया। महाप्रभु की असाधारण शक्ति देखकर सारे लोग आश्चर्यचकित थे।

'জয় গৌরচন্দ্র', 'জয় শ্রী-কৃষ্ণ-চৈতন্য' ।
এই-মত কোলাহল লোকে ধন্য ধন্য ॥৫৯॥

'जय गौरचन्द्र', 'जय श्री-कृष्ण-चैतन्य' ।
एइ-मत कोलाहल लोके धन्य धन्य ॥५९॥

जय गौरचन्द्र—गौरहरि की जय; **जय श्री-कृष्ण-चैतन्य**—श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु की जय हो; **एइ-मत**—इस प्रकार; **कोलाहल**—कोलाहल; **लोके**—सामान्य लोगों में; **धन्य धन्य**—"धन्य, धन्य!" बोलने लगे

अनुवाद

भीड़ ने "जय गौरचन्द्र!" "जय श्रीकृष्ण चैतन्य!" का तुमुल नाद किया। और लोग "अद्भुत! अद्भुत!" कहने लगे।

দেখিয়া প্রতাপরুদ্র পাত্র-মিত্র-সঙ্গে ।
প্রভুর মহিমা দেখি' প্রেমে ফুলে অঙ্গে ॥৬০॥

देखिया प्रतापरुद्र पात्र-मित्र-सङ्गे ।
प्रभुर महिमा देखि' प्रेमे फुले अङ्गे ॥६०॥

देखिया—देखकर; **प्रतापरुद्र**—राजा प्रतापरुद्र; **पात्र-मित्र-सङ्गे**—अपने मन्त्रियों तथा मित्रों सहित; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **महिमा**—महिमा; **देखि'**—देखने से; **प्रेमे**—प्रेम में; **फुले**—रोमांच; **अङ्गे**—शरीर से।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु की महानता देखकर प्रतापरुद्र महाराज तथा उनके मंत्री एवं मित्रगण भावमय प्रेम से इतने अभिभूत हुए कि उन्हें रोमांच हो आया।

পাণ্ডু-বিজয় তবে করে সেবক-গণে ।
জগন্নাথ বসিলা গিয়া নিজ-সিংহাসনে ॥ ৬১ ॥

पाण्डु-विजय तबे करे सेवक-गणे ।
जगन्नाथ वसिला गिया निज-सिंहासने ॥ ६१ ॥

पाण्डु-विजय—रथ से उतरकर; **तबे**—उस समय; **करे**—किया; **सेवक-गणे**—सभी सेवकों ने; **जगन्नाथ**—भगवान् जगन्नाथ; **वसिला**—बैठ गये; **गिया**—जाकर; **निज-सिंहासने**—अपने सिंहासन पर।

अनुवाद

तब जगन्नाथजी के सारे सेवकों ने उन्हें रथ से नीचे उतारा और भगवान् अपने सिंहासन पर बैठने चले गये।

সুভদ্রা-বলরাম নিজ-সিংহাসনে আইলা ।
জগন্নাথের স্নান-ভোগ হইতে লাগিলা ॥ ৬২ ॥

सुभद्रा-बलराम निज-सिंहासने आइला ।
जगन्नाथेर स्नान-भोग हइते लागिला ॥ ६२ ॥

सुभद्रा-बलराम—सुभद्रा तथा बलराम; **निज**—अपने अपने; **सिंहासने**—सिंहासनों पर; **आइला**—विराजमान हो गये; **जगन्नाथेर**—भगवान् जगन्नाथ का; **स्नान-भोग**—स्नान तथा भोग; **हइते लागिला**—होना आरम्भ हो गया।

अनुवाद

सुभद्रा तथा बलराम भी अपने-अपने सिंहासन पर बैठ गये। इसके बाद जगन्नाथजी को स्नान कराया गया और अन्त में भोग लगाया गया।

আঙ্গিনাতে মহাপ্রভু লঞা ভক্ত-গণ ।
আনন্দে আরম্ভ কৈল নর্তন-কীর্তন ॥ ৬৩ ॥

आङ्गिनाते महाप्रभु लञा भक्त-गण ।
आनन्दे आरम्भ कैल नर्तन-कीर्तन ॥ ६३ ॥

आङ्गिनाते—मन्दिर के आंगन में; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **लञा भक्त-गण**—अपने भक्तों सहित; **आनन्दे**—आनन्दपूर्वक; **आरम्भ कैल**—आरम्भ किया; **नर्तन-कीर्तन**—नर्तन एवं कीर्तन।

अनुवाद

जब भगवान् जगन्नाथ, भगवान् बलराम तथा सुभद्रा अपने-अपने सिंहासनों पर बैठ गये, तो श्री चैतन्य महाप्रभु अपने भक्तों के साथ मन्दिर के आँगन में बड़े ही हर्ष से संकीर्तन करने लगे और नाचने-गाने लगे।

আনন্দে মহাপ্রভুর প্রেম উথলিল ।
দেখি' সব লোক প্রেম-সাগরে ভাসিল ॥ ৬৪ ॥

आनन्दे महाप्रभुर प्रेम उथलिल ।
देखि' सब लोक प्रेम-सागरे भासिल ॥ ६४ ॥

आनन्दे—आनन्दावेश में; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **प्रेम**—प्रेम; **उथलिल**—उमड़ आया; **देखि'**—देखकर; **सब लोक**—सभी लोग; **प्रेम-सागरे**—प्रेमसागर में; **भासिल**—डूब गये।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु नाच-गा रहे थे, तो वे प्रेमाविष्ट हो गये और जिन लोगों ने उन्हें देखा, वे भी भगवत्प्रेम के सागर में डूब गये।

নৃত্য করি' সন্ধ্যা-কালে আরতি দেখিল ।
আইটোটা আসি' প্রভু বিশ্রাম করিল ॥ ৬৫ ॥

नृत्य करि' सन्ध्या-काले आरति देखिल ।
आइटोटा आसि' प्रभु विश्राम करिल ॥ ६५ ॥

नृत्य करि'—नृत्य करने के बाद; **सन्ध्या-काले**—संध्याकाल में; **आरति देखिल**—आरती का उत्सव देखा; **आइटोटा आसि'**—आइटोटा स्थान पर आकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **विश्राम करिल**—रातभर विश्राम किया।

अनुवाद

गुण्डिचा मन्दिर के आँगन में अपना नृत्य समाप्त करके संध्या-समय महाप्रभु ने आरती उत्सव देखा। तत्पश्चात् वे आइटोटा नामक स्थान पर गये और वहाँ रात्रि में विश्राम किया।

अद्वैतादि भक्त-गण निमन्त्रण कैल ।
मुख्य मुख्य नव जन नव दिन पाइल ॥ ६६॥

अद्वैतादि भक्त-गण निमन्त्रण कैल ।
मुख्य मुख्य नव जन नव दिन पाइल ॥ ६६॥

अद्वैत-आदि—अद्वैत आचार्य आदि; **भक्त-गण**—भक्तगण; **निमन्त्रण कैल**—श्री चैतन्य महाप्रभु को निमंत्रण दिया; **मुख्य मुख्य**—मुख्य; **नव जन**—नौ भक्तों ने; **नव दिन**—नौ दिन; **पाइल**—अवसर पाया।

अनुवाद

तभी अद्वैत आचार्य इत्यादि प्रमुख भक्तों ने नौ दिनों तक अपने-अपने घरों में महाप्रभु को आमन्त्रित करने का अवसर प्राप्त किया।

आर भक्त-गण चातुर्मास्যে যত দিন ।
এক এক দিন করি' করিল বণ্টন ॥ ৬৭॥

आर भक्त-गण चातुर्मास्ये यत दिन ।
एक एक दिन करि' करिल वण्टन ॥ ६७॥

आर भक्त-गण—बाकी भक्तगण; **चातुर्मास्ये**—वर्षा ऋतु के चार मासों में; **यत दिन**—सभी दिन; **एक एक दिन करि'**—एक एक दिन करके प्रत्येक ने; **करिल वण्टन**—बाँट लिया।

अनुवाद

शेष भक्तों ने वर्षा के चार महीनों में महाप्रभु को एक एक दिन अपने यहाँ आमन्त्रित किया। इस तरह उन्होंने आमन्त्रणों का बँटवारा कर लिया।

চারি মাসের দিন মুখ্য-ভক্ত বাঁটি' নিল ।
আর ভক্ত-গণ অবসর না পাইল ॥ ৬৮॥

चारि मासेर दिन मुख्य-भक्त बाँटि' निल ।
आर भक्त-गण अवसर ना पाइल ॥ ६८ ॥

चारि मासेर दिन—चारों मास के दिन; **मुख्य-भक्त**—मुख्य भक्तों ने; **बाँटि' निल**—आपस में बाँट लिए; **आर भक्त-गण**—अन्य भक्तों को; **अवसर**—अवसर; **ना पाइल**—न मिल पाया।

अनुवाद

इस चार महीने की अवधि में प्रतिदिन का आमन्त्रण महत्त्वपूर्ण भक्तों ने आपस में बाँट लिया। शेष भक्तों को महाप्रभु को अपने यहाँ आमन्त्रित करने का अवसर ही नहीं मिल पाया।

एक दिन निमन्त्रण करे दुइ-तिने मिलि' ।
एइ-मत महाप्रभुर निमन्त्रण-केलि ॥ ६९ ॥
एक दिन निमन्त्रण करे दुइ-तिने मिलि' ।
एइ-मत महाप्रभुर निमन्त्रण-केलि ॥ ६९ ॥

एक दिन—एक दिन; **निमन्त्रण**—निमंत्रण; **करे**—किया; **दुइ-तिने**—दो तीन भक्त; **मिलि'**—मिलकर; **एइ-मत**—इस प्रकार; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **निमन्त्रण**—निमंत्रण; **केलि**—की लीलाएँ।

अनुवाद

चूँकि उन्हें एक एक दिन नहीं मिला, अतएव दो या तीन भक्तों ने मिलकर आमन्त्रण दिया। ये लीलाएँ हैं महाप्रभु द्वारा आमन्त्रण स्वीकार करने की।

प्रातः-काले स्नान करि' देखि' जगन्नाथ ।
सङ्कीर्तने नृत्य करे भक्त-गण साथ ॥ ७० ॥
प्रातः-काले स्नान करि' देखि' जगन्नाथ ।
सङ्कीर्तने नृत्य करे भक्त-गण साथ ॥ ७० ॥

प्रातः-काले—प्रातःकाल; **स्नान करि'**—स्नान करके; **देखि'**—दर्शन करके; **जगन्नाथ**—भगवान् जगन्नाथ; **सङ्कीर्तने**—संकीर्तन में; **नृत्य करे**—नृत्य करते थे; **भक्त-गण साथ**—भक्तों के साथ।

अनुवाद

प्रातःकाल स्नान करने के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु भगवान् जगन्नाथ का दर्शन करने मन्दिर जाया करते थे। तब वे अपने भक्तों के साथ संकीर्तन करते थे।

कभु अद्वैते नाचाय, कभु नित्यानन्दे ।
कभु हरिदासे नाचाय, कभु अच्युतानन्दे ॥७१॥
कभु अद्वैते नाचाय, कभु नित्यानन्दे ।
कभु हरिदासे नाचाय, कभु अच्युतानन्दे ॥७१॥

कभु—कभी; **अद्वैते**—अद्वैत आचार्य को; **नाचाय**—नचाया; **कभु नित्यानन्दे**—कभी नित्यानन्द प्रभु को; **कभु हरिदासे नाचाय**—कभी हरिदास को नचाया; **कभु**—कभी; **अच्युतानन्दे**—अच्युतानन्द को।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कीर्तन तथा नृत्य के द्वारा कभी अद्वैत आचार्य को नाचने के लिए प्रेरित किया। तो कभी वे नित्यानन्द प्रभु, हरिदास ठाकुर तथा अच्युतानन्द को नाचने के लिए प्रेरित करते।

कभु वक्रेश्वरे, कभु आर भक्त-गणे ।
त्रिसन्ध्या कीर्तन करे गुण्डिचा-प्राङ्गणे ॥७२॥
कभु वक्रेश्वरे, कभु आर भक्त-गणे ।
त्रिसन्ध्या कीर्तन करे गुण्डिचा-प्राङ्गणे ॥७२॥

कभु वक्रेश्वरे—कभी वक्रेश्वर पण्डित; **कभु**—कभी; **आर भक्त-गणे**—अन्य भक्तगण; **त्रि-सन्ध्या**—तीन बार (प्रातःकाल, सन्ध्याकाल और दोपहर को); **कीर्तन करे**—कीर्तन करते थे; **गुण्डिचा-प्राङ्गणे**—गुण्डिचा मन्दिर के प्रांगण में।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु कभी वक्रेश्वर को कीर्तन तथा नृत्य में लगा देते थे तो कभी अन्य भक्तों को। महाप्रभु गुण्डिचा मन्दिर के आँगन में नित्य तीन बार—प्रातः, दोपहर तथा शाम को—संकीर्तन करते थे।

বৃন্দাবনে আইলা কৃষ্ণ——এই প্রভুর জ্ঞান ।
কৃষ্ণের বিরহ-স্ফূর্তি হৈল অবসান ॥৭৩॥

वृन्दावने आइला कृष्ण——एइ प्रभुर ज्ञान ।
कृष्णेर विरह-स्फूर्ति हैल अवसान ॥७३॥

वृन्दावने—वृन्दावन में; **आइला कृष्ण**—कृष्ण आये हैं; **एइ प्रभुर ज्ञान**—यह श्री चैतन्य महाप्रभु की चेतना थी; **कृष्णेर**—भगवान् कृष्ण से; **विरह-स्फूर्ति**—विरह-अनुभूति; **हैल अवसान**—समाप्त हुई।

अनुवाद

इस समय पर चैतन्य महाप्रभु को लगा कि कृष्ण वृन्दावन लौट चुके हैं। ऐसा सोचकर उनकी कृष्ण-विरह की अनुभूति शान्त हो गई।

রাধা-সঙ্গে কৃষ্ণ-লীলা——এই হৈল জ্ঞানে ।
এই রসে মগ্ন প্রভু হইলা আপনে ॥৭৪॥

राधा-सङ्गे कृष्ण-लीला——एइ हैल ज्ञाने ।
एइ रसे मग्न प्रभु हइला आपने ॥७४॥

राधा-सङ्गे—राधारानी के संग; **कृष्ण-लीला**—भगवान् कृष्ण की लीलाएँ; **एइ हैल ज्ञाने**—यह उनकी चेतना थी; **एइ रसे मग्न**—इस रस में मग्न; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **हइला आपने**—स्वयं रहे।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु सदैव राधा तथा कृष्ण की लीलाओं का चिन्तन करते रहते और वे इसी चेतना में निमग्न रहते।

নানোদ্যানে ভক্ত-সঙ্গে বৃন্দাবন-লীলা ।
'ইন্দ্রদ্যুম্ন'-সরোবরে করে জল-খেলা ॥৭৫॥

नानोद्याने भक्त-सङ्गे वृन्दावन-लीला ।
'इन्द्रद्युम्न'-सरोवरे करे जल-खेला ॥७५॥

नाना-उद्याने—विभिन्न उद्यानों में; **भक्त-सङ्गे**—भक्तों के साथ; **वृन्दावन-लीला**—वृन्दावन की लीलाएँ; **इन्द्रद्युम्न**—इन्द्रद्युम्न; **सरोवरे**—सरोवर में; **करे जल-खेला**—जल-क्रीड़ाएँ कीं।

अनुवाद

गुण्डिचा मन्दिर के पास अनेक बगीचे थे और श्री चैतन्य महाप्रभु तथा उनके भक्त इन सबमें वृन्दावन-लीलाएँ किया करते थे। इन्द्रद्युम्न नामक सरोवर में वे जल-क्रीड़ा करते थे।

आपने सकल भक्ते सिञ्चे जल दिया ।
सब भक्त-गण सिञ्चे चौदिके बेड़िया ॥७६॥

आपने सकल भक्ते सिञ्चे जल दिया ।
सब भक्त-गण सिञ्चे चौदिके बेड़िया ॥ ७६ ॥

आपने—स्वयं; **सकल भक्ते**—सभी भक्तों पर; **सिञ्चे**—छिड़कते; **जल दिया**—जल से; **सब भक्त-गण**—सभी भक्तगण; **सिञ्चे**—छिड़कते थे; **चौ-दिके बेड़िया**—महाप्रभु को चारों ओर से घेरकर।

अनुवाद

महाप्रभु स्वयं सारे भक्तों पर जल उछालते और सारे भक्त भी उन्हें चारों ओर से घेरकर उन पर पानी उछालते।

कभु एक मण्डल, कभु अनेक मण्डल ।
जल-मण्डूक-वाद्ये सबे बाजाय करताल ॥७७॥

कभु एक मण्डल, कभु अनेक मण्डल ।
जल-मण्डूक-वाद्ये सबे बाजाय करताल ॥ ७७ ॥

कभु एक मण्डल—कभी एक गोला; **कभु**—कभी; **अनेक मण्डल**—अनेक गोले; **जल-मण्डूक-वाद्ये**—जल में मेंडकों के टर्राने की ध्वनि के समान; **सबे**—वे सब; **बाजाय**—बजाते थे; **करताल**—करताल।

अनुवाद

जल में वे कभी एक वृत्त (मण्डल) बनाते और कभी अनेक वृत्त बनाते। वे जल के भीतर करताल बजाकर मेढ़कों की टर्राहट की नकल उतारते।

দুই-দুই জনে মেলি' করে জল-রণ ।
কেহ হারে, কেহ জিনে—প্রভু করে দরশন ॥৭৮॥

দুই-দুই জনে মেলি' করে জল-রণ ।
কেহ হারে, কেহ জিনে—প্রভু করে দরশন ॥৭৮॥

দুই-দুই জনে—दो दो व्यक्ति के समूह में; **মেলি'**—मिलकर; **করে**—करते थे; **জল-রণ**—जल-युद्ध; **কেহ হারে**—कोई पराजित होता था; **কেহ জিনে**—कोई विजयी होता था; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **করে দরশন**—उसे देखते थे।

अनुवाद

कभी दो भक्त जोड़ी बनाकर जल में लड़ते। इनमें से एक जीत जाता और दूसरा हार जाता। महाप्रभु यह सारा तमाशा देखते रहते।

অদ্বৈত-নিত্যানন্দে জল-ফেলাফেলি ।
আচার্য হারিয়া পাছে করে গালাগালি ॥৭৯॥

অদ্বৈত-নিত্যানন্দে জল-ফেলাফেলি ।
আচার্য্য হারিয়া পাছে করে গালাগালি ॥৭৯॥

অদ্বৈত-নিত্যানন্দে—अद्वैत आचार्य एवं नित्यानन्द प्रभु; **জল-ফেলাফেলি**—एक दूसरे पर जल फेंककर; **আচার্য্য হারিয়া**—अद्वैत आचार्य पराजित होने के बाद; **পাছে**—अन्त में; **করে**—करने लगे; **গালাগালি**—गाली गलोच।

अनुवाद

पहला खिलवाड़ अद्वैत आचार्य तथा नित्यानन्द प्रभु के बीच हुआ। वे एक-दूसरे पर पानी फेंकने लगे। अद्वैत आचार्य हार गये और बाद में नित्यानन्द को गालियाँ देने लगे।

বিদ্যানিধির জল-কেলি স্বরূপের সনে ।
গুপ্ত-দত্তে জল-কেলি করে দুই জনে ॥৮০॥

বিদ্যানিধির জল-কেলি স্বরূপের সনে ।
গুপ্ত-দত্তে জল-কেলি করে দুই জনে ॥৮০॥

বিদ্যানিধির—विद्यानिधि की; **জল-কেলি**—जल-क्रीड़ा; **স্বরূপের সনে**—स्वरूप

दामोदर के साथ; **गुप्त-दत्ते**—मुरारि गुप्त और वासुदेव दत्त; **जल-केलि**—जल-क्रीड़ा; **करे**—करते थे; **दुइ जने**—दो व्यक्ति।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर तथा विद्यानिधि भी एक-दूसरे पर पानी फेंकने लगे। मुरारि गुप्त तथा वासुदेव दत्त ने भी इसी तरह खिलवाड़ किया।

श्रीवास-सहित जल खेले गदाधर ।
राघव-पण्डित सने खेले वक्रेश्वर ॥ ८१ ॥

श्रीवास-सहित जल खेले गदाधर ।
राघव-पण्डित सने खेले वक्रेश्वर ॥ ८१ ॥

श्रीवास-सहित—श्रीवास ठाकुर के साथ; **जल खेले**—जल क्रीड़ा करते थे; **गदाधर**—गदाधर पण्डित; **राघव-पण्डित सने**—राघव पण्डित के साथ; **खेले**—खेलते थे; **वक्रेश्वर**—वक्रेश्वर पण्डित।

अनुवाद

श्रीवास ठाकुर तथा गदाधर पण्डित के बीच जलक्रीड़ा हुई तथा राघव पण्डित और वक्रेश्वर पण्डित के बीच भी ऐसी ही क्रीड़ा हुई। वे एक-दूसरे पर जल फेंकने में व्यस्त हो गये।

सार्वभौम-सङ्गे खेले रामानन्द-राय ।
गाम्भीर्य गेल दोँहार, हैल शिशु-प्राय ॥ ८२ ॥

सार्वभौम-सङ्गे खेले रामानन्द-राय ।
गाम्भीर्य्य गेल दोंहार, हैल शिशु-प्राय ॥ ८२ ॥

सार्वभौम-सङ्गे—सार्वभौम भट्टाचार्य के साथ; **खेले**—खेलते थे; **रामानन्द-राय**—श्री रामानन्द राय; **गाम्भीर्य्य**—गम्भीरता; **गेल**—लुप्त हो गई; **दोंहार**—दोनों की; **हैल**—हो गये; **शिशु-प्राय**—शिशु के समान।

अनुवाद

सार्वभौम भट्टाचार्य श्रीरामानन्द राय के साथ जल-क्रीड़ा करने लगे। वे दोनों अपनी गम्भीरता त्यागकर बच्चों जैसे बन गये।

महाप्रभु তাঁ দোঁহার চাঞ্চল্য দেখিয়া ।
গোপীনাথাচার্যে কিছু কহেন হাসিয়া ॥৮৩॥

महाप्रभु ताँ दोंहार चाञ्चल्य देखिया ।
गोपीनाथाचार्य्रे किछु कहेन हासिया ॥८३॥

महाप्रभु—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **ताँ दोंहार**—इन दोनों व्यक्तियों की; **चाञ्चल्य**—चंचलता; **देखिया**—देखकर; **गोपीनाथ-आचार्य्रे**—गोपीनाथ आचार्य को; **किछु**—कुछ; **कहेन**—कहा; **हासिया**—मुस्कुराकर।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु ने सार्वभौम भट्टाचार्य तथा रामानन्द राय की चंचलता देखी, तो वे हँसने लगे और गोपीनाथ आचार्य से बोले।

পণ্ডিত, গম্ভীর, দুঁহে—প্রামাণিক জন ।
বাল-চাঞ্চল্য করে, করাহ বর্জন ॥৮৪॥

पण्डित, गम्भीर, दुँहे—प्रामाणिक जन ।
बाल-चाञ्चल्य करे, कराह वर्जन ॥८४॥

पण्डित—पण्डित; **गम्भीर**—अत्यन्त गम्भीर; **दुँहे**—वे दोनों; **प्रामाणिक जन**—प्रामाणिक व्यक्ति; **बाल-चाञ्चल्य करे**—बालक की तरह चंचलता; **कराह वर्जन**—उन्हें बन्द करने को कहो।

अनुवाद

"भट्टाचार्य तथा रामानन्द राय दोनों से कहो कि वे अपना बालकों जैसा खेल बन्द कर दें, क्योंकि दोनों अत्यन्त विद्वान, गम्भीर तथा महापुरुष हैं।"

গোপীনাথ কহে,—তোমার কৃপা-মহাসিন্ধু ।
উছলিত করে যবে তার এক বিন্দু ॥৮৫॥

गोपीनाथ कहे,—तोमार कृपा-महासिन्धु ।
उछलित करे य्रबे तार एक बिन्दु ॥८५॥

गोपीनाथ कहे—गोपीनाथ आचार्य ने उत्तर दिया; **तोमार कृपा**—आपकी कृपा से;

महा-सिन्धु—महासागर; **उछलित करे**—उमड़ता है; **ग्रबे**—जब; **तार**—उसकी; **एक बिन्दु**—एक बूँद।

अनुवाद

गोपीनाथ आचार्य ने उत्तर दिया, "मुझे लगता है कि आपकी महान् कृपा रूपी सिंधु का एक बिन्दु उनके ऊपर उछलकर गिर पड़ा है।

মেরু-মন্দর-পর্বত ডুবায় যথা তথা ।
এই দুই——গণ্ড-শৈল, ইহার কা কথা ॥৮৬॥

मेरु-मन्दर-पर्वत डुबाय ग्रथा तथा ।
एइ दुइ——गण्ड-शैल, इहार का कथा ॥८६॥

मेरु-मन्दर—सुमेरु और मन्दर पर्वत; **पर्वत**—पर्वत; **डुबाय**—डूब जाते हैं; **ग्रथा तथा**—जहाँ कहीं भी; **एइ दुइ**—ये दोनों; **गण्ड-शैल**—अत्यन्त छोटी पहाड़ियों; **इहार का कथा**—के क्या कहने।

अनुवाद

"आपके कृपा-सिन्धु की एक बूँद सुमेरु तथा मन्दर जैसे विशाल पर्वतों को डुबो सकती है। चूँकि ये दोनों महाशय लघु पर्वतों जैसे हैं, अतएव ये दोनों आपकी कृपा रूपी सिन्धु में डूबे जा रहे हैं।

শুষ্ক-তর্ক-খলি খাইতে জন্ম গেল যাঁর ।
তাঁরে লীলামৃত পিয়াও,——এ কৃপা তোমার ॥৮৭॥

शुष्क-तर्क-खलि खाइते जन्म गेल ग्राँर ।
ताँरे लीलामृत पियाओ,——ए कृपा तोमार ॥८७॥

शुष्क-तर्क—शुष्क तर्क का; **खलि**—खली की टिकिया; **खाइते**—खाकर; **जन्म**—जन्म भर; **गेल**—व्यतीत हुआ; **ग्राँर**—जिसका; **ताँरे**—उसको; **लीला-अमृत**—अपनी लीलाओं का अमृत; **पियाओ**—आपने पिलाया; **ए**—यह; **कृपा**—कृपा; **तोमार**—आपकी।

अनुवाद

"तर्क उस शुष्क खली के समान है, जिसमें से सारा तेल निचोड़ लिया गया हो। भट्टाचार्य का सारा जीवन ऐसी शुष्क खली को खाने में

बीता, किन्तु अब आपने उन्हें दिव्य लीलाओं का अमृतपान कराया है। निश्चय ही यह आपकी उन पर महती कृपा है।"

हासि' महाप्रभु तबे अद्वैते आनिल ।
जलेर उपरे ताँरे शेष-शय्या कैल ॥ ८८॥

हासि' महाप्रभु तबे अद्वैते आनिल ।
जलेर उपरे ताँरे शेष-शय्या कैल ॥ ८८॥

हासि'—मुस्कुराकर; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **तबे**—उस समय; **अद्वैते आनिल**—अद्वैत आचार्य को बुलाया; **जलेर उपरे**—जल की सतह पर; **ताँरे**—उनको; **शेष-शय्या**—शेषनाग की शय्या; **कैल**—बनाया।

अनुवाद

गोपीनाथ आचार्य की बात सुनकर श्री चैतन्य महाप्रभु हँसने लगे और अद्वैत आचार्य को बुलाकर उन्हें शेष नाग की शय्या जैसा बनने को कहा।

आपने ताँहार उपर करिल शयन ।
'शेष-शायी-लीला' प्रभु कैल प्रकटन ॥ ८९॥

आपने ताँहार उपर करिल शयन ।
'शेष-शायी-लीला' प्रभु कैल प्रकटन ॥ ८९॥

आपने—स्वयं; **ताँहार उपर**—अद्वैत आचार्य के ऊपर; **करिल शयन**—लेट गये; **शेष-शायी-लीला**—शेषशायी विष्णु; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **कैल प्रकटन**—प्रकट किया।

अनुवाद

जल में तैर रहे अद्वैत प्रभु के ऊपर लेटकर श्री चैतन्य महाप्रभु ने शेषशायी विष्णु की लीला का प्रदर्शन किया।

अद्वैत निज-शक्ति प्रकट करिया ।
महाप्रभु लञा बुले जलेते भासिया ॥ ९०॥

अद्वैत निज-शक्ति प्रकट करिया ।
महाप्रभु लञा बुले जलेते भासिया ॥ ९०॥

अद्वैत—अद्वत आचार्य ने; **निज-शक्ति**—अपनी निजी शक्ति; **प्रकट करिया**—प्रकट की; **महाप्रभु लञा**—श्री चैतन्य महाप्रभु को उठाते हुए; **बुले**—चलने लगे; **जलेते**—जल पर; **भासिया**—तैरते हुए।

अनुवाद

अद्वैत आचार्य अपनी निजी शक्ति प्रकट करते हुए श्री चैतन्य महाप्रभु को लेकर जल के ऊपर तैरते रहे।

এই-মত জল-ক্রীড়া করি' কত-ক্ষণ ।
আইটোটা আইলা প্রভু লঞা ভক্ত-গণ ॥ ৯১ ॥

এই-মত জল-ক্রীড়া করি' কত-ক্ষণ ।
আইটোটা আইলা প্রভু লঞা ভক্ত-গণ ॥ ৯১ ॥

एइ-मत—इस प्रकार; **जल-क्रीड़ा**—जल-क्रीड़ा; **करि'**—करके; **कत-क्षण**—कुछ क्षणों के लिए; **आइटोटा**—आइटोटा नामक स्थान को; **आइला**—लौट आये; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **लञा भक्त-गण**—भक्तों के साथ।

अनुवाद

कुछ काल तक जल-क्रीड़ा करने के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु अपने भक्तों के साथ आइटोटा नामक अपने स्थान पर लौट आये।

পুরী, ভারতী আদি যত মুখ্য ভক্ত-গণ ।
আচার্যের নিমন্ত্রণে করিলা ভোজন ॥ ৯২ ॥

पुरी, भारती आदि यत मुख्य भक्त-गण ।
आचार्येर निमन्त्रणे करिला भोजन ॥ ९२ ॥

पुरी—परमानन्द पुरी; **भारती**—ब्रह्मानन्द भारती; **आदि**—आदि; **यत**—सभी; **मुख्य**—मुख्य; **भक्त-गण**—भक्तों ने; **आचार्येर**—अद्वैत आचार्य के; **निमन्त्रणे**—निमन्त्रण से; **करिला भोजन**—उनका भोजन स्वीकार किया।

अनुवाद

अद्वैत आचार्य द्वारा निमन्त्रित किये जाने पर परमानन्द पुरी, ब्रह्मानन्द भारती तथा महाप्रभु के अन्य प्रमुख भक्तों ने भोजन ग्रहण किया।

বাণীনাথ আর যত প্রসাদ আনিল ।
মহাপ্রভুর গণে সেই প্রসাদ খাইল ॥৯৩॥

বাণীনাথ আর য়ত প্রসাদ আনিল ।
মহাপ্রভুর গণে সেइ প্রসাদ খাइল ॥ ৯३ ॥

वाणीनाथ—वाणीनाथ राय; **आर**—अतिरिक्त; **य्रत**—जो कुछ; **प्रसाद**—प्रसाद; **आनिल**—लाये थे; **महाप्रभुर गणे**—श्री चैतन्य महाप्रभु के निजी पार्षद; **सेइ**—वह; **प्रसाद**—प्रसाद; **खाइल**—खा लिया।

अनुवाद

वाणीनाथ राय अपने साथ जो भी अधिक प्रसाद लाये थे, उसे महाप्रभु के अन्य संगियों ने खाया।

অপরাহ্নে আসি' কৈল দর্শন, নর্তন ।
নিশাতে উদ্যানে আসি' করিলা শয়ন ॥৯৪॥

অপরাহ্ণে আসি' কৈল দর্শন, নর্তন ।
নিশাতে উদ্যানে আসি' করিলা শয়ন ॥ ৯৪॥

अपराह्णे—दोपहर के समय; **आसि'**—आकर; **कैल**—किया; **दर्शन नर्तन**—भगवान् का दर्शन और नृत्य; **निशाते**—रात को; **उद्याने**—उद्यान में; **आसि'**—आकर; **करिला शयन**—विश्राम किया।

अनुवाद

दोपहर के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु गुण्डिचा मन्दिर में भगवान् का दर्शन करने तथा नाचने के लिए गये। रात्रि में वे विश्राम करने के लिए बगीचे में गये।

আর দিন আসি' কৈল ঈশ্বর দরশন ।
প্রাঙ্গণে নৃত্য-গীত কৈল কত-ক্ষণ ॥৯৫॥

আর দিন আসি' কৈল ঈশ্বর দরশন ।
প্রাঙ্গণে নৃত্য-গীত কৈল কত-ক্ষণ ॥ ৯৫॥

आर दिन—अगले दिन; **आसि'**—आकर; **कैल**—किया; **ईश्वर दरशन**—भगवान् का

दर्शन; **प्राङ्गणे**—प्रांगण में; **नृत्य-गीत**—नृत्य तथा कीर्तन; **कैल**—किया; **कत-क्षण**—कुछ समय के लिए।

अनुवाद

अगले दिन श्री चैतन्य महाप्रभु गुण्डिचा मन्दिर भी गये और भगवान् का दर्शन किया। तब वे आँगन में कुछ समय तक गाते और नाचते रहे।

ভক্ত-গণ-সঙ্গে প্রভু উদ্যানে আসিয়া ।
বৃন্দাবন-বিহার করে ভক্ত-গণ লঞা ॥৯৬॥

भक्त-गण-सङ्गे प्रभु उद्याने आसिया ।
वृन्दावन-विहार करे भक्त-गण लञा ॥ ९६ ॥

भक्त-गण-सङ्गे—भक्तों के साथ; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **उद्याने**—उद्यान में; **आसिया**—आकर; **वृन्दावन-विहार**—वृन्दावन लीलाएँ; **करे**—कीं; **भक्त-गण लञा**—सभी भक्तों के साथ।

अनुवाद

तब श्री चैतन्य महाप्रभु अपने भक्तों के साथ बगीचे में गये और वहाँ उन्होंने वृन्दावन-लीला का आनन्द उठाया।

तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर ने इंगित किया है कि यह *वृन्दावन-विहार* कृष्ण का गोपियों के साथ मिलने-जुलने या परकीय रस का द्योतक नहीं है। जिस तरह कृष्ण ने वृन्दावन-लीला में स्त्रियों या दूसरों की पत्नियों के साथ दिव्य संगति की थी, जगन्नाथ पुरी के बगीचे में महाप्रभु ने उस प्रकार नहीं किया। श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपनी वृन्दावन-लीला में अपने आपको श्रीमती राधारानी का सहायक माना। जब श्रीमती राधारानी ने कृष्ण की संगति का आनन्द लिया, तो उनकी दासियाँ अत्यन्त प्रसन्न थीं। जगन्नाथ के बगीचे में महाप्रभु के *वृन्दावन-विहार* की गौरांग नागरियों के कार्यकलापों से तुलना नहीं करनी चाहिए।

বৃক্ষ-বল্লী প্রফুল্লিত প্রভুর দরশনে ।
ভৃঙ্গ-পিক গায়, বহে শীতল পবনে ॥৯৭॥

वृक्ष-वल्ली प्रफुल्लित प्रभुर दरशने ।
भृङ्ग-पिक गाय, वहे शीतल पवने ॥ ९७॥

वृक्ष-वल्ली—वृक्ष एवं लताएँ; **प्रफुल्लित**—प्रसन्न हो गई; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **दरशने**—दर्शन से; **भृङ्ग**—भ्रमर; **पिक**—पक्षी; **गाय**—गाने लगे; **वहे**—चल रही थी; **शीतल**—शीतल; **पवने**—वायु।

अनुवाद

बगीचे में नाना प्रकार के वृक्ष तथा लताएँ थे और वे सभी श्री चैतन्य महाप्रभु को देखकर अत्यन्त प्रफुल्लित थे। पक्षी चहचहा रहे थे, भौंरे गुनगुना रहे थे और शीतल पवन बह रही थी।

प्रति-वृक्ष-तले प्रभु करेन नर्तन ।
वासुदेव-दत्त मात्र करेन गायन ॥९८॥
प्रति-वृक्ष-तले प्रभु करेन नर्तन ।
वासुदेव-दत्त मात्र करेन गायन ॥ ९८॥

प्रति-वृक्ष-तले—प्रत्येक वृक्ष के नीचे; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **करेन नर्तन**—नृत्य करते थे; **वासुदेव-दत्त**—वासुदेव दत्त; **मात्र**—केवल; **करेन**—कर रहे थे; **गायन**—कीर्तन।

अनुवाद

चूँकि महाप्रभु हर वृक्ष के नीचे नाच रहे थे, इसलिए वासुदेव को अकेले गाना पड़ा।

एक एक वृक्ष-तले एक एक गान गाय ।
परम-आवेशे एका नाचे गौररराय ॥९९॥
एक एक वृक्ष-तले एक एक गान गाय ।
परम-आवेशे एका नाचे गौरराय ॥ ९९॥

एक एक वृक्ष-तले—प्रत्येक वृक्ष के नीचे; **एक एक**—एक एक; **गान**—गीत; **गाय**—गाया; **परम-आवेशे**—परम आवेश में आकर; **एका**—अकेले; **नाचे**—नृत्य किया; **गौरराय**—श्री चैतन्य महाप्रभु।

अनुवाद

जब वासुदेव दत्त हर वृक्ष के नीचे पृथक्-पृथक् गाना गा रहे थे, तो श्री चैतन्य महाप्रभु बड़े ही भावावेश में अकेले नाच रहे थे।

तबे वक्रेश्वरे प्रभु कहिला नाचिते ।
वक्रेश्वर नाचे, प्रभु लागिला गाइते ॥ १०० ॥

तबे वक्रेश्वरे प्रभु कहिला नाचिते ।
वक्रेश्वर नाचे, प्रभु लागिला गाइते ॥ १०० ॥

तबे—उसके पश्चात्; **वक्रेश्वरे**—वक्रेश्वर पण्डित को; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **कहिला**—आदेश दिया; **नाचिते**—नाचने का; **वक्रेश्वर नाचे**—वक्रेश्वर पण्डित नाचने लगे; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **लागिला**—लगे; **गाइते**—गाने।

अनुवाद

तब श्री चैतन्य महाप्रभु ने वक्रेश्वर पण्डित को नाचने के लिए आदेश दिया और ज्योंही वे नाचने लगे, महाप्रभु गाने लगे।

प्रभु-सङ्गे स्वरूपादि कीर्तनीया गाय ।
दिक्दिदिक्नाहि ज्ञान प्रेमेर वन्याय ॥ १०१ ॥

प्रभु-सङ्गे स्वरूपादि कीर्तनीया गाय ।
दिक्विदिक्नाहि ज्ञान प्रेमेर वन्याय ॥ १०१ ॥

प्रभु-सङ्गे—श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ; **स्वरूप-आदि**—स्वरूप दामोदर आदि; **कीर्तनीया**—कीर्तनिया; **गाय**—गाने लगे; **दिक्-विदिक्**—समय एवं परिस्थिति की; **नाहि**—नहीं; **ज्ञान**—सुध-बुध; **प्रेमेर**—प्रेम की; **वन्याय**—विभोर होने के कारण।

अनुवाद

तब स्वरूप दामोदर तथा अन्य कीर्तनिये भी श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ-साथ गाने लगे। प्रेमविभोर होने के कारण उन्हें समय तथा परिस्थिति का ध्यान ही न रहा।

एइ मत कत-क्षण करि' वन-लीला ।
नरेन्द्र-सरोवरे गेला करिते जल-खेला ॥ १०२ ॥

एइ मत कत-क्षण करि' वन-लीला ।
नरेन्द्र-सरोवरे गेला करिते जल-खेला ॥ १०२ ॥

एइ मत—इस प्रकार; **कत-क्षण**—कुछ समय के लिए; **करि'**—करके; **वन-लीला**—उद्यान में लीला; **नरेन्द्र-सरोवरे**—नरेन्द्र सरोवर नामक सरोवर में; **गेला**—वे चले गये; **करिते**—करने; **जल-खेला**—जल-क्रीड़ा।

अनुवाद

कुछ समय तक इस तरह उद्यान-लीला करने के बाद वे सभी नरेन्द्र सरोवर में स्नान करने गये और वहाँ जल-क्रीड़ा का आनन्द लूटा।

জল-ক্রীড়া করি' পুনঃ আইলা উদ্যানে ।
ভোজন-লীলা কৈলা প্রভু লঞা ভক্ত-গণে ॥ ১০৩ ॥

जल-क्रीड़ा करि' पुनः आइला उद्याने ।
भोजन-लीला कैला प्रभु लञा भक्त-गणे ॥ १०३ ॥

जल-क्रीड़ा—जल क्रीड़ा; **करि'**—करके; **पुनः**—पुनः; **आइला**—आ गये; **उद्याने**—उद्यान में; **भोजन-लीला**—प्रसाद लेने की लीलाएँ; **कैला**—की; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **लञा भक्त-गणे**—सभी भक्तों सहित।

अनुवाद

जल-क्रीड़ा करने के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु पुनः बगीचे में लौट आये और वहाँ भक्तों के साथ प्रसाद ग्रहण किया।

নব দিন গুণ্ডিচাতে রহে জগন্নাথ ।
মহাপ্রভু ঐছে লীলা করে ভক্ত-সাথ ॥ ১০৪ ॥

नव दिन गुण्डिचाते रहे जगन्नाथ ।
महाप्रभु ऐछे लीला करे भक्त-साथ ॥ १०४ ॥

नव दिन—नौ दिन; **गुण्डिचाते**—गुण्डिचा मन्दिर में; **रहे**—रहे; **जगन्नाथ**—भगवान् जगन्नाथ; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ऐछे**—ऊपर लिखे तरीके से; **लीला**—लीलाएँ; **करे**—कीं; **भक्त-साथ**—अपने भक्तों के साथ।

अनुवाद

भगवान् श्री जगन्नाथ देव नौ दिनों तक गुण्डिचा मन्दिर में निवास

करते रहे। इस बीच श्री चैतन्य महाप्रभु भी वहीं रुके रहे और अपने भक्तों के साथ लीलाएँ करते रहे, जिनका वर्णन किया जा चुका है।

'জগন্নাথ-বল্লভ' নাম বড় পুষ্পারাম ।
নব দিন করেন প্রভু তথাই বিশ্রাম ॥১০৫॥

'जगन्नाथ-वल्लभ' नाम बड़ पुष्पाराम ।
नव दिन करेन प्रभु तथाइ विश्राम ॥ १०५ ॥

जगन्नाथ-वल्लभ—जगन्नाथ वल्लभ; **नाम**—नामक; **बड़**—बड़ा; **पुष्प-आराम**—उद्यान; **नव दिन**—नौ दिन; **करेन**—किया; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **तथाइ**—वहाँ; **विश्राम**—विश्राम।

अनुवाद

जहाँ महाप्रभु लीलाएँ कर रहे थे, वह बगीचा बहुत बड़ा था और "जगन्नाथ वल्लभ" कहलाता था। श्री चैतन्य महाप्रभु ने वहीं नौ दिनों तक विश्राम किया।

'হেরা-পঞ্চমী'র দিন আইল জানিয়া ।
কাশী-মিশ্রে কহে রাজা সয়ত্ন করিয়া ॥১০৬॥

'हेरा-पञ्चमी'र दिन आइल जानिया ।
काशी-मिश्रे कहे राजा सयत्न करिया ॥ १०६ ॥

हेरा-पञ्चमीर दिन—हेरापंचमी के दिन; **आइल**—निकट आ रहा था; **जानिया**—यह जानकर; **काशी-मिश्रे**—काशी मिश्र को; **कहे**—कहा; **राजा**—राजा ने; **स-यत्न करिया**—बड़े ध्यान से।

अनुवाद

यह जानकर कि हेरापंचमी उत्सव आने वाला है, राजा प्रतापरुद्र ने काशी मिश्र से बड़ी सावधानी से बात की।

কল্য 'হেরা-পঞ্চমী' হবে লক্ষ্মীর বিজয় ।
ঐছে উৎসব কর যেন কভু নাহি হয় ॥১০৭॥

कल्य 'हेरा-पञ्चमी' हबे लक्ष्मीर विजय ।
ऐछे उत्सव कर ग्रेन कभु नाहि हय ॥ १०७॥

कल्य—कल; **हेरा-पञ्चमी**—हेरापंचमी का उत्सव; **हबे**—होगा; **लक्ष्मीर**—भाग्य की देवी का; **विजय**—आगमन; **ऐछे**—ऐसा; **उत्सव**—उत्सव; **कर**—करो; **ग्रेन**—जैसा; **कभु**—कभी भी; **नाहि हय**—नहीं हुआ।

अनुवाद

"कल हेरापंचमी या लक्ष्मीविजय उत्सव होगा। तुम इस उत्सव को इस तरह से मनाओ, जैसाकि इसके पूर्व कभी न मनाया गया हो।"

तात्पर्य

हेरापंचमी का उत्सव रथयात्रा के पाँच दिन बाद पड़ता है। भगवान् जगन्नाथ अपनी पत्नी लक्ष्मी को छोड़कर वृन्दावन अर्थात् गुण्डिचा मन्दिर चले जाते हैं। भगवान् से विरह के कारण लक्ष्मी निश्चय करती है कि वे भगवान् का दर्शन करने गुण्डिचा मन्दिर जायेंगी। अत: गुण्डिचा मन्दिर में लक्ष्मीजी के आगमन को हेरापंचमी के रूप में मनाया जाता है। कभी-कभी *अतिवाड़ी* सम्प्रदाय के लोग हेरापंचमी का नाम बिगाड़कर उसे हरापंचमी कहते हैं। *हेरा* शब्द का अर्थ है "देखना" और यह सूचक है लक्ष्मीजी द्वारा जगन्नाथजी के दर्शन के लिए जाने का। पंचमी शब्द का अर्थ है "पाँचवाँ दिन" और इस का उपयोग इसलिए किया जाता है, क्योंकि यह चन्द्र के पाँचवें दिन मनाया जाता है।

महोत्सव कर तैछे विशेष सम्भार ।
देखि' महाप्रभुर यैछे हय चमत्कार ॥ १०८॥

महोत्सव—महोत्सव; **कर**—मनाओ; **तैछे**—ऐसे; **विशेष सम्भार**—बड़ी शान से; **देखि'**—देखकर; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **ग्रैछे**—ताकि; **हय**—हो; **चमत्कार**—आश्चर्य।

अनुवाद

राजा प्रतापरुद्र ने कहा, "तुम इस उत्सव को इतने शानदार ढंग से

मनाओ कि इसे देखकर चैतन्य महाप्रभु पूरी तरह प्रसन्न और चकित हो जाएँ।

ঠাকুরের ভাণ্ডারে আর আমার ভাণ্ডারে ।
চিত্র-বস্ত্র-কিঙ্কিণী, আর ছত্র-চামরে ॥ ১০৯॥

ठाकुरेर भाण्डारे आर आमार भाण्डारे ।
चित्र-वस्त्र-किङ्किणी, आर छत्र-चामरे ॥ १०९॥

ठाकुरेर—अर्चाविग्रह के; **भाण्डारे**—भण्डार में; **आर**—और; **आमार**—मेरे; **भाण्डारे**—गोदाम में; **चित्र-वस्त्र**—चित्रित वस्त्र; **किङ्किणी**—छोटी घण्टियाँ; **आर**—और; **छत्र**—छत्र; **चामरे**—चामर।

अनुवाद

"मेरे भण्डार में तथा अर्चाविग्रह के भण्डार-घर में जितने भी छपे कपड़े, छोटी घंटियाँ, छत्र तथा चामर हों, इन सबको ले लो।

ধ্বজাবৃন্দ-পতাকা-ঘণ্টায় করহ মণ্ডন ।
নানা-বাদ্য-নৃত্য-দোলায় করহ সাজন ॥ ১১০॥

ध्वजावृन्द-पताका-घण्टाय करह मण्डन ।
नाना-वाद्य-नृत्य-दोलाय करह साजन ॥ ११०॥

ध्वजा-वृन्द—कई प्रकार की झण्डियाँ; **पताका**—बड़े झण्डे; **घण्टाय**—घण्टियों से; **करह**—करो; **मण्डन**—सजावट; **नाना-वाद्य**—नाना प्रकार के वाद्य यंत्र; **नृत्य**—नृत्य; **दोलाय**—डोली पर; **करह साजन**—आकर्षक रूप से सजाओ।

अनुवाद

"सभी तरह की छोटी बड़ी झंडियाँ तथा झंडे और घण्टे एकत्र करो। तब वाहन (दोला) सजाओ और विभिन्न संगीत तथा नृत्य मंडलियों को उसके साथ कर दो। इस तरह वाहन को आकर्षक ढंग से सजाओ।

দ্বিগুণ করিয়া কর সব উপহার ।
রথ-যাত্রা হৈতে যৈছে হয় চমৎকার ॥ ১১১॥

द्विगुण करिया कर सब उपहार ।
रथ-यात्रा हैते यैछे हय चमत्कार ॥ १११ ॥

द्वि-गुण करिया—दुगना करके; **कर**—करो; **सब**—सभी प्रकार के; **उपहार**—उपहार; **रथ-यात्रा हैते**—रथयात्रा की अपेक्षा; **यैछे**—ताकि; **हय**—हो जाये; **चमत्कार**—अधिक आश्चर्यजनक।

अनुवाद

"प्रसाद की मात्रा को भी दुगुना कर दो। प्रसाद इतनी मात्रा में बने कि रथयात्रा उत्सव को भी मात दे दे।

সেইত' করিহ,—প্রভু লঞা ভক্ত-গণ ।
স্বচ্ছন্দে আসিয়া যৈছে করেন দরশন ॥ ১১২ ॥

सेइत' करिह,—प्रभु लञा भक्त-गण ।
स्वच्छन्दे आसिया यैछे करेन दरशन ॥ ११२ ॥

सेइत' करिह—वह करो; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **लञा भक्त-गण**—अपने साथ सभी भक्तों को लेकर; **स्वच्छन्दे**—मुक्त रूप से; **आसिया**—आकर; **यैछे**—जैसे; **करेन दरशन**—मन्दिर के दर्शन के लिए।

अनुवाद

"उत्सव की व्यवस्था ऐसी हो कि श्री चैतन्य महाप्रभु अपने भक्तों समेत स्वच्छन्दपूर्वक बिना किसी कठिनाई के अर्चाविग्रह का दर्शन करने जा सकें।"

প্রাতঃ-কালে মহাপ্রভু নিজ-গণ লঞা ।
জগন্নাথ দর্শন কৈল সুন্দরাচলে যাঞা ॥ ১১৩ ॥

प्रातः-काले महाप्रभु निज-गण लञा ।
जगन्नाथ दर्शन कैल सुन्दराचले याञा ॥ ११३ ॥

प्रातः-काले—प्रात:काल; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **निज-गण लञा**—अपने साथियों को लेकर; **जगन्नाथ दर्शन**—भगवान् जगन्नाथ के दर्शन; **कैल**—किया; **सुन्दराचले**—गुण्डिचा मन्दिर को; **याञा**—गये।

अनुवाद

प्रातःकाल श्री चैतन्य महाप्रभु अपने निजी संगियों को साथ लेकर भगवान् जगन्नाथ का दर्शन करने सुन्दराचल गये।

तात्पर्य

गुण्डिचा मन्दिर ही सुन्दराचल है। जगन्नाथ पुरी स्थित जगन्नाथजी का मन्दिर नीलाचल कहलाता है और गुण्डिचा का मन्दिर सुन्दराचल।

नीलाचले आइला पुनः भक्त-गण-सङ्गे ।
देखिते उत्कण्ठा हेरा-पञ्चमीर रङ्गे ॥ ११४॥

नीलाचले आइला पुनः भक्त-गण-सङ्गे ।
देखिते उत्कण्ठा हेरा-पञ्चमीर रङ्गे ॥ ११४॥

नीलाचले—जगन्नाथ पुरी; **आइला**—लौट आये; **पुनः**—पुनः; **भक्त-गण-सङ्गे**—अपने भक्तों के साथ; **देखिते**—देखने के लिए; **उत्कण्ठा**—अत्यन्त उत्सुकता से; **हेरा-पञ्चमीर रङ्गे**—हेरापंचमी उत्सव को।

अनुवाद

तब श्री चैतन्य महाप्रभु तथा उनके निजी संगी हेरापंचमी उत्सव देखने के लिए बड़ी ही उत्सुकता के साथ नीलाचल लौट आये।

काशी-मिश्र प्रभुरे बहु आदर करिया ।
स्वगण-सह भाल-स्थाने वसाइल लञा ॥ ११५॥

काशी-मिश्र प्रभुरे बहु आदर करिया ।
स्वगण-सह भाल-स्थाने वसाइल लञा ॥ ११५॥

काशी-मिश्र—काशी मिश्र; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **बहु**—बहुत; **आदर करिया**—आदर दिया; **स्व-गण-सह**—अपने साथियों सहित; **भाल-स्थाने**—उत्तम स्थान पर; **वसाइल**—बैठाया; **लञा**—ले जाकर।

अनुवाद

काशी मिश्र ने बड़े ही आदर के साथ चैतन्य महाप्रभु का स्वागत किया और महाप्रभु तथा उनके संगियों को एक बहुत अच्छे स्थान में ले जाकर बिठाया।

রস-বিশেষ প্রভুর শুনিতে মন হৈল ।
ঈষৎ হাসিয়া প্রভু স্বরূপে পুছিল ॥ ১১৬॥

রস-বিশেষ প্রভুর শুনিতে মন হৈল ।
ঈষৎ হাসিয়া প্রভু স্বরূপে পুছিল ॥ ১১৬॥

रस-विशेष—एक विशेष रस; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **शुनिते**—सुनने के लिए; **मन हैल**—इच्छा थी; **ईषत् हासिया**—थोड़ा मुस्कुराकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **स्वरूपे पुछिल**—स्वरूप दामोदर से पूछा।

अनुवाद

बैठने के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु की इच्छा एक विशेष भक्ति-रस के बारे में सुनने को हुई, अतः वे मन्द हँसते हुए स्वरूप दामोदर से पूछने लगे।

যদ্যপি জগন্নাথ করেন দ্বারকায় বিহার ।
সহজ প্রকট করে পরম উদার ॥ ১১৭॥
তথাপি বত্সর-মধ্যে হয় এক-বার ।
বৃন্দাবন দেখিতে তাঁর উত্কণ্ঠা অপার ॥ ১১৮॥

যদ্যপি জগন্নাথ করেন দ্বারকায় বিহার ।
সহজ প্রকট করে পরম উদার ॥ ১১৭॥
তথাপি বত্সর-মধ্যে হয় এক-বার ।
বৃন্দাবন দেখিতে তাঁর উত্কণ্ঠা অপার ॥ ১১৮॥

यद्यपि—यद्यपि; **जगन्नाथ**—भगवान् जगन्नाथ; **करेन**—करते हैं; **द्वारकाय**—द्वारका धाम में; **विहार**—लीलाएँ; **सहज**—स्वाभाविक; **प्रकट**—प्राकट्य; **करे**—करते हैं; **परम**—परम; **उदार**—उदारता; **तथापि**—फिर भी; **वत्सर-मध्ये**—एक वर्ष के अन्दर; **हय**—हो जाती है; **एक-बार**—एक बार; **वृन्दावन देखिते**—वृन्दावन देखने के लिए; **ताँर**—उनकी; **उत्कण्ठा**—उत्सुकता; **अपार**—असीम।

अनुवाद

"यद्यपि जगन्नाथ भगवान् द्वारका धाम में अपनी लीलाएँ करते हैं और वहाँ परम उदारता प्रकट करते हैं, फिर भी वर्ष में एक बार वे वृन्दावन देखने के लिए अत्यधिक उत्कण्ठित हो उठते हैं।"

বৃন্দাবন-সম এই উপবন-গণ ।
তাহা দেখিবারে উৎকণ্ঠিত হয় মন ॥ ১১৯ ॥

বৃন্দাবন-সম এই উপবন-গণ ।
তাহা দেখিবারে উৎকণ্ঠিত হয় মন ॥ ১১৯ ॥

বৃন্দাবন-সম—বৃন্দাবন के समान; **এই**—ये सब; **উপবন-গণ**—उपवन; **তাহা**—वे उपवन; **দেখিবারে**—देखने के लिए; **উৎকণ্ঠিত**—अति उत्सुक; **হয় মন**—उनका मन हो जाता है।

অনুবাদ

पड़ोस के बगीचों की ओर लक्ष्य करते हुए श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "ये सारे बगीचे वृन्दावन जैसे ही हैं, अतएव जगन्नाथजी इन्हें फिर से देखने के लिए अत्यधिक उत्सुक हैं।

বাহির হইতে করে রথ-যাত্রা-ছল ।
সুন্দরাচলে যায় প্রভু ছাড়ি' নীলাচল ॥ ১২০ ॥

বাহির হইতে করে রথ-যাত্রা-ছল ।
সুন্দরাচলে যায় প্রভু ছাড়ি' নীলাচল ॥ ১২০ ॥

বাহির হ-ইতে—बाहर से; **করে**—करते हैं; **রথ-যাত্রা-ছল**—रथयात्रा का आनन्द लेने का बहाना; **সুন্দরাচলে**—गुण्डिचा मन्दिर को; **যায়**—जाते हैं; **প্রভু**—भगवान् जगन्नाथ; **ছাড়ি'**—छोड़कर; **নীলাচল**—जगन्नाथ पुरी को।

অনুবাদ

"बाहर से वे यह दिखावा करते हैं कि वे रथयात्रा में भाग लेना चाहते हैं, लेकिन वास्तव में वे वृन्दावन की प्रतिमूर्ति गुण्डिचा मन्दिर अर्थात् सुन्दराचल जाने के लिए जगन्नाथ पुरी छोड़ना चाहते हैं।

নানা-পুষ্পোদ্যানে তথা খেলে রাত্রি-দিনে ।
লক্ষ্মীদেবীরে সঙ্গে নাহি লয় কি কারণে? ॥ ১২১ ॥

নানা-পুষ্পোদ্যানে তথা খেলে রাত্রি-দিনে ।
লক্ষ্মীদেবীরে সঙ্গে নাহি লয় কি কারণে? ॥ ১২১ ॥

नाना-पुष्प-उद्याने—पुष्पों के विभिन्न उद्यानों में; **तथा**—वहाँ; **खेले**—वे खेलते हैं; **रात्रि-दिने**—रात-दिन; **लक्ष्मी-देवीरे**—लक्ष्मी देवी को; **सङ्गे**—अपने संग; **नाहि**—नहीं; **लय**—लेते; **कि कारणे**—क्या कारण है ?

अनुवाद

"भगवान् रात-दिन फूलों के विभिन्न बगीचों में लीलाओं का आनन्द लेते हैं। लेकिन वे अपने साथ लक्ष्मीदेवी को क्यों नहीं ले जाते?"

स्वरूप कहे,—शुन, प्रभु, कारण ईहार ।
वृन्दावन-क्रीड़ाते लक्ष्मीर नाहि अधिकार ॥ १२२॥

स्वरूप कहे,—शुन, प्रभु, कारण इहार ।
वृन्दावन-क्रीड़ाते लक्ष्मीर नाहि अधिकार ॥ १२२॥

स्वरूप कहे—स्वरूप दामोदर ने उत्तर दिया; **शुन**—कृपया सुनें; **प्रभु**—हे मेरे प्रभु; **कारण इहार**—इसका कारण; **वृन्दावन-क्रीड़ाते**—वृन्दावन की लीलाओं में; **लक्ष्मीर**—लक्ष्मी देवी का; **नाहि**—नही; **अधिकार**—प्रवेश।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर ने उत्तर दिया, "हे प्रभु, कृपया इसका कारण सुनें। लक्ष्मीदेवी को वृन्दावन लीलाओं में प्रवेश नहीं कराया जा सकता।

वृन्दावन-लीलाय कृष्णेर सहाय गोपी-गण ।
गोपी-गण विना कृष्णेर हरिते नारे मन ॥ १२३॥

वृन्दावन-लीलाय कृष्णेर सहाय गोपी-गण ।
गोपी-गण विना कृष्णेर हरिते नारे मन ॥ १२३॥

वृन्दावन-लीलाय—वृन्दावन की लीलाओं में; **कृष्णेर**—भगवान् कृष्ण की; **सहाय**—सहायिकाएँ; **गोपी-गण**—सभी गोपियाँ; **गोपी-गण विना**—गोपियों के बिना; **कृष्णेर**—भगवान् कृष्ण का; **हरिते**—आकर्षित करने के लिए; **नारे**—कोई सक्षम नहीं है; **मन**—मन।

अनुवाद

"वृन्दावन लीलाओं में एकमात्र सहायिकाएँ गोपियाँ ही हैं। गोपियों के अतिरिक्त अन्य कोई कृष्ण का मन आकृष्ट नहीं कर सकता।"

প্রভু কহে,——যাত্রা-ছলে কৃষ্ণের গমন ।
সুভদ্রা আর বলদেব, সঙ্গে দুই জন ॥ ১২৪ ॥

প্রভু কহে,——য়াত্রা-ছলে কৃষ্ণের গমন ।
সুভদ্রা আর বলদেব, সঙ্গে দুই জন ॥ ১২৪ ॥

প্রভু কহে—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **য়াত্রা-ছলে**—रथयात्रा के बहाने; **কৃষ্ণের**—भगवान् कृष्ण का; **গমন**—प्रस्थान; **সুভদ্রা**—उनकी बहन सुभद्रा; **আর**—और; **বলদেব**—उनके भाई बलराम; **সঙ্গে**—उनके साथ; **দুই জন**—दो व्यक्ति।

अनुवाद

महाप्रभु ने कहा, "कृष्ण वहाँ रथयात्रा के बहाने सुभद्रा तथा बलदेव के साथ जाते हैं।

গোপী-সঙ্গে যত লীলা হয় উপবনে ।
নিগূঢ় কৃষ্ণের ভাব কেহ নাহি জানে ॥ ১২৫ ॥

গোপী-সঙ্গে য়ত লীলা হয় উপবনে ।
নিগূঢ় কৃষ্ণের ভাব কেহ নাহি জানে ॥ ১২৫ ॥

গোপী-সঙ্গে—गोपियों के साथ; **য়ত লীলা**—सारी लीलाएँ; **হয় উপবনে**—इन उद्यानों में होती हैं; **নিগূঢ়**—अत्यन्त गुप्त; **কৃষ্ণের**—भगवान् कृष्ण का; **ভাব**—भाव; **কেহ**—कोई; **নাহি**—नहीं; **জানে**—जानता।

अनुवाद

"उन बगीचों में गोपियों के साथ की सारी लीलाएँ भगवान् कृष्ण के अत्यन्त गुह्य भाव हैं। उन्हें कोई नहीं जानता।

অতএব কৃষ্ণের প্রাকট্যে নাহি কিছু দোষ ।
তবে কেনে লক্ষ্মীদেবী করে এত রোষ? ॥ ১২৬ ॥

অতএব কৃষ্ণের প্রাকট্যে নাহি কিছু দোষ ।
তবে কেনে লক্ষ্মীদেবী করে এত রোষ? ॥ ১২৬ ॥

অতএব—चूँकि; **কৃষ্ণের**—भगवान् कृष्ण के; **প্রাকট্যে**—ऐसे प्रदर्शन से; **নাহি**—नहीं; **কিছু**—कुछ; **দোষ**—दोष; **তবে**—अतः; **কেনে**—क्यों; **লক্ষ্মী-দেবী**—लक्ष्मी देवी; **করে**—करे; **এত**—इतना; **রোষ**—क्रोध।

अनुवाद

"चूँकि कृष्ण की लीलाओं में कोई दोष नहीं है, तो फिर लक्ष्मीजी क्यों रुष्ट होती हैं?"

স্বরূপ কহে,—প্রেমবতীর এই ত' স্বভাব ।
কান্তের ঔদাস্য-লেশে হয় ক্রোধ-ভাব ॥ ১২৭॥

स्वरूप कहे,—प्रेमवतीर एइ त' स्वभाव ।
कान्तेर औदास्य-लेशे हय क्रोध-भाव ॥ १२७॥

स्वरूप कहे—स्वरूप दामोदर ने उत्तर दिया; **प्रेम-वतीर**—उस लड़की का, जो प्रेम से अत्यन्त पीड़ित है; **एइ**—यह; **त'**—निस्सन्देह; **स्वभाव**—स्वभाव; **कान्तेर**—प्रिय की; **औदास्य**—उदासीनता से; **लेशे**—लेश मात्र भी; **हय**—होता है; **क्रोध-भाव**—क्रोध।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर ने उत्तर दिया, "प्रेम-पीड़ित युवती का स्वभाव है कि वह अपने प्रेमी से उपेक्षित होने पर तुरन्त क्रुद्ध हो जाती है।"

হেন-কালে, খচিত যাহে বিবিধ রতন ।
সুবর্ণের চৌদোলা করি' আরোহণ ॥ ১২৮॥

हेन-काले, खचित याहे विविध रतन ।
सुवर्णेर चौदोला करि' आरोहण ॥ १२८॥

हेन-काले—जब स्वरूप दामोदर और भगवान् चैतन्य महाप्रभु वार्तालाप कर रहे थे; **खचित**—सजे हुए थे; **याहे**—जिस पर; **विविध**—विभिन्न; **रतन**—रत्न; **सुवर्णेर**—सोने के; **चौदोला**—चार पुरुषों द्वारा उठाई पालकी पर; **करि' आरोहण**—चढ़कर।

अनुवाद

जब स्वरूप दामोदर तथा श्री चैतन्य महाप्रभु इस प्रकार बातें कर रहे थे, तो लक्ष्मीजी का जुलूस निकट आ गया। वे सोने की पालकी में सवार थीं, जिसे चार आदमी ले जा रहे थे और पालकी तरह-तरह के रत्नों से सजी हुई थी।

ছত্র-চামর-ধ্বজা পতাকার গণ ।
নানা-বাদ্য-আগে নাচে দেব-দাসী-গণ ॥ ১২৯॥

ছত্র-চামর-ধ্বজা পতাকার গণ ।
নানা-বাদ্য-আগে নাচে দেব-দাসী-গণ ॥ ১২৯॥

ছত্র—छत्रों की; **চামর**—चामरों की; **ধ্বজা**—और ध्वजाओं की; **পতাকার**—और बड़े झण्डों की; **গণ**—समूह; **নানা-বাদ্য**—नाना प्रकार के वाद्ययंत्र; **আগে**—आगे; **নাচে**—नाचती थी; **দেব-দাসী-গণ**—देव दासियाँ।

अनुवाद

पालकी के चारों ओर लोग छत्र, चामर तथा झंडे-झंडियाँ लिए हुए थे और इनके आगे-आगे गवैये तथा नर्तकियाँ थीं।

তাম্বূল-সম্পুট, ঝারি, ব্যজন, চামর ।
সাথে দাসী শত, হার দিব্য ভূষাম্বর ॥ ১৩০॥

তাম্বূল-সম্পুট, ঝারি, ব্যজন, চামর ।
সাথে দাসী শত, হার দিব্য ভূষাম্বর ॥ ১৩০॥

তাম্বূল-সম্পুট—पान बनाने की सामग्री से भरे बक्से; **ঝারি**—जल-पात्र (घड़े); **ব্যজন**—पंखे; **চামর**—चामर; **সাথে**—साथ में; **দাসী**—दासियाँ; **শত**—सैंकड़ों; **হার**—हार; **মালাएँ**; **দিব্য**—अमूल्य; **ভূষাম্বর**—पोशाकें।

अनुवाद

दासियाँ जल के घड़े, चामर तथा पान की पिटारियाँ लिए थीं। ऐसी सैंकड़ों दासियाँ थीं और वे सभी आकर्षक वस्त्र धारण किये थीं और बहुमूल्य हार पहने थीं।

অলৌকিক ঐশ্বর্য সঙ্গে বহু-পরিবার ।
ক্রুদ্ধ হঞা লক্ষ্মীদেবী আইলা সিংহ-দ্বার ॥ ১৩১॥

অলৌকিক ঐশ্বর্য্য সঙ্গে বহু-পরিবার ।
ক্রুদ্ধ হঞা লক্ষ্মীদেবী আইলা সিংহ-দ্বার ॥ ১৩১॥

অলৌকিক—अलौकिक; **ঐশ্বর্য্য**—ऐश्वर्य; **সঙ্গে**—के साथ; **বহু-পরিবার**—परिवार के

बहुत से सदस्य; **क्रुद्ध हञा**—क्रुद्ध होकर; **लक्ष्मी-देवी**—लक्ष्मी देवी; **आइला**—पहुँच गये; **सिंह-द्वार**—मन्दिर के मुख्य द्वार पर।

अनुवाद

लक्ष्मीजी क्रुद्ध मुद्रा में मन्दिर के मुख्य द्वार पर आ पहुँचीं। उनके साथ उनके परिवार के अनेक सदस्य थे और वे सभी असाधारण ऐश्वर्य का प्रदर्शन कर रहे थे।

জগন্নাথের মুখ্য মুখ্য যত ভৃত্য-গণে ।
লক্ষ্মীদেবীর দাসী-গণ করেন বন্ধনে ॥১৩২॥

জগন্নাথের মুখ্য মুখ্য যত ভৃত্য-গণে ।
লক্ষ্মীদেবীর দাসী-গণ করেন বন্ধনে ॥ ১৩২ ॥

জগন্নাথের—भगवान् जगन्नाथ के; **মুখ্য মুখ্য**—मुख्य; **যত**—सब; **ভৃত্য-গণে**—सेवकगण; **লক্ষ্মী-দেবীর**—लक्ष्मी देवी की; **দাসী-গণ**—दासियों ने; **করেন বন্ধনে**—कैद कर लिए।

अनुवाद

जब जुलूस आ गया, तो लक्ष्मीजी की सारी दासियाँ भगवान् जगन्नाथ के सारे प्रधान सेवकों को बन्दी बनाने लगीं।

বান্ধিয়া আনিয়া পাড়ে লক্ষ্মীর চরণে ।
চোরে যেন দণ্ড করি' লয় নানা-ধনে ॥১৩৩॥

বান্ধিয়া আনিয়া পাড়ে লক্ষ্মীর চরণে ।
চোরে যেন দণ্ড করি' লয় নানা-ধনে ॥ ১৩৩ ॥

বান্ধিয়া—कैद करने के बाद; **আনিয়া**—लाकर; **পাড়ে**—गिरा दिया; **লক্ষ্মীর চরণে**—लक्ष्मी देवी के चरणकमलों पर ; **চোরে**—एक चोर; **যেন**—जैसे; **দণ্ড করি'**—सजा दिये जाने पर; **লয়**—ली जाता है; **নানা-ধনে**—उनकी सारी सम्पत्ति।

अनुवाद

दासियों ने जगन्नाथजी के सेवकों को बाँधकर उन्हें हथकड़ियाँ लगा दीं और उन्हें लाकर लक्ष्मीजी के चरणकमलों पर गिरने के लिए बाध्य किया। वे सभी धन लूटने वाले चोरों की तरह बन्दी बना लिए गये।

तात्पर्य

जब भगवान् जगन्नाथ अपनी रथयात्रा प्रारम्भ करते हैं, तब वे लक्ष्मीजी को आश्वासन देते हैं कि वे अगले दिन लौट आयेंगे। किन्तु जब वे नहीं लौटते, तो लक्ष्मीजी दो-तीन दिन प्रतीक्षा करने के बाद ऐसा अनुभव करने लगती हैं कि उनके पति ने उनकी उपेक्षा की है। अतएव वे स्वाभाविक रूप से काफी क्रुद्ध होती हैं। वे स्वयं तथा उनकी सखियाँ खूब सज-धजकर मन्दिर से बाहर आती हैं और मुख्य द्वार के सामने खड़ी हो जाती हैं। तब उनकी सखियाँ जगन्नाथजी के सारे प्रधान सेवकों को बन्दी बना लेती हैं और उन्हें लाकर जबरन लक्ष्मीजी के चरणकमलों के समक्ष नतमस्तक कराती हैं।

অচেতনবত্তারে করেন তাড়নে ।
নানা-মত গালি দেন ভণ্ড-বচনে ॥ ১৩৪ ॥

अचेतनवत्तारे करेन ताड़ने ।
नाना-मत गालि देन भण्ड-वचने ॥ १३४ ॥

अचेतन-वत्—लगभग अचेत; **तारे**—सेवकों को; **करेन**—दी; **ताड़ने**—सजा; **नाना-मत**—नाना प्रकार की; **गालि**—गालियाँ; **देन**—दी गईं; **भण्ड-वचने**—कई कटु (अपशब्द) कहे गये।

अनुवाद

जब नौकर लक्ष्मी के चरणकमलों पर गिरे, तो वे लगभग अचेत हो गये। उन्हें डाँटा-डपटा गया और भद्दी-भद्दी गालियाँ दी गईं तथा मजाक के पात्र बनाये गये।

লক্ষ্মী-সঙ্গে দাসী-গণের প্রাগল্ভ্য দেখিয়া ।
হাসে মহাপ্রভুর গণ মুখে হস্ত দিয়া ॥ ১৩৫ ॥

लक्ष्मी-सङ्गे दासी-गणेर प्रागल्भ्य देखिया ।
हासे महाप्रभुर गण मुखे हस्त दिया ॥ १३५ ॥

लक्ष्मी-सङ्गे—लक्ष्मी देवी की संगति में; **दासी-गणेर**—दासियों का; **प्रागल्भ्य**—दुर्व्यवहार; **देखिया**—देखकर; **हासे**—हँसने लगे; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **गण**—साथियों ने; **मुखे**—अपने मुखों को; **हस्त**—हाथों से; **दिया**—ढक लिया।

अनुवाद

जब महाप्रभु के संगियों ने लक्ष्मीजी की दासियों की ऐसी धृष्टता देखी, तो उन्होंने अपने हाथों से अपना मुख ढक लिया और वे हँसने लगे।

दामोदर कहे,——ऐछे मानेर प्रकार ।
त्रिजगते काहाँ नाहि देखि शुनि आर ॥ १३६ ॥

दामोदर कहे,——ऐछे मानेर प्रकार ।
त्रिजगते काहाँ नाहि देखि शुनि आर ॥ १३६ ॥

दामोदर कहे—स्वरूप दामोदर गोस्वामी ने कहा; **ऐछे**—ऐसे; **मानेर**—घमण्ड का; **प्रकार**—प्रकार; **त्रि-जगते**—तीनों भुवनों में; **काहाँ**—नहीं भी; **नाहि**—नहीं; **देखि**—मैं देखता हूँ; **शुनि**—मैं सुनता हूँ; **आर**—अथवा।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर ने कहा, "तीनों लोकों में इस तरह का अहंकार नहीं है। कम-से-कम मैंने न तो देखा है, न सुना है।

मानिनी निरुत्साहे छाड़े विभूषण ।
भूमे वसि' नखे लेखे, मलिन-वदन ॥ १३७ ॥

मानिनी निरुत्साहे छाड़े विभूषण ।
भूमे वसि' नखे लेखे, मलिन-वदन ॥ १३७ ॥

मानिनी—गर्वीली स्त्री; **निरुत्साहे**—मायूसी के कारण; **छाड़े**—त्याग देती है; **विभूषण**—सभी प्रकार के आभूषण; **भूमे वसि'**—पृथ्वी पर बैठकर; **नखे**—नाखूनों से; **लेखे**—लकीरें खींचती है; **मलिन-वदन**—उदास चेहरे से।

अनुवाद

"जब कोई स्त्री उपेक्षित और निराश हो जाती है, तो अहंकार (मान) वश वह अपने आभूषण उतारकर खिन्न होकर फर्श पर बैठ जाती है और अपने नाखूनों से फर्श पर रेखाएँ खींचती है।

पूर्वे सत्यभामार शुनि एवं-विध मान ।
ब्रजे गोपी-गणेर मान——रसेर निधान ॥ १३८ ॥

पूर्वे सत्यभामार शुनि एवं-विध मान ।
व्रजे गोपी-गणेर मान——रसेर निधान ॥ १३८ ॥

पूर्वे—पहले; **सत्यभामार**—रानी सत्यभामा का; **शुनि**—मैं सुनता हूँ; **एवं-विध मान**—इस प्रकार का गर्व; **व्रजे**—वृन्दावन में; **गोपी-गणेर**—गोपियों का; **मान**—मान; **रसेर निधान**—सभी दिव्य रसों का भण्डार।

अनुवाद

"मैंने इस प्रकार का गर्व (मान) कृष्ण की सबसे गर्वीली महारानी सत्यभामा में सुना है। मैंने समस्त दिव्य रसों की खान समान वृन्दावन की गोपियों में भी ऐसा मान सुना है।

ईंहो निज-सम्पत्ति सब प्रकट करिया ।
प्रियेर उपर याय सैन्य साजाञा ॥ १३९ ॥
इँहो निज-सम्पत्ति सब प्रकट करिया ।
प्रियेर उपर याय सैन्य साजाञा ॥ १३९ ॥

इँहो—यह; **निज-सम्पत्ति**—अपना निजी ऐश्वर्य; **सब**—सब; **प्रकट करिया**—प्रकट किया; **प्रियेर उपर**—अपने प्रिय पति के विरुद्ध; **याय**—गईं; **सैन्य साजाञा**—सिपाहियों के साथ।

अनुवाद

"किन्तु लक्ष्मीजी के किस्से में मैं अन्य प्रकार का मान देख रहा हूँ। वे अपना ऐश्वर्य प्रदर्शित करती हैं, यहाँ तक कि अपने पति पर आक्रमण करने के लिए अपने सैनिकों के साथ जाती हैं।"

तात्पर्य

लक्ष्मीजी की धृष्टता को देखकर स्वरूप दामोदर गोसांइ ने महाप्रभु से गोपियों के प्रेम-व्यापार की उत्कृष्टता बतानी चाही। अतएव उन्होंने कहा, "हे प्रभु, मुझे कभी भी लक्ष्मीजी के आचरण जैसी किसी वस्तु का अनुभव नहीं हुआ। हम कभी-कभी यह तो देखते हैं कि प्रियतमा पत्नी को अपने पद का गर्व होता है और उपेक्षा के कारण वह असन्तुष्ट होती है। तब उसे अपनी सूरत की परवाह नहीं रह जाती, वह गन्दे वस्त्र पहनती है और खिन्न भाव से फर्श

पर बैठकर अपने नाखूनों से रेखाएँ खींचती रहती है। हमने इस तरह का मान सत्यभामा तथा वृन्दावन की गोपियों में तो सुना है, किन्तु जगन्नाथ पुरी में लक्ष्मीजी के साथ हम कुछ दूसरी ही बात पाते हैं। वे अपने पति पर अत्यधिक क्रुद्ध होती हैं और अपने महान् ऐश्वर्य से उन पर आक्रमण करती हैं।"

प्रभु कहे,—कह ब्रजेर मानेर प्रकार ।
स्वरूप कहे,—गोपी-मान-नदी शत-धार ॥ १४० ॥

प्रभु कहे,—कह व्रजेर मानेर प्रकार ।
स्वरूप कहे,—गोपी-मान-नदी शत-धार ॥ १४० ॥

प्रभु कहे—महाप्रभु ने कहा; **कह**—कृपया बताओ; **व्रजेर**—वृन्दावन के; **मानेर**—गर्व के; **प्रकार**—प्रकार; **स्वरूप कहे**—स्वरूप दामोदर ने उत्तर दिया; **गोपी-मान**—गोपियों का मान; **नदी**—नदी की तरह; **शत-धार**—सौ धाराओं के साथ बहने वाली।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "कृपया वृन्दावन में प्रकट होने वाले समस्त प्रकार के मानों का वर्णन कीजिये।" स्वरूप दामोदर ने उत्तर दिया, "गोपियों का मान सैंकड़ों धाराओं के साथ बहने वाली नदी के समान है।

नायिकार स्वभाव, प्रेम-वृत्ते बहु भेद ।
सेइ भेदे नाना-प्रकार मानेर उद्भेद ॥ १४१ ॥

नायिकार स्वभाव, प्रेम-वृत्ते बहु भेद ।
सेइ भेदे नाना-प्रकार मानेर उद्भेद ॥ १४१ ॥

नायिकार—नायिका का; **स्वभाव**—स्वभाव; **प्रेम-वृत्ते**—प्रेमाचार में; **बहु**—कई; **भेद**—प्रकार; **सेइ**—उस; **भेदे**—हर प्रकार में; **नाना-प्रकार**—कई प्रकारों; **मानेर**—महिला के द्वेषपूर्ण क्रोध में; **उद्भेद**—ऐसे उप-भेद।

अनुवाद

"विभिन्न स्त्रियों (नायिकाओं) में प्रेम के गुण तथा स्वभाव भिन्न भिन्न होते हैं। उनके ईर्ष्यायुक्त क्रोध के भी अनेक भेद तथा गुण होते हैं।

সম্যক্গোপিকার মান না যায় কথন ।
এক-দুই-ভেদে করি দিগ্দরশন ॥ ১৪২॥

সম্যক্গোপিকার মান না য়ায় কথন ।
এক-দুই-ভেদে করি দিগ্দরশন ॥ ১৪২॥

সম্যক্—পূর্णतया; **গোপিকার**—গোপियों का; **মান**—द्वेषपूर्ण क्रोध; **না**—नहीं; **য়ায়**—सम्भव है; **কথন**—कहने के लिए; **এক-দুই**—एक दो; **ভেদে**—विभिन्न प्रकारों में; **করি**—मैं करता हूँ; **দিক্-দরশন**—संकेत।

अनुवाद

"गोपियों द्वारा प्रदर्शित विविध प्रकार के ईर्ष्यायुक्त क्रोध का पूरा वर्णन कर पाना सम्भव नहीं है, किन्तु कुछ सिद्धान्तों से संकेत मिल जायेगा।

মানে কেহ হয় 'ধীরা', কেহ ত' 'অধীরা' ।
এই তিন-ভেদে, কেহ হয় 'ধীরাধীরা' ॥ ১৪৩॥

মানে কেহ হয় 'ধীরা', কেহ ত' 'অধীরা' ।
এই তিন-ভেদে, কেহ হয় 'ধীরাধীরা' ॥ ১৪৩॥

মানে—द्वेषपूर्ण क्रोध के स्तर पर; **কেহ**—कुछ महिलाएँ; **হয় ধীরা**—अत्यन्त धीर होती हैं; **কেহ ত'**—और उनमें से कुछ; **অধীরা**—अधीर होती हैं; **এই তিন-ভেদে**—और तीसरा प्रकार भी है; **কেহ হয়**—कुछ होती हैं; **ধীরা-অধীরা**—धीर-अधीर ।

अनुवाद

"द्वेषपूर्ण क्रोध से युक्त नायिकाओं के तीन भेद हैं—धीर, अधीर तथा धीराधीरा।

'ধীরা' কান্তে দূরে দেখি' করে প্রত্যুত্থান ।
নিকটে আসিলে, করে আসন প্রদান ॥ ১৪৪॥

'ধীরা' কান্তে দূরে দেখি' করে প্রত্যুত্থান ।
নিকটে আসিলে, করে আসন প্রদান ॥ ১৪৪॥

ধীরা—धीर; **কান্তে**—नायक; **দূরে**—दूर से ही; **দেখি'**—देखकर; **করে প্রত্যুত্থান**—खड़ी

हो जाती है; **निकटे आसिले**—जब नायक निकट आता है; **करे**—करती है; **आसन**—आसन; **प्रदान**—पेश करती है।

अनुवाद

"जब धीर नायिका दूर से ही अपने नायक को आते देख लेती है, तो उसके स्वागत के लिए वह तुरन्त उठ खड़ी होती है। जब वह निकट आ जाता है, तो वह तुरन्त उसे बैठने के लिए आसन देती है।

हृदये कोप, मुखे कहे मधुर वचन ।
प्रिय आलिङ्गिते, तारे करे आलिङ्गन ॥ १४५॥

हृदये कोप, मुखे कहे मधुर वचन ।
प्रिय आलिङ्गिते, तारे करे आलिङ्गन ॥ १४५॥

हृदये—हृदय में; **कोप**—क्रोध; **मुखे**—मुख में; **कहे**—कहती है; **मधुर**—मधुर; **वचन**—वचन; **प्रिय**—प्रिय; **आलिङ्गिते**—आलिंगन करने पर; **तारे**—उसको; **करे आलिङ्गन**—आलिंगन करती है।

अनुवाद

"धीरा नायिका अपने क्रोध को अपने हृदय में छिपा लेती है और बाहर से मीठी बोली बोलती है। जब उसका प्रेमी उसको आलिंगन करता है, तो वह भी उसे आलिंगन करती है।

सरल व्यवहार, करे मानेर पोषण ।
किम्वा सोल्लुण्ठ-वाक्ये करे प्रिय-निरसन ॥ १४६॥

सरल व्यवहार, करे मानेर पोषण ।
किम्वा सोल्लुण्ठ-वाक्ये करे प्रिय-निरसन ॥ १४६॥

सरल व्यवहार—सरल व्यवहार; **करे**—करती है; **मानेर**—द्वेषपूर्ण क्रोध का; **पोषण**—पोषण; **किम्वा**—अथवा; **सोल्लुण्ठ**—थोड़ा हँसकर; **वाक्ये**—शब्दों से; **करे**—करती है; **प्रिय**—प्रेमी की; **निरसन**—अवहेलना।

अनुवाद

"धीरा नायिका का व्यवहार अत्यन्त सरल होता है। वह अपने मान

को अपने हृदय के भीतर रखती है, किन्तु मृदु वचनों तथा मुसकानों से वह अपने प्रेमी के आचरण का प्रतिवाद करती है।

'अधीरा' निष्ठुर-वाक्যে করয়ে ভৎর্সন ।
কর্ণোৎপলে তাড়ে, করে মালায় বন্ধন ॥ ১৪৭ ॥

'अधीरा' निष्ठुर-वाक्ये करये भर्त्सन ।
कर्णोत्पले ताड़े, करे मालाय बन्धन ॥ १४७ ॥

अधीरा—अधीर नायिका; **निष्ठुर-वाक्ये**—निष्ठुर शब्दों से; **करये**—करती है; **भर्त्सन**—भर्त्सना; **कर्ण-उत्पले ताड़े**—कान खींचकर; **करे**—करती है; **मालाय**—माला से; **बन्धन**—बन्धन।

अनुवाद

"किन्तु अधीर नायिका कभी-कभी अपने प्रेमी की भर्त्सना कटु शब्दों से करती है, कभी-कभी उसके कान खींच लेती है और कभी-कभी फूल की माला से उसे बाँध देती है।

'धীরাধীরা' বক্র-বাক্যে করে উপহাস ।
কভু স্তুতি, কভু নিন্দা, কভু বা উদাস ॥ ১৪৮ ॥

'धीराधीरा' वक्र-वाक्ये करे उपहास ।
कभु स्तुति, कभु निन्दा, कभु वा उदास ॥ १४८ ॥

धीरा-अधीरा—धीर-अधीर नायिका; **वक्र-वाक्ये करे उपहास**—द्विअर्थी शब्दों में उपहास करती है; **कभु स्तुति**—कभी प्रशंसा; **कभु निन्दा**—कभी निन्दा; **कभु वा उदास**—कभी मिला जुला व्यवहार।

अनुवाद

"धीर तथा अधीर स्वभाव वाली नायिका सदैव द्विअर्थी शब्दों से मजाक उड़ाती है। कभी वह अपने प्रेमी की प्रशंसा करती है, कभी निन्दा करती है और कभी निरपेक्ष रहती है।

'মুগ্ধা', 'মধ্যা', 'প্রগল্ভা',—তিন নায়িকার ভেদ ।
'মুগ্ধা' নাহি জানে মানের বৈদগ্ধ্য-বিভেদ ॥ ১৪৯ ॥

'मुग्धा', 'मध्या', 'प्रगल्भा',—तिन नायिकार भेद ।
'मुग्धा' नाहि जाने मानेर वैदग्ध्य-विभेद ॥ १४९ ॥

मुग्धा—'मुग्ध'; **मध्या**—'मध्य'; **प्रगल्भा**—प्रगल्भ; **तिन**—तीन; **नायिकार**—नायिकाओं में; **भेद**—भेद; **मुग्धा**—मुग्ध; **नाहि जाने**—नहीं जानती; **मानेर**—द्वेषपूर्ण क्रोध का; **वैदग्ध्य-विभेद**—छलपूर्ण व्यवहार की बारीकियाँ।

अनुवाद

"नायिकाओं का वर्गीकरण मुग्धा, मध्या तथा प्रगल्भा के रूप में भी किया जा सकता है। मुग्धा नायिका द्वेषपूर्ण क्रोध के छलपूर्ण व्यवहार की बारीकियों के विषय में अधिक नहीं जानती रहती।

मुख आच्छादिया करे केवल रोदन ।
कान्तेर प्रिय-वाक्य शुनि' हय परसन्न ॥ १५० ॥
मुख आच्छादिया करे केवल रोदन ।
कान्तेर प्रिय-वाक्य शुनि' हय परसन्न ॥ १५० ॥

मुख आच्छादिया—मुख को ढककर; **करे**—करती है; **केवल**—केवल; **रोदन**—रोना; **कान्तेर**—प्रेमी के; **प्रिय-वाक्य**—प्रिय शब्द; **शुनि'**—सुनकर; **हय**—हो जाती है; **परसन्न**—सन्तुष्ट।

अनुवाद

"मुग्धा नायिका केवल अपना मुँह ढककर रोती रहती है। जब वह अपने प्रेमी से मधुर शब्द सुनती है, तो अत्यन्त प्रसन्न हो उठती है।

'मध्या' 'प्रगल्भा' धरे धीरादि-विभेद ।
तार मध्ये सबार स्वभावे तिन भेद ॥ १५१ ॥
'मध्या' 'प्रगल्भा' धरे धीरादि-विभेद ।
तार मध्ये सबार स्वभावे तिन भेद ॥ १५१ ॥

मध्या—'मध्य' श्रेणी की; **प्रगल्भा**—'प्रगल्भ' श्रेणी की; **धरे**—होती हैं; **धीरा-आदि-विभेद**—'धीर,' 'अधीर' और 'धीर-अधीर' की तीन श्रेणियाँ; **तार मध्ये**—उनमें से ; **सबार**—उन सबके; **स्वभावे**—स्वभाव में; **तिन भेद**—तीन प्रकार हैं।

अनुवाद

"मध्या तथा प्रगल्भा नायिकाओं को धीर, अधीर तथा धीराधीर में विभाजित की जा सकती हैं। इन सबके गुणों के और तीन विभाग किये जा सकते हैं।

केह 'प्रखरा', केह 'मृदु', केह हय 'समा' ।
स्व-स्वभावे कृष्णेर बाड़ाय प्रेम-सीमा ॥ १५२॥

केह 'प्रखरा', केह 'मृदु', केह हय 'समा' ।
स्व-स्वभावे कृष्णेर बाड़ाय प्रेम-सीमा ॥ १५२॥

केह—कुछ; **प्रखरा**—बहुत बातूनी; **केह**—कुछ; **मृदु**—बहुत मृदु; **केह हय**—उनमें से कुछ हैं; **समा**—समभाव; **स्व-स्वभावे**—अपने निजी स्वभाव से; **कृष्णेर**—भगवान् कृष्ण के; **बाड़ाय**—बढ़ाती है; **प्रेम-सीमा**—प्रेम की सीमा।

अनुवाद

"इनमें से कुछ अत्यधिक बातूनी, कुछ मृदु तथा कुछ संतुलित होती हैं। हर नायिका अपने स्वभाव के अनुसार श्रीकृष्ण के प्रेमभाव को बढ़ाती है।

प्राखर्य, मार्दव, साम्य स्वभाव निर्दोष ।
सेई सेई स्वभावे कृष्णे कराय सन्तोष ॥ १५३॥

प्राखर्य, मार्दव, साम्य स्वभाव निर्दोष ।
सेइ सेइ स्वभावे कृष्णे कराय सन्तोष ॥ १५३॥

प्राखर्य—बातूनी; **मार्दव**—मृदुता; **साम्य**—समभाव होकर; **स्वभाव**—स्वभाव; **निर्दोष**—निर्दोष; **सेइ सेइ स्वभावे**—उन दिव्य गुणों में; **कृष्णे**—भगवान् कृष्ण को; **कराय**—कराती है; **सन्तोष**—सन्तोष।

अनुवाद

"यद्यपि कुछ गोपियाँ बातूनी, कुछ मृदु तथा कुछ संतुलित हैं, किन्तु वे सभी दिव्य तथा निर्दोष हैं। वे अपने विशिष्ट गुणों द्वारा कृष्ण को प्रसन्न करती हैं।"

এ-কথা শুনিয়া প্রভুর আনন্দ অপার ।
'কহ, কহ, দামোদর',—বলে বার বার ॥ ১৫৪॥

এ-কথা শুনিয়া প্রভুর আনন্দ অপার ।
'কহ, কহ, দামোদর',—বলে বার বার ॥ ১৫৪॥

এ-কথা শুনিয়া—यह वर्णन सुनकर; **প্রভুর**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **আনন্দ অপার**—अपार आनन्द; **কহ কহ**—कृपया कहते रहिए; **দামোদর**—मेरे प्रिय दामोदर; **বলে বার বার**—उन्होंने बारम्बार कहा।

अनुवाद

यह विवरण सुनकर महाप्रभु को असीम आनन्द का अनुभव हुआ। उन्होंने स्वरूप दामोदर से आगे कहते रहने के लिए बारम्बार प्रार्थना की।

দামোদর কহে,—কৃষ্ণ রসিক-শেখর ।
রস-আস্বাদক, রসময়-কলেবর ॥ ১৫৫॥

দামোদর কহে,—কৃষ্ণ রসিক-শেখর ।
রস-আস্বাদক, রসময়-কলেবর ॥ ১৫৫॥

দামোদর কহে—दामोदर ने कहा; **কৃষ্ণ**—भगवान् कृष्ण; **রসিক-শেখর**—दिव्य रसों के स्वामी; **রস-আস্বাদক**—दिव्य रसों के भोक्ता; **রস-ময়-কলেবর**—जिनका शरीर सभी दिव्य आनन्द से निर्मित है।

अनुवाद

दामोदर गोस्वामी ने कहा, "कृष्ण समस्त दिव्य रसों के स्वामी हैं। वे सभी दिव्य रसों का आस्वादन करने वाले हैं और उनका शरीर दिव्य आनन्द से बना हुआ है।

প্রেমময়-বপু কৃষ্ণ ভক্ত-প্রেমাধীন ।
শুদ্ধ-প্রেমে, রস-গুণে, গোপিকা—প্রবীণ ॥ ১৫৬॥

প্রেমময়-বপু কৃষ্ণ ভক্ত-প্রেমাধীন ।
শুদ্ধ-প্রেমে, রস-গুণে, গোপিকা—প্রবীণ ॥ ১৫৬॥

প্রেম-ময়-বপু—प्रेममय शरीर; **কৃষ্ণ**—भगवान् कृष्ण; **ভক্ত-প্রেম-অধীন**—अपने भक्तों

की प्रेममयी भावनाओं के सदा अधीन; **शुद्ध-प्रेमे**—शुद्ध दिव्य प्रेम में; **रस-गुणे**—दिव्य रस के गुणों में; **गोपिका**—गोपिकाएँ; **प्रवीण**—अत्यन्त अनुभवी।

अनुवाद

"कृष्ण प्रेममय हैं और सदैव अपने भक्त के प्रेम के अधीन रहते हैं। गोपियाँ शुद्ध प्रेम में तथा दिव्य रसों के आचार-व्यवहार में अत्यन्त अनुभवी हैं।

गोपिकार प्रेमे नाहि रसाभास-दोष ।
अतएव कृष्णेर करे परम सन्तोष ॥ १५७॥

गोपिकार प्रेमे नाहि रसाभास-दोष ।
अतएव कृष्णेर करे परम सन्तोष ॥ १५७॥

गोपिकार—गोपिकाओं के; **प्रेमे**—प्रेम-व्यापार में; **नाहि**—नहीं है; **रस-आभास**—रस का आभास; **दोष**—दोष; **अतएव**—अतएव; **कृष्णेर**—भगवान् कृष्ण को; **करे**—वे करती हैं; **परम सन्तोष**—परम सन्तोष।

अनुवाद

"गोपियों के प्रेम में कोई दोष या मिलावट नहीं है, अतएव वे कृष्ण को परम सन्तोष प्रदान करती हैं।

तात्पर्य

जब कृष्ण के साथ किसी का सम्बन्ध दूषित होता है, तब वह *रसाभास* कहलाता है। रसाभास की विभिन्न किस्में हैं—प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय श्रेणी। *रसाभास* दो शब्दों से बना है—रस तथा आभास—अर्थात् रस की छाया। यदि कोई व्यक्ति किसी एक रस का आस्वादन करता हो और यदि उस पर कुछ दूसरा रस आरोपित कर दिया जाए, तो उसे *उपरस* कहते हैं। यदि मूल रस से कुछ निकाला जाए, तो उसे *अनुरस* कहते हैं। यदि मूल रस से काफी भिन्न किसी वस्तु की प्रशंसा की जाती है, तो उसे *अपरस* कहते हैं। उपरस, अनुरस तथा अपरस क्रमशः प्रथम (उत्तम), द्वितीय (मध्यम) तथा तृतीय (कनिष्ठ) रसाभास कहलाते हैं। *भक्तिरसामृतसिंधु* (४.९.१-२) में कहा गया है :

पूर्वमेवानुशिष्टेन विकला रसलक्षणा
रसा एव रसाभासा रसज्ञैरनुकीर्तिताः।

स्युस्त्रिधोपरसाश्चानुरसाश्चापरसाश्च ते
उत्तमा, मध्यमाः प्रोक्ताः कनिष्ठाश्चेत्यमी क्रमात्॥

एवं शशाङ्कांशु-विराजिता निशाः
स सत्य-कामोऽनुरताबला-गणः ।
सिषेव आत्मन्यवरुद्ध-सौरतः
सर्वाः शरत्काव्य-कथा-रसाश्रयाः ॥ १५८॥

एवं शशङ्कांशु-विराजिता निशाः
स सत्य-कामोऽनुरताबला-गणः ।
सिषेव आत्मन्यवरुद्ध-सौरतः
सर्वाः शरत्काव्य-कथा-रसाश्रयाः ॥ १५८॥

एवम्—इस प्रकार; **शशङ्क-अंशु**—चाँदनी की किरणों में; **विराजिताः**—सुन्दर तरीके से; **निशाः**—रातें; **सः**—वे; **सत्य-कामः**—परम सत्य; **अनुरत**—जिनकी ओर आकर्षित हैं; **अबला-गणः**—गोपियाँ; **सिषेव**—किया; **आत्मनि**—स्वयं में; **अवरुद्ध-सौरतः**—उनकी दिव्य कामभावनाएँ अवरुद्ध हुईं; **सर्वाः**—सभी; **शरत्**—शरद ऋतु में; **काव्य**—काव्य; **कथा**—वाणी; **रस-आश्रयाः**—दिव्य रसों से पूर्ण।

अनुवाद

"'परम सत्य भगवान् श्रीकृष्ण शरद ऋतु में प्रत्येक रात रासनृत्य का आनन्द लेते रहे। वे चाँदनी रात में पूर्ण दिव्य रस से युक्त होकर यह नृत्य करते रहे। वे कवित्वपूर्ण शब्दों का प्रयोग करते थे और उन स्त्रियों से घिरे रहते थे, जो उनके प्रति अत्यन्त आकृष्ट थीं।'

तात्पर्य

यह श्लोक *श्रीमद्भागवत* (१०.३३.२५) का है। सारी गोपियाँ दिव्य आत्माएँ हैं। ऐसा कभी नहीं सोचना चाहिए कि गोपियों तथा कृष्ण के शरीर भौतिक हैं। वृन्दावन धाम भी आध्यात्मिक धाम है और वहाँ के दिन-रात, वृक्ष, फूल, जल तथा हर वस्तु आध्यात्मिक है। उनमें रंचमात्र भी भौतिक कल्मष नहीं होता। परम ब्रह्म तथा परमात्मा स्वरूप कृष्ण किसी भी भौतिक वस्तु में रुचि नहीं लेते। गोपियों के साथ उनके सारे कार्यकलाप आध्यात्मिक हैं और आध्यात्मिक जगत् में घटित होते हैं। उन्हें भौतिक जगत् से कुछ भी लेना-

देना नहीं रहता। भगवान् कृष्ण की काम-इच्छाएँ तथा गोपियों के साथ उनके सारे व्यवहार आध्यात्मिक स्तर पर होते हैं। गोपियों के साथ कृष्ण की लीलाओं का रसास्वादन करने के विचार के पूर्व मनुष्य को दिव्य अनुभूति होनी चाहिए। जो व्यक्ति सांसारिक स्तर पर है, उसे सर्वप्रथम विधि-विधानों का पालन करके अपने आपको शुद्ध कर लेना चाहिए। केवल तभी उसे कृष्ण तथा गोपियों को समझने का प्रयास करना चाहिए। श्री चैतन्य महाप्रभु तथा स्वरूप दामोदर गोस्वामी यहाँ पर कृष्ण तथा गोपियों के पारस्परिक सम्बन्ध के विषय में बातें कर रहे हैं। अतएव वार्ता का विषय न तो भौतिक है, न कामवासना से भरा हुआ। संन्यासी होने के कारण श्री चैतन्य महाप्रभु स्त्रियों के साथ अपने आचार-व्यवहार में अत्यन्त कठोर थे। यदि गोपियाँ आध्यात्मिक स्तर पर न होतीं, तो श्री चैतन्य महाप्रभु कभी भी स्वरूप दामोदर गोस्वामी से उनका उल्लेख तक न करते। अतएव ये विवरण भौतिक कार्य से लेशमात्र भी सम्बन्धित नहीं हैं।

'वामा' एक गोपी-गण, 'दक्षिणा' एक गण ।
नाना-भावे कराय कृष्णे रस आस्वादन ॥ १५९॥

'वामा' एक गोपी-गण, 'दक्षिणा' एक गण ।
नाना-भावे कराय कृष्णे रस आस्वादन ॥ १५९॥

वामा—वाम पक्ष की; **एक**—एक; **गोपी-गण**—गोपियों की टोली; **दक्षिणा**—दक्षिण पक्ष की; **एक**—एक दूसरी; **गण**—गोपियों की टोली; **नाना-भावे**—विभिन्न प्रेमभावों में; **कराय**—कराती हैं; **कृष्णे**—कृष्ण को; **रस आस्वादन**—दिव्य रस का आस्वादन।

अनुवाद

"गोपियों दो वर्ग किये जा सकते हैं—वामा (वामपक्षी) तथा दक्षिणा (दक्षिणपक्षी)। दोनों ही वर्ग की गोपियाँ विभिन्न प्रकार के प्रेमभाव प्रकट करके कृष्ण को दिव्य रसों का आस्वादन कराती हैं।

गोपी-गण-मध्ये श्रेष्ठा राधा-ठाकुराणी ।
निर्मल-उज्ज्वल-रस-प्रेम-रत्न-खनि ॥ १६०॥

गोपी-गण-मध्ये श्रेष्ठा राधा-ठाकुराणी ।
निर्मल-उज्ज्वल-रस-प्रेम-रत्न-खनि ॥ १६०॥

गोपी-गण-मध्ये—सभी गोपियों में से; **श्रेष्ठा**—सर्वश्रेष्ठ; **राधा-ठाकुराणी**—श्रीमती राधारानी; **निर्मल**—निर्मल; **उज्ज्वल**—उज्ज्वल; **रस**—रस में; **प्रेम**—प्रेम की; **रत्न-खनि**—रत्न खान।

अनुवाद

"समस्त गोपियों में श्रीमती राधारानी प्रमुख हैं। वे प्रेमरूपी रत्न की खान हैं और समस्त शुद्ध दिव्य माधुर्य रस की स्त्रोत हैं।

वयसे 'मध्यमा' तेँहो स्वभावेते 'समा' ।
गाढ़ प्रेम-भावे तेँहो निरन्तर 'वामा' ॥१६१॥

वयसे 'मध्यमा' तेंहो स्वभावेते 'समा' ।
गाढ़ प्रेम-भावे तेंहो निरन्तर 'वामा' ॥ १६१ ॥

वयसे मध्यमा—वयस्क अवस्था; **तेंहो**—श्रीमती राधारानी की; **स्व-भावेते**—स्वभाव में; **समा**—संतुलित; **गाढ़**—गहरे; **प्रेम-भावे**—प्रेम भाव में; **तेंहो**—वे; **निरन्तर**—निरन्तर; **वामा**—वाम पक्ष की टोली की गोपियों की।

अनुवाद

"राधारानी वयस्क हैं और उनका चरित्र (स्वभाव) समदर्शी है। वे सदैव प्रगाढ़ प्रेम में निमग्न रहती हैं और निरन्तर वामपक्षी गोपीयों के भाव का अनुभव करती रहती हैं।

तात्पर्य

रूप गोस्वामी ने *उज्ज्वल नीलमणि* में *वामा* तथा *दक्षिणा* गोपियों की व्याख्या की है। *वामा* का वर्णन इस प्रकार हुआ है :

मनग्रहे सदोद्युक्ता तच्छैथिल्ये च कोपणा।
अभेद्या नायके प्रायः क्रूरा वामेति कीर्त्यते॥

"जो गोपी सदैव ईर्ष्यायुक्त क्रोध करने के लिए उत्सुक रहती है, जो उस पद को प्राप्त करने के लिए अत्यधिक इच्छुक रहती है, जो पराजित होने पर तुरन्त क्रुद्ध हो जाती है, जो कभी नायक के वश में नहीं रहती और जो सदैव उसका विरोध करती रहती है, वह वामा अर्थात् बायें पक्ष की गोपी कहलाती है।"

श्रील रूप गोस्वामी ने दक्षिणा गोपी का वर्णन इस प्रकार किया है :

असह्या माननिर्बन्धे नायके युक्तवादिनी।
साम्भिस्तेन भेद्या च दक्षिणा परिकीर्तिता॥

"जो गोपी स्त्रियोचित-क्रोध (मान) को सहन नहीं कर सकती, जो नायक से उपयुक्त वचन कहती है और उसके मीठे वचनों से तुष्ट रहती है, वह दक्षिणा अर्थात् दाहिने पक्ष की गोपी कहलाती है।"

वाम्य-स्वभावे मान उठे निरन्तर ।
तार मध्ये उठे कृष्णेर आनन्द-सागर ॥ १६२॥

वाम्य-स्वभावे मान उठे निरन्तर ।
तार मध्ये उठे कृष्णेर आनन्द-सागर ॥ १६२॥

वाम्य-स्वभावे—वाम स्वभाव की होने के कारण; **मान**—स्त्रियोचित क्रोध वाली; **उठे**—प्रकट होता है; **निरन्तर**—निरन्तर; **तार मध्ये**—उस व्यापार में; **उठे**—उठाती है; **कृष्णेर**—भगवान् कृष्ण का; **आनन्द-सागर**—दिव्य आनन्द का सागर।

अनुवाद

"वामा गोपी होने के कारण उनका स्त्रियोचित क्रोध सदैव जाग्रत होता रहता है, किन्तु कृष्ण को उनके कार्यकलापों से दिव्य आनन्द मिलता है।

अहेरिव गतिः प्रेम्णः स्वभाव-कुटिला भवेत् ।
अतो हेतोरहेतोश्च यूनोर्मान उदञ्चति ॥ १६३॥

अहेरिव गतिः प्रेम्णः स्वभाव-कुटिला भवेत् ।
अतो हेतोरहेतोश्च यूनोर्मान उदञ्चति ॥ १६३॥

अहेः—सर्प की; **इव**—भाँति; **गतिः**—गति; **प्रेम्णः**—प्रेम-व्यवहार की; **स्वभाव**—स्वभावतः; **कुटिला**—कुटिल; **भवेत्**—है; **अतः**—अतः; **हेतोः**—किसी कारण से; **अहेतोः**—बिना कारण; **च**—और; **यूनोः**—युवा युगल का; **मानः**—क्रोध; **उदञ्चति**—प्रकट होता है।

अनुवाद

"'तरुण-तरुणी के बीच प्रेम की प्रगति स्वभाव से साँप की गति के समान कुटिल होती है। इसलिए उनके बीच दो प्रकार का क्रोध उत्पन्न होता है—सकारण क्रोध तथा अकारण क्रोध।'"

तात्पर्य

यह उद्धरण श्रील रूप गोस्वामी कृत *उज्ज्वल-नीलमणि* (शृंगार भेद प्रकरण १०२) से है।

एत शुनि' बाड़े प्रभुर आनन्द-सागर ।
'कह, कह' कहे प्रभु, बले दामोदर ॥ १६४॥

एत शुनि' बाड़े प्रभुर आनन्द-सागर ।
'कह, कह' कहे प्रभु, बले दामोदर ॥ १६४॥

एत शुनि'—यह सुनकर; **बाड़े**—बढ़ गया; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **आनन्द-सागर**—दिव्य आनन्द का सागर; **कह कह**—बोलते चलो; **कहे प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **बले दामोदर**—दामोदर गोस्वामी उत्तर देते रहे।

अनुवाद

इन बातों को सुनकर महाप्रभु के दिव्य आनन्द का सागर बढ़ने लगा। अतएव उन्होंने स्वरूप दामोदर से कहा, "कहते चलो, कहते चलो।" तथा स्वरूप दामोदर आगे कहते रहे।

'अधिरूढ़ महाभाव'—राधिकार प्रेम ।
विशुद्ध, निर्मल, यैछे दश-वाण हेम ॥ १६५॥

'अधिरूढ़ महाभाव'—राधिकार प्रेम ।
विशुद्ध, निर्मल, यैछे दश-वाण हेम ॥ १६५॥

अधिरूढ़ महा-भाव—अति उन्नत प्रेम; **राधिकार प्रेम**—श्रीमती राधारानी का प्रेम-व्यापार; **विशुद्ध**—विशुद्ध; **निर्मल**—निर्मल; **यैछे**—जैसे; **दश-वाण**—दस बार शुद्ध किया हुआ; **हेम**—स्वर्ण।

अनुवाद

"श्रीमती राधारानी का प्रेम अत्यधिक उन्नत भाव (अधिरूढ़ महाभाव) है। उनके सारे व्यापार नितान्त शुद्ध तथा भौतिक कल्मष से रहित हैं। वस्तुतः उनके व्यापार सोने से भी दस गुना अधिक शुद्ध हैं।

কৃষ্ণের দর্শন যদি পায় আচম্বিতে ।
নানা-ভাব-বিভূষণে হয় বিভূষিতে ॥ ১৬৬॥

কৃষ্ণের দর্শন যদি পায় আচম্বিতে ।
নানা-ভাব-বিভূষণে হয় বিভূষিতে ॥ ১৬৬॥

কৃষ্ণের—भगवान् कृष्ण का; **দর্শন**—दर्शन; **যদি**—यदि; **পায়**—पाती है; **আচম্বিতে**—अचानक; **নানা**—नाना प्रकार के; **ভাব**—भाव; **বিভূষণে**—आभूषणों से; **হয়**—है; **বিভূষিতে**—सज जाता है।

अनुवाद

"जैसे ही राधारानी को कृष्ण का दर्शन करने का अवसर प्राप्त होता है, सहसा उनका शरीर विविध भावरूपी आभूषणों से अलंकृत हो जाता है।

অষ্ট 'সাত্ত্বিক', হর্ষাদি 'ব্যভিচারী' যাঁর ।
'সহজ প্রেম', বিংশতি 'ভাব'-অলঙ্কার ॥ ১৬৭॥

অষ্ট 'সাত্ত্বিক', হর্ষাদি 'ব্যভিচারী' যাঁর ।
'সহজ প্রেম', বিংশতি 'ভাব'-অলঙ্কার ॥ ১৬৭॥

অষ্ট—आठ; **সাত্ত্বিক**—सात्त्विक लक्षण; **হর্ষ-আদি**—हर्ष आदि; **ব্যভিচারী**—विशिष्ट लक्षण; **যাঁর**—जिनका; **সহজ প্রেম**—सहज प्रेम; **বিংশতি**—बीस; **ভাব**—भाव के; **অলঙ্কার**—अलंकार।

अनुवाद

"श्रीमती राधारानी के शरीर के दिव्य आभूषणों में आठ सात्त्विक या दिव्य भाव, हर्ष या आनन्दमय सहज प्रेम इत्यादि तैंतीस व्यभिचारी भाव तथा बीस भाव-अलंकार सम्मिलित हैं।"

तात्पर्य

तैंतीस व्यभिचारी भाव अर्थात् भावमय प्रेम में अभिव्यक्त होने वाले शारीरिक लक्षण निम्नवत् हैं—(१) निर्वेद (उपेक्षा); (२) विषाद; (३) दैन्य (दीनता); (४) ग्लानि (ऐसा सोचना कि मैंने कुछ गलती की है); (५) श्रम (थकान); (६) मद (उन्माद); (७) गर्व; (८) शंका; (९) त्रास (झटका);

(१०) आवेग (तीव्र आवेश); (११) उन्माद; (१२) अपस्मार (भूलना); (१३) व्याधि (रोग); (१४) मोह; (१५) मृति (मृत्यु); (१६) आलस्य; (१७) जाड्य (असमर्थता) (१८) व्रीडा (लज्जा); (१९) अवहित्था (छुपाव); (२०) स्मृति; (२१) वितर्क; (२२) चिन्ता; (२३) मति (ध्यान); (२४) धृति (सहनशीलता) (२५) हर्ष; (२६) औत्सुक्य (उत्सुकता); (२७) औग्रय (हिंसा); (२८) अमर्ष (क्रोध); (२९) असूया (ईर्ष्या); (३०) चापल्य (धृष्टता); (३१) निद्रा; (३२) सुप्ति (गहरी नींद) तथा (३३) प्रबोध (जाग्रति)।

'किल-किञ्चित', 'कुट्टमित', 'विलास', 'ललित' ।
'विब्बोक', 'मोट्टायित', आर 'मौग्ध्य', 'चकित' ॥ १६८॥

'किल-किञ्चित', 'कुट्टमित', 'विलास', 'ललित' ।
'विब्बोक', 'मोट्टायित', आर 'मौग्ध्य', 'चकित' ॥ १६८॥

किल-किञ्चित—कृष्ण को देखते समय जो एक विशेष प्रकार का भाव-आभूषण; **कुट्टमित**—श्लोक १९७ में वर्णित लक्षण; **विलास**—श्लोक १८७ में वर्णित लक्षण; **ललित**—श्लोक १९२ में वर्णित लक्षण; **विब्बोक**—नायक की भेंट की अवहेलना करना ; **मोट्टायित**—नायक के शब्द तथा उसकी याद से कामवासना जागृत होना; **आर**—और; **मौग्ध्य**—मुग्ध होने की दशा (सब कुछ जानने पर भी न जानने की दशा); **चकित**—नायिका के भयभीत होने की दशा यद्यपि वह भयभीत नहीं होती है।

अनुवाद

जिन कतिपय लक्षणों की विवेचना निम्नलिखित श्लोकों में की गई है वे हैं—किलकिंचित, कुट्टमित, विलास, ललित, विब्बोक, मोट्टायित, मौग्ध्य तथा चकित।

एत भाव-भूषाय भूषित श्री-राधार अङ्ग ।
देखिते उथले कृष्ण-सुखाब्धि-तरङ्ग ॥ १६९॥

एत भाव-भूषाय भूषित श्री-राधार अङ्ग ।
देखिते उथले कृष्ण-सुखाब्धि-तरङ्ग ॥ १६९॥

एत—इतने अधिक; **भाव-भूषाय**—भाव रूपी आभूषणों से; **भूषित**—सजी हुई; **श्री-राधार**—श्रीमती राधारानी का; **अङ्ग**—शरीर; **देखिते**—देखने के लिए; **उथले**—उठता है; **कृष्ण-सुख-अब्धि**—कृष्ण के आनन्द का सागर; **तरङ्ग**—लहरें।

अनुवाद

"जब श्रीमती राधारानी इन अनेक भाव-आभूषणों को प्रकट करती हैं, तो कृष्ण के सुख-समुद्र में तुरन्त दिव्य लहरें उठने लगती हैं।

किल-किञ्चितादि-भावेर शुन विवरण ।
ये भाव-भूषाय राधा हरे कृष्ण-मन ॥ १७० ॥

किल-किञ्चितादि-भावेर शुन विवरण ।
ये भाव-भूषाय राधा हरे कृष्ण-मन ॥ १७० ॥

किल-किञ्चित-आदि—"किल किंचित" नामक भाव से प्रारम्भ करके; **भावेर**—भावों का; **शुन**—सुनो; **विवरण**—वर्णन; **ये भाव-भूषाय**—जिस भाव रूपी आभूषणों सहित; **राधा**—श्रीमती राधारानी; **हरे**—मोह लेती है; **कृष्ण-मन**—कृष्ण का मन।

अनुवाद

"अब किलकिंचित इत्यादि विभिन्न भावों का विवरण सुनें। श्रीमती राधारानी इन भावरूपी आभूषणों से कृष्ण के मन को हर लेती हैं।

राधा देखि' कृष्ण यदि छुँइते करे मन ।
दान-घाटि-पथे यबे वर्जेन गमन ॥ १७१ ॥

राधा देखि' कृष्ण यदि छुइते करे मन ।
दान-घाटि-पथे यबे वर्जेन गमन ॥ १७१ ॥

राधा—श्रीमती राधारानी को; **देखि'**—देखकर; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **यदि**—यदि; **छुइते**—छूने का; **करे मन**—मन करता है; **दान-घाटि-पथे**—'दान घाटी' के मार्ग से; **यबे**—जब; **वर्जेन**—रोक देते हैं; **गमन**—जाने से।

अनुवाद

"जब श्रीकृष्ण श्रीमती राधारानी को देखते हैं और उनका मन श्रीमती राधारानी के शरीर का स्पर्श करने को करता है, तो वे उन्हें उस स्थान पर जाने से रोक देते हैं जहाँ से यमुना नदी को पार की जा सकती है।

যবে আসি' মানা করে পুষ্প উঠাইতে ।
সখী-আগে চাহে যদি গায়ে হাত দিতে ॥১৭২॥

ग्नबे आसि' माना करे पुष्प उठाइते ।
सखी-आगे चाहे ग्नदि गाये हात दिते ॥ १७२ ॥

ग्नबे—जब; **आसि'**—निकट आकर; **माना करे**—रोक देते हैं; **पुष्प उठाइते**—फूल चुनने के लिए; **सखी-आगे**—श्रीमती राधारानी की सखियों के सामने; **चाहे**—चाहते हैं; **ग्नदि**—यदि; **गाये**—शरीर को; **हात दिते**—हाथ से छूना।

अनुवाद

"राधारानी के पास जाकर कृष्ण उन्हें फूल चुनने से मना करते हैं। वे उनकी सखियों के सामने भी उनका स्पर्श कर सकते हैं।

এই-সব স্থানে 'কিল-কিঞ্চিত' উদগম ।
প্রথমে 'হর্ষ' সঞ্চারী—মূল কারণ ॥১৭৩॥

एइ-सब स्थाने 'किल-किञ्चित' उद्‌गम ।
प्रथमे 'हर्ष' सञ्चारी—मूल कारण ॥ १७३ ॥

एइ-सब स्थाने—ऐसे स्थानों पर; **किल-किञ्चित**—'किलकिंचित' नामक भावों के लक्षणों का; **उद्‌गम**—जागरण होता है; **प्रथमे**—प्रारम्भ में; **हर्ष**—हर्ष; **सञ्चारी**—परमानन्द का भाव; **मूल कारण**—मूल कारण।

अनुवाद

"ऐसे अवसरों पर किलकिंचित भाव के लक्षण जाग्रत होते हैं। सर्वप्रथम भावप्रेम में हर्ष का संचार होता है और यही इन लक्षणों का मूल कारण है।

तात्पर्य

जब भी श्रीमती राधारानी अपना घर छोड़ती हैं, वे सदैव अत्यन्त सुसज्जित एवं आकर्षक होती हैं। यह उनका स्त्रियोचित स्वभाव है कि वे श्रीकृष्ण का ध्यान आकृष्ट करना चाहती हैं और उनके अत्यन्त आकर्षक रीति से सजी हुईं देखकर श्रीकृष्ण उनके शरीर का स्पर्श करना चाहते हैं। तब कृष्ण उनमें कुछ दोष खोजते हैं और वे उन्हें नदी पार करने तथा फूल तोड़ने से मना करते हैं। श्रीमती राधारानी तथा श्रीकृष्ण के बीच की लीलाएँ ऐसी हैं। श्रीमती राधारानी

गोपी होने से सदा दूध का पात्र लिए रहती हैं और प्रायः यमुना के उस पार दूध बेचने जाती हैं। नदी पार करने के लिए उन्हें उतराई देनी होती है। जिस स्थान पर नाविक उतराई लेते हैं उसे *दानघाटि* कहते हैं। भगवान् कृष्ण उन्हें यह कहकर रोकते हैं, "सर्वप्रथम तुम्हें उतराई देनी होगी; तभी मैं तुम्हें जाने दूँगा।" यह लीला *दानकेलिलीला* कहलाती है। इसी प्रकार यदि श्रीमती राधारानी फूल चुनना चाहती हैं, तो श्रीकृष्ण बाग का मालिक बनकर उन्हें मना करते हैं। यह लीला *किलकिञ्चित* कहलाती है। श्रीकृष्ण द्वारा मना करने से श्रीमती राधारानी में लज्जा का उदय होता है। उस समय उनके शरीर में किलकिंचित नामक प्रेमभाव के लक्षण उत्पन्न होते हैं। अगले श्लोक में इन प्रेमभाव के लक्षणों का वर्णन हुआ है। यह श्लोक श्रील रूप गोस्वामी कृत *उज्ज्वल नीलमणि* (अनुभाव प्रकरण ३९) से लिया गया है।

गर्वाभिलाष-रुदित-स्मितासूया-भय-क्रुधाम् ।
सङ्करी-करणं हर्षादुच्यते किल-किञ्चितम् ॥ १७४॥

गर्वाभिलाष-रुदित-स्मितासूया-भय-क्रुधाम् ।
सङ्करी-करणं हर्षादुच्यते किल-किञ्चितम् ॥ १७४॥

गर्व—गर्व; **अभिलाष**—अभिलाषा; **रुदित**—रोदन; **स्मित**—मुस्कुराहट; **असूया**—ईर्ष्या; **भय**—भय; **क्रुधाम्**—क्रोध; **सङ्करी-करणम्**—सिकुड़कर दूर हटना; **हर्षात्**—हर्ष के कारण; **उच्यते**—कहलाता है; **किल-किञ्चितम्**—किलकिंचित नामक लक्षण।

अनुवाद

"'गर्व, अभिलाषा, रुदन, हँसी, ईर्ष्या, भय तथा क्रोध—ये सात प्रेमभाव-लक्षण हैं, जो हर्ष के कारण सिकुड़कर दूर हटने के फलस्वरूप प्रकट होते हैं। ये लक्षण किलकिंचित भाव कहलाते हैं।

আর সাত ভাব আসি' সহজে মিলয় ।
অষ্ট-ভাব-সম্মিলনে 'মহা-ভাব' হয় ॥ ১৭৫॥

आर सात भाव आसि' सहजे मिलय ।
अष्ट-भाव-सम्मिलने 'महा-भाव' हय ॥ १७५॥

आर—अन्य; **सात**—सात; **भाव**—भाव; **आसि'**—मिलकर; **सहजे**—स्वाभावतः; **मिलय**—मिल जाते हैं; **अष्ट-भाव**—आठ प्रकार के भाव; **सम्मिलने**—मिलने से; **महा-भाव हय**—महाभाव होता है

अनुवाद

"सात दिव्य भाव और हैं और जब वे हर्ष के स्तर पर मिलते हैं, तो उनका मेल (मिलाप) महाभाव कहलाता है।"

गर्व, अभिलाष, भय, शुष्क-रुदित ।
क्रोध, असूया हय, आर मन्द-स्मित ॥ १७६॥

गर्व, अभिलाष, भय, शुष्क-रुदित ।
क्रोध, असूया हय, आर मन्द-स्मित ॥ १७६॥

गर्व—गर्व; **अभिलाष**—अभिलाषा; **भय**—भय; **शुष्क-रुदित**—बनावटी रोना; **क्रोध**—क्रोध; **असूया**—ईर्ष्या; **हय**—होता है; **आर**—और; **मन्द-स्मित**—मृदु मुस्कान।

अनुवाद

"महाभाव में सात अवयव मिले होते हैं—गर्व, अभिलाषा, भय, बनावटी रोदन, क्रोध, ईर्ष्या तथा मृदु मुस्कान।

नाना-स्वादु अष्ट-भाव एकत्र मिलन ।
याहार आस्वादे तृप्त हय कृष्ण-मन ॥ १७७॥

नाना-स्वादु अष्ट-भाव एकत्र मिलन ।
ग्राहार आस्वादे तृप्त हय कृष्ण-मन ॥ १७७॥

नाना—नाना प्रकार; **स्वादु**—स्वादिष्ट; **अष्ट-भाव**—आठ प्रकार के भाव लक्षण; **एकत्र**—एक स्थान पर; **मिलन**—मिलकर; **ग्राहार**—जिनके; **आस्वादे**—आस्वादन से; **तृप्त**—सन्तुष्ट; **हय**—हो जाता है; **कृष्ण-मन**—कृष्ण का मन।

अनुवाद

"दिव्य हर्ष के स्तर पर प्रेमभाव के आठ लक्षण हैं और जब वे मिलते हैं, तो उनका आस्वादन करके भगवान् कृष्ण का मन पूर्णतः तृप्त हो जाता है।

দধি, খণ্ড, ঘৃত, মধু, মরীচ, কর্পূর ।
এলাচি-মিলনে যৈছে রসালা মধুর ॥ ১৭৮॥

দধি, খণ্ড, ঘৃত, মধু, মরীচ, কর্পূর ।
এলাচি-মিলনে গ্রৈছে রসালা মধুর ॥ ১৭৮ ॥

দধি—दही; **খণ্ড**—खांड; **ঘৃত**—घी; **মধু**—शहद; **মরীচ**—काली मिर्च; **কর্পূর**—कपूर; **এলাচি**—इलायची; **মিলনে**—इकट्ठे मिलकर; **গ্রৈছে**—जैसे; **রসালা**—अत्यन्त स्वादिष्ट; **মধুর**—और मीठा।

अनुवाद

"उनकी उपमा दही, खाँड, घी, शहद, काली मिर्च, कपूर तथा इलायची के मिश्रण से दी जाती है। इन्हें मिला देने पर वे अत्यन्त स्वादिष्ट और मधुर हो जाते हैं।

এই ভাব-যুক্ত দেখি' রাধাস্য-নয়ন ।
সঙ্গম হইতে সুখ পায় কোটি-গুণ ॥ ১৭৯॥

এই ভাব-যুক্ত দেখি' রাধাস্য-নয়ন ।
সঙ্গম হইতে সুখ পায় কোটি-গুণ ॥ ১৭৯ ॥

এই ভাব—इन भाव लक्षणों के; **যুক্ত**—इकट्ठे मिलने से; **দেখি'**—देखकर; **রাধা-আস্য-নয়ন**—श्रीमती राधारानी का मुख और नयन; **সঙ্গম হইতে**—सीधे आलिंगन की अपेक्षा; **সুখ পায়**—सुख पाया; **কোটি-গুণ**—करोड़ों गुना।

अनुवाद

"भगवान् श्रीकृष्ण भावमय प्रेम के इस मिश्रण से प्रकाशित श्रीमती राधारानी के मुखमण्डल को देखकर उनसे प्रत्यक्ष मिलन की अपेक्षा करोड़ों गुना अधिक सन्तुष्ट होते हैं।

तात्पर्य

इसकी अधिक व्याख्या अगले श्लोक में की गई है, जो श्रील रूप गोस्वामी कृत *उज्ज्वल नीलमणि* (अनुभाव प्रकरण ४१) से लिया गया है।

অন্তঃ স্মেরতয়োজ্জ্বলা জল-কণ-ব্যাকীর্ণ-পক্ষ্মাঙ্কুরা
কিঞ্চিৎপাটলিতাঞ্চলা রসিকতোত্সিক্তা পুরঃ কুঞ্চতী ।

रुद्धायाः पथि माधवेन मधुर-व्याभुग्न-तोरोत्तरा
राधायाः किल-किञ्चित-स्तवकिनी दृष्टिः श्रियं वः क्रियात् ॥ १८०॥

अन्तः स्मेरतयोज्ज्वला जल-कण-व्याकीर्ण-पक्ष्माङ्कुरा
किञ्चित्पाटलिताञ्चला रसिकतोत्सिक्ता पुरः कुञ्चती ।
रुद्धायाः पथि माधवेन मधुर-व्याभुग्न-तोरोत्तरा
राधायाः किल-किञ्चित-स्तवकिनी दृष्टिः श्रियं वः क्रियात् ॥ १८०॥

अन्तः—अन्दर से; अप्रकट; **स्मेरतया उज्ज्वल**—मृदु मुसकान से उद्दीप्त; **जल-कण**—पनी की बूंदों से; **व्याकीर्ण**—छिड़के हुआ; **पक्ष्म-अङ्कुरा**—पलकों से; **किञ्चित्**—बहुत थोड़ा; **पाटलित-अञ्चला**—थोड़ी सी लाली सफेद से मिली हुई नेत्रों के किनारों पर; **रसिकता-उत्सिक्ता**—भगवान् के छल-पूर्ण व्यवहार से मिलकर; **पुरः**—सामने; **कुञ्चती**—सिकुड़ जाती है; **रुद्धायाः**—रोके जाने पर; **पथि**—मार्ग में; **माधवेन**—कृष्ण द्वारा; **मधुर**—मधुर; **व्याभुग्न**—तिरछी करके; **तोरा-उत्तरा**—नेत्र; **राधायाः**—श्रीमती राधारानी के; **किल-किञ्चित**—किल-किंचित नामक भाव लक्षण; **स्तवकिनी**—पुष्पों के गुलदस्ते की भाँति; **दृष्टिः**—दृष्टि; **श्रियम्**—सौभाग्य; **वः**—तुम सबके; **क्रियात्**—करें।

अनुवाद

"'श्रीमती राधारानी का किलकिंचित भाव, जो गुलदस्ते के समान है, सबको सौभाग्य प्रदान करे। जब श्रीकृष्ण ने राधारानी का दानघाटि का रास्ता रोक दिया, तो उनके हृदय में हँसी उत्पन्न हुई। उनकी आँखें चमक उठीं और उनकी आँखों से नये आँसू बहने लगे, जिससे वे लाल-लाल हो गईं। कृष्ण से उनके मधुर सम्बन्ध के कारण उनकी आँखें उत्साहयुक्त थीं और जब उनका रोना रुक गया, तो वे और अधिक सुन्दर लगने लगीं।'

वाष्प-व्याकुलितारुणाञ्चल-चलन्नेत्रं रसोल्लासितं
हेलोल्लास-चलाधरं कुटिलित-भ्रू-युग्ममुद्यत्स्मितम् ।
राधायाः किल-किञ्चिताञ्चितमसौ वीक्ष्याननं सङ्गमाद्
आनन्दं तमवाप कोटि-गुणितं योऽभून्न गीर्गोचरः ॥ १८१॥

बाष्प-व्याकुलितारुणाञ्चल-चलन्नेत्रं रसोल्लासितं
हेलोल्लास-चलाधरं कुटिलित-भ्रू-युग्ममुद्यत्स्मितम् ।

राधायाः किल-किञ्चिताञ्चितमसौ वीक्ष्याननं सङ्गमाद्
आनन्दं तमवाप कोटि-गुणितं ग्रोऽभून्न गीर्गोचरः ॥ १८१ ॥

बाष्प—अश्रुओं से; **व्याकुलित**—व्याकुल; **अरुण-अञ्चल**—लाल रंग वाला; **चलन्**—हिलते; **नेत्रम्**—नेत्र; **रस-उल्लासितम्**—दिव्य रस से उत्तेजित होने के कारण; **हेल-उल्लास**—उपेक्षित उल्लास के कारण; **चल-अधरम्**—हिलते होंठ; **कुटिलित**—टेढ़ी; **भ्रू-युग्मम्**—दो भौएँ; **उद्यत्**—जगने से; **स्मितम्**—मुस्कुराती हुई; **राधायाः**—श्रीमती राधारानी के; **किल-किञ्चित**—किलकिंचित नामक आनन्द भाव से; **अञ्चितम्**—भाव; **असौ**—वे (कृष्ण); **वीक्ष्य**—दृष्टि डालने के बाद; **आननम्**—मुख; **सङ्गमात्**—आलिंगन की अपेक्षा; **आनन्दम्**—आनन्द; **तम्**—वह; **अवाप**—पाया; **कोटि-गुणितम्**—करोड़ों गुना; **ग्रः**—जो; **अभूत्**—हुआ; **न**—नहीं; **गीः-गोचरः**—वर्णन किया जाने वाला विषय।

अनुवाद

"'आँसुओं से व्याकुल श्रीमती राधारानी की आँखें लाल-लाल हो गईं, मानो सूर्योदय के समय पूर्वी क्षितिज हो। उनके होंठ हर्ष तथा काम-वासना के मारे कांपने लगे। उनकी भौंहे टेढ़ी हो गईं और उनके कमल जैसे मुखमण्डल में हल्की-सी मुस्कान आ गई। राधारानी के मुखमण्डल से ऐसे भाव प्रकट होते देखकर श्रीकृष्ण को उनका आलिंगन करने की अपेक्षा लाखों गुना अधिक सुख प्राप्त हुआ। भगवान् कृष्ण का यह सुख तनिक भी भौतिक नहीं है।'"

तात्पर्य

यह उद्धरण *गोविन्द लीलामृत* (९.१८) से है।

এত শুনি' প্রভু হৈলা আনন্দিত মন ।
সুখাবিষ্ট হঞা স্বরূপে কৈলা আলিঙ্গন ॥ ১৮২ ॥

एत शुनि' प्रभु हैला आनन्दित मन ।
सुखाविष्ट हञा स्वरूपे कैला आलिङ्गन ॥ १८२ ॥

एत शुनि'—यह सुनकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **हैला**—हो गये; **आनन्दित मन**—अपने मन में अत्यन्त प्रसन्न; **सुख-आविष्ट हञा**—हर्ष में डूबकर; **स्वरूपे**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी जी को ; **कैला**—किया; **आलिङ्गन**—आलिंगन।

अनुवाद

यह सुनकर श्री चैतन्य महाप्रभु अत्यन्त आनन्दित हुए और इस सुख में मग्न होकर उन्होंने स्वरूप दामोदर गोस्वामी का आलिंगन कर लिया।

'विलासादि'-भाव-भूषार कह त' लक्षण ।
येई भावे राधा हरे गोविन्देर मन? ॥ १८३॥

'विलासादि'-भाव-भूषार कह त' लक्षण ।
येइ भावे राधा हरे गोविन्देर मन? ॥ १८३॥

विलास-आदि—दिव्य आनन्द आदि से; **भाव**—भाव के; **भूषार**—आभूषणों के; **कह**—कृपया कहो; **त'**—निस्सन्देह; **लक्षण**—लक्षण; **येइ भावे**—जिन लक्षणों से; **राधा**—श्रीमती राधारानी; **हरे**—मोह लेती है; **गोविन्देर मन**—श्री गोविन्द का मन।

अनुवाद

तब श्री चैतन्य महाप्रभु ने स्वरूप दामोदर से कहा, "कृपा करके श्रीमती राधारानी के शरीर को अलंकृत करने वाले उन भावरूपी आभूषणों को बतलाइये, जिनसे वे श्री गोविन्द के मन को हर लेती हैं।"

तबे त' स्वरूप-गोसाञि कहिते लागिला ।
शुनि' प्रभुर भक्त-गण महा-सुख पाइला ॥ १८४॥

तबे त' स्वरूप-गोसाञि कहिते लागिला ।
शुनि' प्रभुर भक्त-गण महा-सुख पाइला ॥ १८४॥

तबे—उस समय; **त'**—निस्सन्देह; **स्वरूप-गोसाञि**—स्वरूप दामोदर; **कहिते लागिला**—कहने लगे; **शुनि'**—सुनकर; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **भक्त-गण**—सभी भक्तगण; **महा-सुख पाइला**—महान् सुख मिला।

अनुवाद

इस तरह अनुरोध किये जाने पर स्वरूप दामोदर ने कहना प्रारम्भ किया। इसे सुनकर श्री चैतन्य महाप्रभु के सारे भक्त अत्यन्त प्रसन्न थे।

राधा वसि' आछे, किवा वृन्दावने याय ।
ताहाँ यदि आचम्बिते कृष्ण-दरशन पाय ॥ १८५॥

राधा वसि' आछे, किबा वृन्दावने ग्राय ।
ताहाँ ग्रदि आचम्बिते कृष्ण-दरशन पाय ॥ १८५ ॥

राधा वसि' आछे—श्रीमती राधारानी बैठी हैं; **किबा**—अथवा; **वृन्दावने ग्राय**—वृन्दावन जा रही हैं; **ताहाँ**—वहाँ; **ग्रदि**—यदि; **आचम्बिते**—अचानक; **कृष्ण-दरशन पाय**—कृष्ण के दर्शन करने का अवसर पाती हैं।

अनुवाद

"कभी-कभी जब श्रीमती राधारानी बैठी रहती हैं या जब वे वृन्दावन जा रही होती हैं, तो वे कृष्ण का दर्शन पा जाती हैं।

देखिते नाना-भाव हय विलक्षण ।
से वैलक्षण्येर नाम 'विलास'-भूषण ॥ १८६ ॥

देखिते नाना-भाव हय विलक्षण ।
से वैलक्षण्येर नाम 'विलास'-भूषण ॥ १८६ ॥

देखिते—देखकर; **नाना-भाव**—विभिन्न भाव; **हय**—होते हैं; **विलक्षण**—विभिन्न लक्षण; **से**—वे; **वैलक्षण्येर**—विभिन्न लक्षणों का; **नाम**—नाम; **विलास**—विलास; **भूषण**—आभूषण।

अनुवाद

"उस समय विभिन्न भावों के जो-जो लक्षण प्रकट होते हैं, वे विलास कहलाते हैं।

तात्पर्य

इसका वर्णन अगले श्लोक में पाया जाता है। यह श्लोक *उज्ज्वल नीलमणि* (अनुभाव प्रकरण ३९) से लिया गया है।

गति-स्थानासनादीनां मुख-नेत्रादि-कर्मणाम् ।
तात्कालिकं तु वैशिष्ट्यं विलासः प्रिय-सङ्ग-जम् ॥ १८७ ॥

गति-स्थानासनादीनां मुख-नेत्रादि-कर्मणाम् ।
तात्कालिकं तु वैशिष्ट्यं विलासः प्रिय-सङ्ग-जम् ॥ १८७ ॥

गति—चलते हुए; **स्थान**—खड़े हुए; **आसन-आदीनाम्**—और बैठे हुए आदि का; **मुख**—मुख पर; **नेत्र**—नेत्रों का; **आदि**—आदि; **कर्मणाम्**—कर्मों का; **तात्-कालिकम्**—

उस समय से सम्बन्धित; **तु**—तब; **वैशिष्ट्यम्**—विशिष्ट लक्षण; **विलासः**—विलास नामक; **प्रिय-सङ्ग-जम्**—प्रियतम के मिलने से उत्पन्न।

अनुवाद

"'नायिका के मुख, नेत्रों तथा शरीर के अन्य भागों में प्रकट होने वाले विविध लक्षण तथा उसके चलने, खड़े होने या अपने प्रेमी से मिलने पर बैठने की मुद्रा को विलास कहते हैं।'"

लज्जा, हर्ष, अभिलाष, सम्भ्रम, वाम्य, भय ।
एत भाव मिलि' राधाय चञ्चल करय ॥ १८८॥

लज्जा, हर्ष, अभिलाष, सम्भ्रम, वाम्य, भय ।
एत भाव मिलि' राधाय चञ्चल करय ॥ १८८॥

लज्जा—लज्जा; **हर्ष**—हर्ष; **अभिलाष**—अभिलाषा; **सम्भ्रम**—सम्मान; **वाम्य**—वाम पन्थी गोपियों के लक्षण; **भय**—भय; **एत**—ये; **भाव**—भाव; **मिलि'**—इकट्ठे मिलकर; **राधाय**—श्रीमती राधारानी को; **चञ्चल करय**—उत्तेजित करना।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर ने कहा, "लज्जा, हर्ष, अभिलाषा, आदर, भय तथा वामा गोपियों के लक्षण—ये सब मिलकर श्रीमती राधारानी को चंचल बनाते हैं।

तात्पर्य

इसकी व्याख्या *गोविन्द लीलामृत* (९.११) में प्राप्य अगले श्लोक में दी गई है।

पुरः कृष्णालोकात्स्थगित-कुटिलास्या गतिरभूत्
तिरश्चीनं कृष्णाम्बर-दर-वृतं श्री-मुखमपि ।
चलत्तारं स्फारं नयन-युगमाभुग्नमिति सा
विलासाख्य-स्वालङ्करण-वलितासीत्प्रिय-मुदे ॥ १८९॥

पुरः कृष्णालोकात्स्थगित-कुटिलास्या गतिरभूत्
तिरश्चीनं कृष्णाम्बर-दर-वृतं श्री-मुखमपि ।
चलत्तारं स्फारं नयन-युगमाभुग्नमिति सा
विलासाख्य-स्वालङ्करण-वलितासीत्प्रिय-मुदे ॥ १८९॥

पुरः—राधारानी के सामने; **कृष्ण-आलोकात्**—भगवान् कृष्ण को देखने से; **स्थगित-कुटिला**—रुक गई और छल कपट की भूमिका ले ली; **अस्याः**—श्रीमती राधारानी की; **गतिः**—प्रगति; **अभूत्**—हो गई; **तिरश्चीनम्**—टेढ़ी होने के कारण; **कृष्ण-अम्बर**—नीले वस्त्र के; **दर-वृतम्**—ढकी गई; **श्री-मुखम् अपि**—उनका मुख भी; **चलत्-तारम्**—चलते तारों के समान; **स्फारम्**—चौड़ी; **नयन-युगम्**—दोनों नेत्र; **आभुग्नम्**—अत्यन्त टेढ़े; **इति**—इस प्रकार; **सा**—वे (राधारानी); **विलास-आख्य**—विलास नामक; **स्व-अलङ्करण**—निजी आभूषणों से; **वलित**—सज्जित; **आसीत्**—थीं; **प्रिय-मुदे**—श्रीकृष्ण के आनन्द को बढ़ाने मात्र के लिए।

अनुवाद

"'जब श्रीमती राधारानी ने भगवान् कृष्ण को अपने सामने देखा, तो उनकी गति रुक गई और उनकी मनोवृत्ति वामा (कुटिला) सी हो गई। यद्यपि उनका मुख नीले वस्त्र से थोड़ा सा ढका था, किन्तु उनके बड़े-बड़े और वक्र नेत्र चंचल थे। इस तरह वे विलास के आभूषण से अलंकृत थीं और उनका सौन्दर्य भगवान् कृष्ण को आनन्द प्रदान करने के लिए बढ़ गया।'

কৃষ্ণ-আগে রাধা যদি রহে দাণ্ডাঞা ।
তিন-অঙ্গ-ভঙ্গে রহে ভ্রূ নাচাঞা ॥ ১৯০ ॥

কৃষ্ণ-আগে রাধা যদি রহে দাণ্ডাঞা ।
তিন-অঙ্গ-ভঙ্গে রহে ভ্রূ নাচাঞা ॥ ১৯০ ॥

কৃষ্ণ-আগে—কৃষ্ণ के समक्ष; **রাধা**—श्रीमती राधारानी; **যদি**—यदि; **রহে**—रहती हैं; **দাণ্ডাঞা**—खड़ी; **তিন-অঙ্গ-ভঙ্গে**—त्रिभंगी शरीर वाली; **রহে**—रहती है; **ভ্রূ**—भौंहे; **নাচাঞা**—नाचते हुए।

अनुवाद

"जब श्रीमती राधारानी कृष्ण के समक्ष खड़ी होती हैं, तब वे तीन स्थानों से टेढ़ी हो जाती हैं—गर्दन, कमर तथा पाँव से और उनकी भौंहे नाचने लगती हैं।

মুখে-নেত্রে হয় নানা-ভাবের উদগার ।
এই কান্তা-ভাবের নাম 'ললিত'-অলঙ্কার ॥ ১৯১ ॥

मुखे-नेत्रे हय नाना-भावेर उद्‌गार ।
एइ कान्ता-भावेर नाम 'ललित'-अलङ्कार ॥ १९१ ॥

मुखे—मुख पर; **नेत्रे**—नेत्रों में; **हय**—हैं; **नाना-भावेर**—अनेक भाव; **उद्‌गार**—प्रकट; **एइ**—यह; **कान्ता-भावेर**—स्त्रियोचित दशा का; **नाम**—नाम; **ललित**—ललित का; **अलङ्कार**—आभूषण।

अनुवाद

"जब श्रीमती राधारानी के मुख पर तथा नेत्रों पर विविध भावों का उदय होता है, जो सुन्दर नारी-सुलभ प्रवृत्ति के उपयुक्त होते हैं, तब ललित अलंकार का प्राकट्य हुआ माना जाता है।

विन्यास-भङ्गिरङ्गानां भ्रू-विलास-मनोहरा ।
सुकुमारा भवेद् यत्र ललितं तदुदाहृतम् ॥ १९२ ॥
विन्यास-भङ्गिरङ्गानां भ्रू-विलास-मनोहरा ।
सुकुमारा भवेद् यत्र ललितं तदुदाहृतम् ॥ १९२ ॥

विन्यास—प्रबन्ध में; **भङ्गिः**—टेढ़े; **अङ्गानाम्**—शारीरिक अंगो का; **भ्रू-विलास**—भौहों की लीला के कारण; **मनोहरा**—मनोहर; **सु-कुमारा**—अत्यन्त कोमल; **भवेत्**—हो सकता है; **यत्र**—जहाँ; **ललितम्**—ललित; **तत्**—वह; **उदाहृतम्**—कहता है।

अनुवाद

"'जब शारीरिक अंग मुलायम तथा भंगिमायुक्त हो और जब भौंहे सुन्दर ढंग से उत्तेजित हों, तो नारी-स्वभाव का सौन्दर्य आभूषण प्रकट होता है, जिसे ललित अलंकार कहा जाता है।

तात्पर्य

यह श्लोक *उज्ज्वल नीलमणि* (अनुभाव प्रकरण ५१) से है।

ललित-भूषित राधा देखे यदि कृष्ण ।
दुँहे दुँहा मिलिबारे हयेन सतृष्ण ॥ १९३ ॥
ललित-भूषित राधा देखे यदि कृष्ण ।
दुँहे दुँहा मिलिबारे हयेन सतृष्ण ॥ १९३ ॥

ललित-भूषित—'ललित अलंकार' से सज्जित; **राधा**—श्रीमती राधारानी; **देखे**—देखती हैं; **यदि**—यदि; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **दुँहे**—वे दोनों; **दुँहा**—एक दूसरे से; **मिलिबारे**—मिलने के लिए; **हयेन**—हो जाते हैं; **स-तृष्ण**—अत्यन्त उत्सुक।

अनुवाद

"जब भगवान् श्रीकृष्ण श्रीमती राधारानी को इन ललित अलंकारों से विभूषित देखते हैं, तो दोनों में एक-दूसरे से मिलने की उत्कण्ठा जाग्रत हो जाती है।

ह्रिया तिर्यग्ग्रीवा-चरण-कटि-भङ्गी-सुमधुरा
चलच्छिल्ली-वल्ली-दलित-रतिनाथोर्जित-धनुः ।
प्रिय-प्रेमोल्लासोल्लसित-ललितालालित-तनुः
प्रिय-प्रीत्यै सासीदुदित-ललितालङ्कृति-युता ॥ १९४ ॥

ह्रिया तिर्यग्ग्रीवा-चरण-कटि-भङ्गी-सुमधुरा
चलच्चिल्ली-वल्ली-दलित-रतिनाथोर्जित-धनुः ।
प्रिय-प्रेमोल्लासोल्लसित-ललितालालित-तनुः
प्रिय-प्रीत्यै सासीदुदित-ललितालङ्कृति-युता ॥ १९४ ॥

ह्रिया—उनके लज्जा-भाव से; **तिर्यक्**—टेढ़ी होकर; **ग्रीवा**—गर्दन की; **चरण**—घुटनों की; **कटि**—कमर की; **भङ्गी**—टेढ़ेपन से; **सु-मधुरा**—अति मधुर; **चलत्-चिल्ली**—चंचल भौएँ; **वल्ली**—लताओं से; **दलित**—हारी हुई; **रति-नाथ**—कामदेव की; **ऊर्जित**—शक्तिमय; **धनुः**—जिससे धनुष; **प्रिय-प्रेम-उल्लास**—प्रिया के प्रेमपूर्ण भाव के कारण; **उल्लसित**—प्रेरित होकर; **ललित**—ललित नामक भाव; **आलालित-तनुः**—जिनका शरीर ढका है; **प्रिय-प्रीत्यै**—प्रियतम को प्रसन्न करने हेतु; **सा**—श्रीमती राधारानी; **आसीत्**—थीं; **उदित**—जग गईं; **ललित-अलङ्कृति-युता**—'ललित अलंकार' से युक्त होकर।

अनुवाद

"'जब श्रीकृष्ण के प्रेम को बढ़ाने मात्र के लिए श्रीमती राधारानी को ललित अलंकार से सजाया गया, तो उनकी गर्दन, घुटनों तथा कमर से एक आकर्षक भाव-भंगिमा प्रकट हुई। यह कृष्ण से बचने की उनकी इच्छा तथा उनकी लज्जा से उत्पन्न हुई। उनकी भौहों की चंचलता कामदेव के शक्तिशाली धनुष को जीतने वाली थी। अपने प्रियतम के हर्ष को बढ़ाने के लिए, उन्होंने अपने शरीर को ललित अलंकारों से सजाया था।'

तात्पर्य

यह श्लोक *गोविन्द लीलामृत* (९.१४) से लिया गया है।

লোভে আসি' কৃষ্ণ করে কঞ্চুকাকর্ষণ ।
অন্তরে উল্লাস, রাধা করে নিবারণ ॥ ১৯৫॥

लोभे आसि' कृष्ण करे कञ्चुकाकर्षण ।
अन्तरे उल्लास, राधा करे निवारण ॥ १९५ ॥

लोभे—लोभ में; **आसि'**—आकर; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **करे**—करते हैं; **कञ्चुक-आकर्षण**—उनकी साड़ी का पल्लू खींचकर; **अन्तरे**—अन्दर; **उल्लास**—अत्यन्त प्रसन्न; **राधा**—श्रीमती राधारानी; **करे**—करती हैं; **निवारण**—रोकना।

अनुवाद

"जब कृष्ण आगे बढ़कर लालचवश श्रीमती राधारानी की साड़ी का किनारा खींचते हैं, तब वे भीतर से अत्यधिक प्रसन्न होती हैं, किन्तु बाहर से उन्हें रोकने का प्रयास करती हैं।

বাহিরে বামতা-ক্রোধ, ভিতরে সুখ মনে ।
'কুট্টমিত'-নাম এই ভাব-বিভূষণে ॥ ১৯৬॥

बाहिरे वामता-क्रोध, भितरे सुख मने ।
'कुट्टमित'-नाम एइ भाव-विभूषणे ॥ १९६ ॥

बाहिरे—बाहर से; **वामता**—विरोध; **क्रोध**—क्रोध; **भितरे**—अन्दर से; **सुख**—सुख; **मने**—मन में; **कुट्टमित**—कुट्टमित; **नाम**—नामक; **एइ**—यह; **भाव-विभूषणे**—भाव का आभूषण।

अनुवाद

"श्रीमती राधारानी की यह आनन्दमय भाव *कुट्टमित* कहलाता है। जब यह भाव प्रकट होता है, तब वे बाह्य रूप से कृष्ण से दूर रहना चाहती हैं और ऊपर से क्रुद्ध होती हैं, यद्यपि मन ही मन वे अत्यन्त सुखी होती हैं।

স্তনাধরাদি-গ্রহণে হৃৎপ্রীতাবপি সম্ভ্রমাৎ ।
বহিঃ ক্রোধো ব্যথিত-বৎপ্রোক্তং কুট্টমিতং বুধৈঃ ॥ ১৯৭॥

स्तनाधरादि-ग्रहणे हृत्प्रीतावपि सम्भ्रमात् ।
बहिः क्रोधो व्यथित-वत्प्रोक्तं कुट्टमितं बुधैः ॥ १९७॥

स्तन—स्तन; **अधर**—होंठ; **आदि**—आदि; **ग्रहणे**—छुए जाने पर; **हृत्-प्रीतौ**—हृदय की सन्तुष्टि; **अपि**—यद्यपि; **सम्भ्रमात्**—सम्मान के कारण; **बहिः**—बाहर से; **क्रोधः**—क्रोध; **व्यथित**—दुःखी; **वत्**—जैसे; **प्रोक्तम्**—बुलाया; **कुट्टमितम्**—'कुट्टमित' शब्द; **बुधैः**—विद्वानों द्वारा।

अनुवाद

"'जब कृष्ण उनकी साड़ी की किनारी तथा उनके घूंघट को पकड़ लेते हैं, तो वे बाहर से अपमानित तथा क्रुद्ध प्रतीत होती हैं, किन्तु अपने हृदय में अत्यन्त सुखी होती हैं। विद्वान लोग इसे कुट्टमित भाव कहते हैं।'

तात्पर्य

यह उद्धरण *उज्ज्वल नीलमणि* (अनुभाव प्रकरण ४४) का है।

কৃষ্ণ-বাঞ্ছা পূর্ণ হয়, করে পাণি-রোধ ।
অন্তরে আনন্দ রাধা, বাহিরে বাম্য-ক্রোধ ॥ ১৯৮॥

কৃষ্ণ-বাঞ্ছা পূর্ণ হয়, করে পাণি-রোধ ।
অন্তরে আনন্দ রাধা, বাহিরে বাম্য-ক্রোধ ॥ ১৯৮॥

কৃষ্ণ-বাঞ্ছা—भगवान् कृष्ण की इच्छाएँ; **পূর্ণ**—पूर्ण; **হয়**—हो जाए; **করে**—करती है; **পাণি-রোধ**—अपने हाथ से विरोध; **অন্তরে**—हृदय के भीतर; **আনন্দ**—दिव्य आनन्द; **রাধা**—श्रीमती राधारानी; **বাহিরে**—बाहर से; **বাম্য**—विरोध; **ক্রোধ**—तथा क्रोध।

अनुवाद

"यद्यपि श्रीमती राधारानी अपने हाथ से कृष्ण को रोक रही थीं, किन्तु भीतर ही भीतर सोच रही थीं, 'कृष्ण को अपनी इच्छा पूरी करने दो।' इस तरह वे भीतर से अत्यन्त प्रसन्न थीं, किन्तु बाहर से विरोध तथा क्रोध प्रकट कर रही थीं।

ব্যথা পাঞা' করে যেন শুষ্ক রোদন ।
ঈষৎ হাসিয়া কৃষ্ণে করেন ভৎর্সন ॥ ১৯৯॥

व्यथा पाञा' करे ग्रेन शुष्क रोदन ।
ईषत् हासिया कृष्णे करेन भर्त्सन ॥१९९॥

व्यथा पाञा'—अप्रसन्न होकर; **करे**—करती हैं; **ग्रेन**—जैसे; **शुष्क**—बनावटी ; **रोदन**—रोदन; **ईषत्**—कोमलता से; **हासिया**—मुस्कुराकर; **कृष्णे**—कृष्ण की; **करेन**—करती हैं; **भर्त्सन**—भर्त्सना।

अनुवाद

" श्रीमती राधारानी बाहर से बनावटी रोदन जैसा भाव प्रदर्शित करती हैं मानो उन्हें व्यथा पहुँचती हो। फिर वे मन्द हँसती हैं और कृष्ण को ताड़ना देती हैं।

পাণি-রোধমবিরোধিত-বাঞ্ছং
ভৎর্সনাশ্চ মধুর-স্মিত-গর্ভাঃ ।
মাধবস্য কুরুতে করভোরুর্
হারি শুষ্ক-রুদিতং চ মুখেঽপি ॥২০০॥

पाणि-रोधमविरोधित-वाञ्छं
भर्त्सनाश्च मधुर-स्मित-गर्भाः ।
माधवस्य कुरुते करभोरुर्
हारि शुष्क-रुदितं च मुखेऽपि ॥२००॥

पाणि—हाथ; **रोधम्**—रोककर; **अविरोधित**—बिना रूकावट के; **वाञ्छम्**—कृष्ण की इच्छा को; **भर्त्सना:**—ताड़ना; **च**—और; **मधुर**—मधुर; **स्मित-गर्भा:**—मुस्कुराने के मृदुभाव युक्त; **माधवस्य**—श्रीकृष्ण का; **कुरुते**—करती हैं; **करभ-ऊरु:**—जिनकी जांघें एक शिशु हाथी की सूँड के समान हैं; **हारि**—मुग्ध; **शुष्क-रुदितम्**—बनावटी रोदन; **च**—और; **मुखे**—मुख पर; **अपि**—था।

अनुवाद

"'वास्तव में उनकी इच्छा नहीं होती कि वे कृष्ण को अपना शरीर छूने से मना करें, किन्तु हाथी के बच्चे की सूँड जैसी जाँघों वाली श्रीमती राधारानी उनके आगे बढ़ने पर विरोध करती हैं और मीठी हँसी द्वारा उन्हें प्रताड़ित करती हैं। ऐसे अवसरों पर वे अपने आकर्षक मुख पर अश्रु लाये बिना रोती हैं।'

এই-মত আর সব ভাব-বিভূষণ ।
যাহাতে ভূষিত রাধা হরে কৃষ্ণ মন ॥২০১॥

এइ-মত আর সব ভাব-বিভূষণ ।
য়াহাতে ভূষিত রাধা হরে কৃষ্ণ মন ॥ ২০১ ॥

এइ-মত—इस प्रकार; **আর**—भी; **সব**—सब; **ভাব-বিভূষণ**—भाव-विभूषण; **য়াহাতে**—जिनसे; **ভূষিত**—सजकर; **রাধা**—श्रीमती राधारानी; **হরে**—आकर्षित कर लेती हैं; **কৃষ্ণ মন**—कृष्ण के मन को।

अनुवाद

"इस प्रकार श्रीमती राधारानी उन विभिन्न प्रेम-भावों से अलंकृत एवं विभूषित हैं, जो श्रीकृष्ण के मन को आकृष्ट करते हैं।

অনন্ত কৃষ্ণের লীলা না যায় বর্ণন ।
আপনে বর্ণেন যদি 'সহস্র-বদন' ॥২০২॥

অনন্ত কৃষ্ণের লীলা না য়ায় বর্ণন ।
আপনে বর্ণেন য়দি 'সহস্র-বদন' ॥ ২০২ ॥

অনন্ত—असीम; **কৃষ্ণের**—भगवान् कृष्ण की; **লীলা**—लीलाएँ; **না**—नहीं; **য়ায়**—सम्भव हैं; **বর্ণন**—वर्णन; **আপনে**—स्वयं; **বর্ণেন**—वर्णन करते हैं; **য়দি**—यदि; **সহস্র-বদন**—सहस्र-मुखी शेष।

अनुवाद

"श्रीकृष्ण की अनन्त लीलाओं का वर्णन कर पाना बिल्कुल सम्भव नहीं है, भले ही वे स्वयं सहस्र वदन अर्थात् एक हजार मुख वाले शेष नाग के अवतार के रूप में उनका वर्णन क्यों न करें।"

শ্রীবাস হাসিয়া কহে,—শুন, দামোদর ।
আমার লক্ষ্মীর দেখ সম্পত্তি বিস্তর ॥২০৩॥

শ্রীবাস হাসিয়া কহে,—শুন, দামোদর ।
আমার লক্ষ্মীর দেখ সম্পত্তি বিস্তর ॥ ২০৩ ॥

শ্রীবাস—श्रीवास ठाकुर; **হাসিয়া**—मुस्कुराकर; **কহে**—कहते हैं; **শুন**—कृपया सुनो;

दामोदर—हे दामोदर गोस्वामी; **आमार लक्ष्मीर**—मेरी लक्ष्मी देवी; **देख**—जरा देखो; **सम्पत्ति विस्तर**—महान् ऐश्वर्य।

अनुवाद

इस पर श्रीवास ठाकुर हँस पड़े और स्वरूप दामोदर से बोले, "हे महाशय, जरा सुनो तो! देखो मेरी लक्ष्मीजी कितनी ऐश्वर्यवान हैं!

वृन्दावनेर सम्पद्देखथ,——पुष्प-किसलय ।
गिरिधातु-शिखिपिच्छ-गुञ्जाफल-मय ॥ २०४॥

वृन्दावनेर सम्पद्देख,——पुष्प-किसलय ।
गिरिधातु-शिखिपिच्छ-गुञ्जाफल-मय ॥ २०४॥

वृन्दावनेर—वृन्दावन का; **सम्पद्**—ऐश्वर्य; **देख**—देखो; **पुष्प-किसलय**—कुछ पुष्प और शाखाएँ; **गिरि-धातु**—पर्वतों से कुछ धातुएँ; **शिखि-पिच्छ**—कुछ मोरों के पंख; **गुञ्जा-फल-मय**—कुछ गूंजफल।

अनुवाद

"जहाँ तक वृन्दावन के ऐश्वर्य की बात है, उसमें कुछ फूल तथा टहनियाँ, कुछ पहाड़ी खनिज, कुछ मोरपंख तथा गुंजा नामक पौधा हैं।

वृन्दावन देखिवारे गेला जगन्नाथ ।
शुनि' लक्ष्मी-देवीर मने हैल आसोयाथ ॥ २०५॥

वृन्दावन देखिबारे गेला जगन्नाथ ।
शुनि' लक्ष्मी-देवीर मने हैल आसोयाथ ॥ २०५॥

वृन्दावन—वृन्दावन धाम; **देखिबारे**—देखने के लिए; **गेला**—गये; **जगन्नाथ**—भगवान् जगन्नाथ; **शुनि'**—सुनकर; **लक्ष्मी-देवीर**—लक्ष्मी देवी के; **मने**—मन में; **हैल**—थी; **आसोयाथ**—ईर्ष्या।

अनुवाद

"वृन्दावन देखने का निश्चय करने पर जब जगन्नाथजी वहाँ गये, तो इसे सुनकर लक्ष्मीजी को ईर्ष्या तथा बेचैनी का अनुभव होने लगा।

এত সম্পত্তি ছাড়ি' কেনে গেলা বৃন্দাবন ।
তাঁরে হাস্য করিতে লক্ষ্মী করিলা সাজন ॥২০৬॥

एत सम्पत्ति छाड़ि' केने गेला वृन्दावन ।
ताँरे हास्य करिते लक्ष्मी करिला साजन ॥ २०६ ॥

एत सम्पत्ति—इतना अधिक ऐश्वर्य; **छाड़ि'**—छोड़कर; **केने**—क्यों; **गेला**—वे गये; **वृन्दावन**—वृन्दावन को; **ताँरे हास्य करिते**—उनका मजाक उड़ाने के लिए; **लक्ष्मी**—लक्ष्मी देवी; **करिला**—की; **साजन**—इतनी सजावट।

अनुवाद

"उन्हें आश्चर्य हुआ कि, 'जगन्नाथजी इतना ऐश्वर्य छोड़कर वृन्दावन क्यों गये?' उनकी हँसी उड़ाने के उद्देश्य से लक्ष्मीजी ने अपने आपको सजाने का काफी प्रबन्ध किया।

''তোমার ঠাকুর, দেখ এত সম্পত্তি ছাড়ি' ।
পত্র-ফল-ফুল-লোভে গেলা পুষ্প-বাড়ী ॥২০৭॥

"तोमार ठाकुर, देख एत सम्पत्ति छाड़ि' ।
पत्र-फल-फुल-लोभे गेला पुष्प-बाड़ी ॥ २०७ ॥

तोमार ठाकुर—आपके स्वामी; **देख**—जरा देखो; **एत सम्पत्ति छाड़ि'**—इतनी सम्पत्ति छोड़कर; **पत्र-फल-फुल**—पत्ते, फल, फूल; **लोभे**—के लोभ में; **गेला**—गये; **पुष्प-बाड़ी**—गुण्डिचा की फुलवाड़ी में।

अनुवाद

"तब लक्ष्मीजी की सेविकाओं ने भगवान् जगन्नाथजी के दासों से कहा, 'तुम्हारे स्वामी भगवान् जगन्नाथ ने लक्ष्मीजी के महान् ऐश्वर्य का त्याग क्यों किया और कुछ पत्तियों, फूलों तथा फलों के लिए वे श्रीमती राधारानी का फूलों का बगीचा क्यों देखने गये?

এই কর্ম করে কাহাঁ বিদগ্ধ-শিরোমণি? ।
লক্ষ্মীর অগ্রেতে নিজ প্রভুরে দেহ' আনি''' ॥২০৮॥

एइ कर्म करे काहाँ विदग्ध-शिरोमणि? ।
लक्ष्मीर अग्रेते निज प्रभुरे देह' आनि''' ॥ २०८ ॥

एइ—ऐसा; **कर्म**—काम; **करे**—किया; **काहाँ**—कहाँ; **विदग्ध-शिरोमणि**—सभी निपुणों का प्रमुख; **लक्ष्मीर**—लक्ष्मी के; **अग्रेते**—समक्ष; **निज**—अपने; **प्रभुरे**—स्वामी को; **देह'**—पेश करो; **आनि'**—लाकर।

अनुवाद

"'तुम्हारे स्वामी हर बात में अत्यन्त पटु हैं, लेकिन तो भी वे ऐसे कार्य क्यों करते हैं? तुम लोग अपने स्वामी को लक्ष्मीजी के समक्ष लाओ।'

এত বলি' মহা-লক্ষ্মীর সব দাসী-গণে ।
কটি-বস্ত্রে বান্ধি' আনে প্রভুর নিজ-গণে ॥২০৯॥

एत बलि' महा-लक्ष्मीर सब दासी-गणे ।
कटि-वस्त्रे बान्धि' आने प्रभुर निज-गणे ॥ २०९ ॥

एत बलि'—यह कहकर; **महा-लक्ष्मीर**—लक्ष्मी देवी की; **सब**—सब; **दासी-गणे**—दासियाँ; **कटि-वस्त्रे**—अपने कमर के वस्त्रों से; **बान्धि'**—बाँधकर; **आने**—ले आईं; **प्रभुर**—जगन्नाथ के; **निज-गणे**—निजी सेवकों को।

अनुवाद

"इस तरह लक्ष्मीजी की सारी दासियाँ जगन्नाथजी के सभी दासों को बन्दी बनाकर, कटिवस्त्रों से बाँधकर, लक्ष्मीजी के समक्ष ले आईं।

লক্ষ্মীর চরণে আনি' করায় প্রণতি ।
ধন-দণ্ড লয়, আর করায় মিনতি ॥২১০॥

लक्ष्मीर चरणे आनि' कराय प्रणति ।
धन-दण्ड लय, आर कराय मिनति ॥ २१० ॥

लक्ष्मीर चरणे—लक्ष्मी देवी के चरणों में; **आनि'**—लाकर; **कराय प्रणति**—प्रणाम करवाया; **धन-दण्ड लय**—जुर्माना लिया; **आर**—और; **कराय**—करवाई; **मिनति**—मिन्नतें।

अनुवाद

"जब जगन्नाथजी के सारे दास लक्ष्मीजी के चरणकमलों के समक्ष लाये गये, तो उनको दण्ड दिया गया और उन्हें प्रणाम करने के लिए बाध्य किया गया।

রথের উপরে করে দণ্ডের তাড়ন ।
চোর-প্রায় করে জগন্নাথের সেবক-গণ ॥২১১॥

रथेर उपरे करे दण्डेर ताड़न ।
चोर-प्राय करे जगन्नाथेर सेवक-गण ॥ २११ ॥

रथेर उपरे—रथ पर; **करे**—किया; **दण्डेर ताड़न**—डण्डों से पीटा; **चोर-प्राय**—चोरों की भाँति; **करे**—उन्होंने बर्ताव किया; **जगन्नाथेर**—भगवान् जगन्नाथ के; **सेवक-गण**—निजी सेवकों ने।

अनुवाद

"फिर सारी दासियाँ रथ पर लाठियों से प्रहार करने लगीं और उन्होंने भगवान् जगन्नाथ के दासों के साथ लगभग चोरों जैसा बर्ताव किया।

সব ভৃত্য-গণ কহে,—যোড় করি' হাত ।
'কালি আনি দিব তোমার আগে জগন্নাথ' ॥২১২॥

सब भृत्य-गण कहे,—योड़ करि' हात ।
'कालि आनि दिब तोमार आगे जगन्नाथ' ॥ २१२ ॥

सब भृत्य-गण कहे—सभी सेवकों ने कहा; **योड़ करि' हात**—हाथ जोड़कर; **कालि**—कल; **आनि**—लाकर; **दिब**—हम देंगे; **तोमार**—आपके; **आगे**—आगे; **जगन्नाथ**—भगवान् जगन्नाथ को।

अनुवाद

"अन्त में भगवान् जगन्नाथ के सारे दासों ने हाथ जोड़कर लक्ष्मीजी से विनती की और उन्हें विश्वास दिलाया कि वे अगले दिन जगन्नाथजी को लाकर उनके समक्ष पेश कर देंगे।

তবে শান্ত হঞা লক্ষ্মী যায় নিজ ঘর ।
আমার লক্ষ্মীর সম্পদ্—বাক্য-অগোচর ॥২১৩॥

तबे शान्त हञा लक्ष्मी याय निज घर ।
आमार लक्ष्मीर सम्पद्—वाक्य-अगोचर ॥ २१३ ॥

तबे—तब; **शान्त हञा**—शान्त होकर; **लक्ष्मी**—लक्ष्मण देवी; **याय**—लौट गईं; **निज**

घर—अपने घर को; **आमार**—मेरी; **लक्ष्मीर**—लक्ष्मी देवी का; **सम्पद्**—ऐश्वर्य; **वाक्य-अगोचर**—अवर्णनीय।

अनुवाद

"तब लक्ष्मीजी इस प्रकार शान्त किए जाने पर अपने घर चली गईं। देखो न! हमारी लक्ष्मीजी का ऐश्वर्य वर्णनातीत है।"

दुग्ध आउटि' दधि मथे तोमार गोपी-गणे ।
आमार ठाकुरानी वैसे रत्न-सिंहासने ॥२१४॥

दुग्ध आउटि' दधि मथे तोमार गोपी-गणे ।
आमार ठाकुराणी वैसे रत्न-सिंहासने ॥ २१४॥

दुग्ध आउटि'—उबलते दूध; **दधि**—दही में; **मथे**—मथने; **तोमार**—तुम्हारी; **गोपी-गणे**—गोपियाँ; **आमार**—मेरी; **ठाकुराणी**—ठाकुरानी; **वैसे**—बैठती है; **रत्न-सिंहासने**—रत्न-जड़ित सिंहासन पर।

अनुवाद

श्रीवास ठाकुर ने स्वरूप दामोदर से आगे कहा, "आपकी गोपियाँ दूध औंटने तथा दही मथने में लगी रहती हैं, किन्तु मेरी ठकुरानी लक्ष्मीजी तो रत्नों के सिंहासन पर बैठी रहती हैं।"

नारद-प्रकृति श्रीवास करे परिहास ।
शुनि' हासे महाप्रभुर यत निज-दास ॥२१५॥

नारद-प्रकृति श्रीवास करे परिहास ।
शुनि' हासे महाप्रभुर यत निज-दास ॥ २१५॥

नारद-प्रकृति—नारद मुनि के भाव में; **श्रीवास**—श्रीवास ठाकुर ने; **करे**—किया; **परिहास**—परिहास; **शुनि'**—सुनकर; **हासे**—हँसे; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **यत**—सभी; **निज-दास**—दासगण।

अनुवाद

नारद मुनि के भाव में श्रीवास ठाकुर इस प्रकार मजाक कर रहे थे। यह सुनकर महाप्रभु के सारे निजी दास हँसने लगे।

প্রভু কহে,——শ্রীবাস, তোমাতে নারদ-স্বভাব ।
ঐশ্বর্য-ভাবে তোমাতে, ঈশ্বর-প্রভাব ॥২১৬॥

প্রভু কহে,——শ্রীবাস, তোমাতে নারদ-স্বভাব ।
ঐশ্বর্য্য-ভাবে তোমাতে, ঈশ্বর-প্রভাব ॥ ২১৬ ॥

প্রভু কহে—শ্রী চৈতন্য মহাপ্রভু ने कहा; **শ্রীবাস**—मेरे प्रिय श्रीवास; **তোমাতে**—तुम में; **নারদ-স্বভাব**—नारद का स्वभाव; **ঐশ্বর্য্য-ভাবে**—ऐश्वर्य के भाव; **তোমাতে**—तुममें; **ঈশ্বর-প্রভাব**—भगवान् की शक्ति।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने तब श्रीवास ठाकुर से कहा, "अरे श्रीवास, तुम्हारा स्वभाव ठीक नारद मुनि जैसा है। भगवान् का ऐश्वर्य तुम पर अपना सीधा असर कर रहा है।

ইঁহো দামোদর-স্বরূপ——শুদ্ধ-ব্রজবাসী ।
ঐশ্বর্য না জানে ইঁহো শুদ্ধ-প্রেমে ভাসি' ॥২১৭॥

ইঁহো দামোদর-স্বরূপ——শুদ্ধ-ব্রজবাসী ।
ঐশ্বর্য্য না জানে ইঁহো শুদ্ধ-প্রেমে ভাসি' ॥ ২১৭ ॥

ইঁহো—यहाँ; **দামোদর-স্বরূপ**—दामोदर स्वरूप गोस्वामी; **শুদ্ধ-ব্রজ-বাসী**—वृन्दावन के एक शुद्ध निवासी; **ঐশ্বর্য্য না জানে**—वे ऐश्वर्य नहीं जानते हैं; **ইঁহো**—वे; **শুদ্ধ-প্রেমে**—शुद्ध भक्ति में; **ভাসি'**—तैर रहे हैं।

अनुवाद

"स्वरूप दामोदर वृन्दावन के शुद्ध भक्त हैं। वे इतना भी नहीं जानते कि ऐश्वर्य क्या होता है, क्योंकि वे शुद्ध भक्ति में ही डूबे रहते हैं।"

স্বরূপ কহে,——শ্রীবাস, শুন সাবধানে ।
বৃন্দাবন-সম্পদেতোমার নাহি পড়ে মনে? ॥২১৮॥

স্বরূপ কহে,——শ্রীবাস, শুন সাবধানে ।
বৃন্দাবন-সম্পদ্‌তোমার নাহি পড়ে মনে? ॥ ২১৮ ॥

স্বরূপ কহে—स्वरूप दामोदर ने कहा; **শ্রীবাস**—मेरे प्रिय श्रीवास; **শুন সাবধানে**—

कृपया ध्यान से सुनो; **वृन्दावन-सम्पद्**—वृन्दावन की सम्पत्ति; **तोमार**—तुम्हारे; **नाहि**—नहीं; **पड़े**—पड़ती; **मने**—मन में।

अनुवाद

तब स्वरूप दामोदर ने उलटकर कहा, "अरे श्रीवास, तुम मेरी बात ध्यान से सुनो। तुम वृन्दावन के दिव्य ऐश्वर्य को भूल गये हो।

বৃন্দাবনে সাহজিক যে সম্পত্সিন্ধু ।
দ্বারকা-বৈকুণ্ঠ-সম্পৎ—তার এক বিন্দু ॥২১৯॥

वृन्दावने साहजिक ये सम्पत्सिन्धु ।
द्वारका-वैकुण्ठ-सम्पत्—तार एक बिन्दु ॥ २१९ ॥

वृन्दावने—वृन्दावन में; **साहजिक**—स्वाभाविक; **ये**—जो कुछ; **सम्पत्-सिन्धु**—सम्पत्ति का सागर; **द्वारका**—द्वारका का; **वैकुण्ठ-सम्पत्**—वैकुण्ठ के सभी ऐश्वर्य; **तार**—उसका; **एक बिन्दु**—एक बिन्दु।

अनुवाद

"वृन्दावन का प्राकृतिक ऐश्वर्य एक समुद्र के समान है। द्वारका तथा वैकुण्ठ का ऐश्वर्य एक बूँद के बराबर भी नहीं है।

পরম পুরুষোত্তম স্বয়ং ভগবান্ ।
কৃষ্ণ যাহাঁ ধনী তাহাঁ বৃন্দাবন-ধাম ॥২২০॥

परम पुरुषोत्तम स्वयं भगवान् ।
कृष्ण याहाँ धनी ताहाँ वृन्दावन-धाम ॥ २२० ॥

परम पुरुष-उत्तम—पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान्; **स्वयम् भगवान्**—स्वयं भगवान्; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **याहाँ**—जहाँ; **धनी**—वास्तव में धनी; **ताहाँ**—वहाँ; **वृन्दावन-धाम**—वृन्दावन धाम।

अनुवाद

"श्रीकृष्ण समस्त ऐश्वर्यों के स्वामी पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् हैं और उनका पूर्ण ऐश्वर्य केवल वृन्दावन धाम में ही प्रकट होता है।

চিন্তামণি-ময় ভূমি রত্নের ভবন ।
চিন্তামণি-গণ দাসী-চরণ-ভূষণ ॥২২১॥

चिन्तामणि-मय भूमि रत्नेर भवन ।
चिन्तामणि-गण दासी-चरण-भूषण ॥ २२१ ॥

चिन्तामणि-मय—दिव्य चिन्तामणि पत्थर से बनी; **भूमि**—भूमि; **रत्नेर**—रत्नों की; **भवन**—मूल-स्रोत; **चिन्तामणि-गण**—ऐसे चिन्तामणि पत्थर; **दासी-चरण-भूषण**—वृन्दावन की दासियों के पाद-आभूषण।

अनुवाद

"वृन्दावन धाम दिव्य चिन्तामणि से बना है। इसकी पूरी भूमि बहुमूल्य रत्नों की खान है और चिन्तामणि का प्रयोग वृन्दावन की दासियों के चरणकमलों को अलंकृत करने के लिए किया जाता है।

कल्पवृक्ष-लतार—याहाँ साहजिक-वन ।
पुष्प-फल विना केह ना मागे अन्य धन ॥ २२२ ॥
कल्पवृक्ष-लतार—याहाँ साहजिक-वन ।
पुष्प-फल विना केह ना मागे अन्य धन ॥ २२२ ॥

कल्प-वृक्ष-लतार—लताएँ तथा कल्पवृक्ष; **याहाँ**—जहाँ; **साहजिक-वन**—सहज वन; **पुष्प-फल विना**—पुष्प और फल के अलावा; **केह**—कोई भी; **ना मागे**—नहीं चाहता; **अन्य**—अन्य कोई; **धन**—सम्पत्ति।

अनुवाद

वृन्दावन कल्पवृक्ष तथा लताओं का प्राकृतिक वन है और वृन्दावन के निवासियों को इन कल्पवृक्षों के फल और फूल के अतिरिक्त किसी भी वस्तु की इच्छा नहीं रहती।

अनन्त काम-धेनु ताहाँ फिरे वने वने ।
दुग्ध-मात्र देन, केह ना मागे अन्य धने ॥ २२३ ॥
अनन्त काम-धेनु ताहाँ फिरे वने वने ।
दुग्ध-मात्र देन, केह ना मागे अन्य धने ॥ २२३ ॥

अनन्त—असीम; **काम-धेनु**—कामधेनु; **ताहाँ**—वहाँ; **फिरे**—चरती हैं **वने वने**—वन-वन में; **दुग्ध-मात्र देन**—केवल दूध देती है; **केह**—कोई भी; **ना**—नहीं; **मागे**—चाहता; **अन्य धने**—कोई और सम्पत्ति।

अनुवाद

"वृन्दावन में कामधेनु गौएँ हैं जिनकी संख्या अनन्त है। वे एक जंगल से दूसरे जंगल में चरती हैं और केवल दूध देती हैं। लोगों को और कुछ भी नहीं चाहिए।

सहज लोकेर कथा—याहाँ दिव्य-गीत ।
सहज गमन करे,—यैछे नृत्य-प्रतीत ॥२२४॥
सहज लोकेर कथा—याहाँ दिव्य-गीत ।
सहज गमन करे,—यैछे नृत्य-प्रतीत ॥ २२४॥

सहज लोकेर कथा—सामान्य लोगों का स्वाभाविक वाणी; **याहाँ**—जहाँ; **दिव्य-गीत**—दिव्य संगीत; **सहज गमन**—सहज चलना; **करे**—वे करते हैं; **यैछे**—की तरह; **नृत्य-प्रतीत**—नृत्य प्रतीत होने वाला।

अनुवाद

"वृन्दावन के लोगों की सहज वाणी संगीत जैसी लगती है और उनकी सहज चाल नृत्य जैसी प्रतीत होती है।

सर्वत्र जल—याहाँ अमृत-समान ।
चिदानन्द ज्योतिः स्वाद्य—याहाँ मूर्तिमान् ॥२२५॥
सर्वत्र जल—याहाँ अमृत-समान ।
चिदानन्द ज्योतिः स्वाद्य—याहाँ मूर्तिमान् ॥ २२५॥

सर्वत्र—हर जगह; **जल**—जल; **याहाँ**—जहाँ; **अमृत-समान**—अमृत समान; **चित्-आनन्द**—दिव्य आनन्द; **ज्योतिः**—ज्योति; **स्वाद्य**—अनुभव होता है; **याहाँ**—जहाँ; **मूर्तिमान्**—मूर्तिमान्।

अनुवाद

"वृन्दावन का जल अमृत के समान होता है और वहाँ ब्रह्मज्योति का तेज जो दिव्य आनन्द से परिपूर्ण है, साक्षात् दृष्टिगोचर होता है।

लक्ष्मी जिनि' गुण याहाँ लक्ष्मीर समाज ।
कृष्ण-वंशी करे याहाँ प्रिय-सखी-काय ॥२२६॥

लक्ष्मी जिनि' गुण ग्राहाँ लक्ष्मीर समाज ।
कृष्ण-वंशी करे ग्राहाँ प्रिय-सखी-काय ॥ २२६ ॥

लक्ष्मी—लक्ष्मी देवी; **जिनि'**—जीतकर; **गुण**—गुण; **ग्राहाँ**—जहाँ; **लक्ष्मीर समाज**—गोपियों का समाज; **कृष्ण-वंशी**—भगवान् कृष्ण की वंशी; **करे**—अपने हाथ में; **ग्राहाँ**—जहाँ; **प्रिय-सखी-काय**—एक प्रिय सखी।

अनुवाद

"वहाँ गोपियाँ भी लक्ष्मियाँ हैं और वे वैकुण्ठ में रहने वाली लक्ष्मी को मात करती हैं। वृन्दावन में भगवान् कृष्ण अपनी प्रिय संगिनी दिव्य वंशी को सदैव बजाते रहते हैं।

श्रियः कान्ताः कान्तः परम-पूरुषः कल्प-तरवो
द्रुमा भूमिश्चिन्तामणि-गण-मयी तोयममृतम् ।
कथा गानं नाट्यं गमनमपि वंशी प्रिय-सखी
चिदानन्दं ज्योतिः परमपि तदास्वाद्यमपि च ॥ २२७ ॥

श्रियः कान्ताः कान्तः परम-पुरुषः कल्प-तरवो
द्रुमा भूमिश्चिन्तामणि-गण-मयी तोयममृतम् ।
कथा गानं नाट्यं गमनमपि वंशी प्रिय-सखी
चिदानन्दं ज्योतिः परमपि तदास्वाद्यमपि च ॥ २२७ ॥

श्रियः—भाग्य की देवी; **कान्ताः**—सखियाँ; **कान्तः**—भोक्ता; **परम-पुरुषः**—परम पुरुष; **कल्प-तरवः**—कल्पवृक्ष ; **द्रुमाः**—सारे वृक्ष; **भूमिः**—भूमि; **चिन्तामणि-गण-मयी**—दिव्य चिन्तामणि रत्न से निर्मित; **तोयम्**—जल; **अमृतम्**—अमृत; **कथा**—वार्तालाप; **गानम्**—संगीत; **नाट्यम्**—नृत्य; **गमनम्**—चलना फिरना; **अपि**—भी; **वंशी**—वंशी; **प्रिय-सखी**—नित्य सखी; **चित्-आनन्दम्**—दिव्य आनन्द; **ज्योतिः**—ज्योति; **परम्**—परम; **अपि**—भी; **तत्**—वह; **आस्वाद्यम्**—हर जगह देखी जाती है; **अपि च**—भी।

अनुवाद

"'वृन्दावन की ललनाएँ—गोपियाँ—सर्वोपरि लक्ष्मियाँ हैं। पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् कृष्ण ही वृन्दावन में भोक्ता हैं। वहाँ के सारे वृक्ष कल्पतरु हैं और वहाँ की भूमि दिव्य चिन्तामणि पत्थर की बनी हुई है। यहाँ का जल अमृत है, वहाँ का वार्तालाप संगीत होता है, चलना-फिरना

नृत्य होता है और बाँसुरी कृष्ण की चिरसंगिनी है। सर्वत्र दिव्य आनन्द का तेज अनुभव किया जाता है, अतएव वृन्दावन धाम ही एकमात्र आस्वाद्य धाम है।'

तात्पर्य

यह उद्धरण *ब्रह्म-संहिता* (५.५६) से है।

चिन्तामणिश्चरण-भूषणमङ्गनानां
शृङ्गार-पुष्प-तरवस्तरवः सुराणाम् ।
वृन्दावने व्रज-धनं ननु काम-धेनु-
वृन्दानि चेति सुख-सिन्धुरहो विभूतिः ॥२२८॥

चिन्तामणिश्चरण-भूषणमङ्गनानां
शृङ्गार-पुष्प-तरवस्तरवः सुराणाम् ।
वृन्दावने व्रज-धनं ननु काम-धेनु-
वृन्दानि चेति सुख-सिन्धुरहो विभूतिः ॥ २२८ ॥

चिन्तामणिः—दिव्य चिन्तामणि; **चरण**—चरणकमल का; **भूषणम्**—आभूषण; **अङ्गनानाम्**—वृन्दावन की सभी महिलाओं का; **शृङ्गार**—शृंगार के लिए; **पुष्प-तरवः**—पुष्प-वृक्ष; **तरवः सुराणाम्**—देवताओं के वृक्ष (कल्पवृक्ष); **वृन्दावने**—वृन्दावन में; **व्रज-धनम्**—व्रज के निवासियों की विशेष सम्पत्ति; **ननु**—अवश्य; **काम-धेनु**—कामधेनु गौओं के; **वृन्दानि**—समूहों; **च**—और; **इति**—इस प्रकार; **सुख-सिन्धुः**—सुख का सागर; **अहो**—कितनी ही; **विभूतिः**—ऐश्वर्य।

अनुवाद

"'व्रजभूमि की ललनाओं के पायल (नूपुर) चिन्तामणि पत्थर के बने हुए हैं। यहाँ के वृक्ष कल्पतरु हैं और उनके फूलों से गोपियाँ अपने आपको सजाती हैं। वहाँ पर कामधेनु गौएँ भी हैं, जो असीम दूध देती हैं। ये धेनुएँ वृन्दावन की सम्पत्ति हैं। इस तरह वृन्दावन का वैभव बड़े ही आनन्द से प्रदर्शित होता है।'"

तात्पर्य

यह श्लोक बिल्वमंगल ठाकुर द्वारा रचित है और *भक्तिरसामृतसिन्धु* (२.१.१७३) से लिया गया है।

শুনি' প্রেমাবেশে নৃত্য করে শ্রীনিবাস ।
কক্ষ-তালি বাজায়, করে অট্ট-অট্ট হাস ॥২২৯॥

শুনি' প্রেমাবেশে নৃত্য করে শ্রীনিবাস ।
কক্ষ-তালি বাজায়, করে অট্ট-অট্ট হাস ॥ ২২৯ ॥

শুনি'—सुनकर; **প্রেম-আবেশে**—प्रेमावेश में; **নৃত্য**—नृत्य; **করে**—करने लगे; **শ্রীনিবাস**—श्रीवास ठाकुर; **কক্ষ-তালি**—अपनी बगल में हथेलियों से; **বাজায়**—बजाकर; **করে**—की; **অট্ট-অট্ট হাস**—बहुत ऊँचे अट्टहास करके।

अनुवाद

तब श्रीवास ठाकुर प्रेम से अभिभूत होकर नाचने लगे। वे अपनी काँख में हथेली मारकर आवाज निकालने लगे और जोर-जोर से हँसने लगे।

রাধার শুদ্ধ-রস প্রভু আবেশে শুনিল ।
সেই রসাবেশে প্রভু নৃত্য আরম্ভিল ॥২৩০॥

রাধার শুদ্ধ-রস প্রভু আবেশে শুনিল ।
সেই রসাবেশে প্রভু নৃত্য আরম্ভিল ॥ ২৩০ ॥

রাধার—श्रीमती राधारानी का; **শুদ্ধ-রস**—शुद्ध दिव्य रस; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **আবেশে শুনিল**—आवेश में आकर सुना; **সেই**—उसी; **রস-আবেশে**—दिव्य प्रेम में मग्न होकर; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **নৃত্য আরম্ভিল**—नृत्य करने लगे।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने श्रीमती राधारानी के शुद्ध दिव्य रस की इन व्याख्याओं को सुना, तो वे दिव्य प्रेम-भाव में मग्न होकर नाचने लगे।

রসাবেশে প্রভুর নৃত্য, স্বরূপের গান ।
'বল' 'বল' বলি' প্রভু পাতে নিজ-কাণ ॥২৩১॥

রসাবেশে প্রভুর নৃত্য, স্বরূপের গান ।
'বল' 'বল' বলি' প্রভু পাতে নিজ-কাণ ॥ ২৩১ ॥

রস-আবেশে—रसावेश में; **প্রভুর**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **নৃত্য**—नृत्य; **স্বরূপের গান**—

और स्वरूप दामोदर का गायन; **बल बल**—कहते चलो, कहते चलो; **बलि'**—कहकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **पाते**—फैला दिये; **निज-काण**—अपने कान।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु रस के आवेश में नाच रहे थे और स्वरूप दामोदर गा रहे थे तो महाप्रभु ने कहा, "गाते रहो! गाते रहो!" फिर महाप्रभु ने अपने कान फैला दिये।

ব্রজ-রস-গীত শুনি' প্রেম উথলিল ।
পুরুষোত্তম-গ্রাম প্রভু প্রেমে ভাসাইল ॥২৩২॥

व्रज-रस-गीत शुनि' प्रेम उथलिल ।
पुरुषोत्तम-ग्राम प्रभु प्रेमे भासाइल ॥ २३२॥

व्रज-रस-गीत—श्री वृन्दावन धाम के रस से सम्बन्धित गीत; **शुनि'**—सुनकर; **प्रेम**—दिव्य आनन्द; **उथलिल**—जाग पड़ा; **पुरुषोत्तम-ग्राम**—पुरुषोत्तम नामक (जगन्नाथ पुरी) स्थान; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **प्रेमे**—दिव्य प्रेम में; **भासाइल**—डूब गया।

अनुवाद

इस तरह वृन्दावन के गीत सुनकर महाप्रभु का प्रेम जाग्रत हुआ। इस तरह उन्होंने पुरुषोत्तम ग्राम अर्थात् जगन्नाथ पुरी को भगवत्प्रेम से आप्लावित कर दिया।

লক্ষ্মী-দেবী যথা-কালে গেলা নিজ-ঘর ।
প্রভু নৃত্য করে, হৈল তৃতীয় প্রহর ॥২৩৩॥

लक्ष्मी-देवी यथा-काले गेला निज-घर ।
प्रभु नृत्य करे, हैल तृतीय प्रहर ॥ २३३॥

लक्ष्मी-देवी—लक्ष्मी देवी; **यथा-काले**—उचित समय पर; **गेला**—लौट गईं; **निज-घर**—अपने घर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **नृत्य करे**—नृत्य करते हुए; **हैल**—हो गया; **तृतीय प्रहर**—दिन की तीसरा पहर।

अनुवाद

अन्ततः लक्ष्मीजी अपने घर लौट गईं। अभी श्री चैतन्य महाप्रभु नाच ही रहे थे कि तीसरा पहर हो गया।

চারি সম্প্রদায় গান করি' বহু শ্রান্ত হৈল ।
মহাপ্রভুর প্রেমাবেশ দ্বিগুণ বাড়িল ॥২৩৪॥

চারি সম্প্রদায় গান করি' বহু শ্রান্ত হৈল ।
মহাপ্রভুর প্রেমাবেশ দ্বিগুণ বাড়িল ॥ ২৩৪॥

চারি সম্প্রদায়—संकीर्तन के चारों दल; **গান করি'**—गायन के पश्चात्; **বহু**—बहुत; **শ্রান্ত হৈল**—थक गये; **মহাপ্রভুর**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **প্রেম-আবেশ**—प्रेमावेश; **দ্বি-গুণ**—दो गुना; **বাড়িল**—बढ़ गया।

अनुवाद

काफी गाने के बाद चारों संकीर्तन-टोलियाँ थक गईं, लेकिन महाप्रभु का प्रेमावेश बढ़कर दुगुना हो गया।

রাধা-প্রেমাবেশে প্রভু হৈলা সেই মূর্তি ।
নিত্যানন্দ দূরে দেখি' করিলেন স্তুতি ॥২৩৫॥

রাধা-প্রেমাবেশে প্রভু হৈলা সেই মূর্তি ।
নিত্যানন্দ দূরে দেখি' করিলেন স্তুতি ॥ ২৩৫॥

রাধা-প্রেম-আবেশে—श्रीमती राधारानी के प्रेमावेश में; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **হৈলা**—हो गये; **সেই মূর্তি**—उसी रूप जैसे; **নিত্যানন্দ**—नित्यानन्द प्रभु ने; **দূরে দেখি'**—दूर से देखकर; **করিলেন স্তুতি**—प्रार्थना की।

अनुवाद

श्रीमती राधारानी के प्रेमावेश में डूबकर नाचते हुए श्री चैतन्य महाप्रभु उन्हीं के रूप में दिखने लगे। नित्यानन्द प्रभु, जो दूर से इस रूप को देख रहे थे, उनकी स्तुति करने लगे।

নিত্যানন্দ দেখিয়া প্রভুর ভাবাবেশ ।
নিকটে না আইসে, রহে কিছু দূর-দেশ ॥২৩৬॥

নিত্যানন্দ দেখিয়া প্রভুর ভাবাবেশ ।
নিকটে না আইসে, রহে কিছু দূর-দেশ ॥ ২৩৬॥

নিত্যানন্দ—नित्यानन्द प्रभु; **দেখিয়া**—देखकर; **প্রভুর**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **ভাব-**

आवेश—प्रेमावेश; **निकटे**—पास; **ना आइसे**—नहीं आये; **रहे**—रहे; **किछु**—थोड़े से; **दूर-देश**—दूर।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु के भावावेश को देखकर नित्यानन्द प्रभु उनके निकट नहीं गये और कुछ दूरी पर ही रहे।

নিত্যানন্দ বিনা প্রভুকে ধরে কোন্জন ।
প্রভুর আবেশ না যায়, না রহে কীর্তন ॥২৩৭॥

নিত্যানন্দ বিনা প্রভুকে ধরে কোন্জন ।
প্রভুর আবেশ না য়ায়, না রহে কীর্তন ॥ ২৩৭॥

নিত্যানন্দ বিনা—नित्यानन्द प्रभु के अतिरिक्त; **প্রভুকে**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **ধরে**—पकड़ सकता था; **কোন্ জন**—कौन व्यक्ति; **প্রভুর**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **আবেশ**—प्रेम-भाव; **না য়ায়**—नहीं रुक सका; **না রহে**—जारी न रखा जा सका; **কীর্তন**—कीर्तन।

अनुवाद

केवल नित्यानन्द प्रभु ही ऐसे थे, जो महाप्रभु को पकड़ सकते थे, किन्तु महाप्रभु का आवेश रुकने का नाम नहीं ले रहा था। उस समय कीर्तन भी नहीं चालू रखा जा सकता था।

ভঙ্গি করি' স্বরূপ সবার শ্রম জানাইল ।
ভক্ত-গণের শ্রম দেখি' প্রভুর বাহ্য হৈল ॥২৩৮॥

ভঙ্গি করি' স্বরূপ সবার শ্রম জানাইল ।
ভক্ত-গণের শ্রম দেখি' প্রভুর বাহ্য হৈল ॥ ২৩৮॥

ভঙ্গি করি'—संकेत करके; **স্বরূপ**—स्वरूप दामोदर; **সবার**—सबकी; **শ্রম**—थकावट; **জানাইল**—बताई; **ভক্ত-গণের**—भक्तों की; **শ্রম**—थकावट; **দেখি'**—देखकर; **প্রভুর**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **বাহ্য হৈল**—बाहरी चेतना आई।

अनुवाद

तब स्वरूप दामोदर ने महाप्रभु को बतलाया कि सारे भक्त थक गये हैं। यह दशा देखकर महाप्रभु को बाह्य चेतना आ गई।

সব ভক্ত লঞা প্রভু গেলা পুষ্পোদ্যানে ।
বিশ্রাম করিয়া কৈলা মাধ্যাহ্নিক স্নানে ॥২৩৯॥

সব ভক্ত লঞা প্রভু গেলা পুষ্পোদ্যানে ।
বিশ্রাম করিয়া কৈলা মাধ্যাহ্নিক স্নানে ॥ ২৩৯ ॥

সব ভক্ত লঞা—সভী ভক্তों के साथ; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **গেলা**—गये; **পুষ্প-উদ্যানে**—पुष्प-उद्यान में; **বিশ্রাম করিয়া**—विश्राम करके; **কৈলা**—किया; **মাধ্যাহ্নিক স্নানে**—मध्याह्न में स्नान।

অনুবাদ

तब श्री चैतन्य महाप्रभु सभी भक्तों को लेकर फूल के बगीचे में आये। वहाँ पर थोड़ी देर विश्राम करने के बाद उन्होंने दोपहर का स्नान किया।

জগন্নাথের প্রসাদ আইল বহু উপহার ।
লক্ষ্মীর প্রসাদ আইল বিবিধ প্রকার ॥২৪০॥

জগন্নাথের প্রসাদ আইল বহু উপহার ।
লক্ষ্মীর প্রসাদ আইল বিবিধ প্রকার ॥ ২৪০ ॥

জগন্নাথের প্রসাদ—जगन्नाथ का प्रसाद; **আইল**—आ गया; **বহু**—बहुत; **উপহার**—भेंट; **লক্ষ্মীর প্রসাদ**—लक्ष्मी देवी का प्रसाद; **আইল**—आ पहुँचा; **বিবিধ প্রকার**—विविध प्रकार का।

অনুবাদ

तभी श्री जगन्नाथजी पर चढ़ाया गया विविध प्रकार का पर्याप्त प्रसाद आया और इसके बाद लक्ष्मीजी पर अर्पित विविध प्रकार का प्रसाद भी आया।

সবা লঞা নানা-রঙ্গে করিলা ভোজন ।
সন্ধ্যা স্নান করি' কৈল জগন্নাথ দরশন ॥২৪১॥

সবা লঞা নানা-রঙ্গে করিলা ভোজন ।
সন্ধ্যা স্নান করি' কৈল জগন্নাথ দরশন ॥ ২৪১ ॥

सबा लञा—सभी भक्तों के साथ; **नाना-रङ्गे**—अत्यन्त आनन्द सहित; **करिला भोजन**—भोजन किया; **सन्ध्या स्नान करि'**—सन्ध्या-स्नान करने के बाद; **कैल**—किया; **जगन्नाथ दरशन**—भगवान् जगन्नाथ का दर्शन।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने दोपहर का भोजन किया और शाम को स्नान करने के बाद वे जगन्नाथजी का दर्शन करने गये।

जगन्नाथ देखि' करेन नर्तन-कीर्तन ।
नरेन्द्रे जल-क्रीड़ा करे लञा भक्त-गण ॥२४२॥

जगन्नाथ देखि' करेन नर्तन-कीर्तन ।
नरेन्द्रे जल-क्रीड़ा करे लञा भक्त-गण ॥ २४२॥

जगन्नाथ—भगवान् जगन्नाथ का; **देखि'**—दर्शन करके; **करेन**—किया; **नर्तन-कीर्तन**—नृत्य तथा कीर्तन; **नरेन्द्रे**—नरेन्द्र सरोवर में; **जल-क्रीड़ा**—जल-क्रीड़ा; **करे**—की; **लञा भक्त-गण**—भक्तों के साथ।

अनुवाद

भगवान् जगन्नाथ को देखते ही श्री चैतन्य महाप्रभु नाचने और कीर्तन करने लगे। तत्पश्चात् अपने भक्तों के साथ उन्होंने नरेन्द्र सरोवर में जलक्रीड़ा की।

उद्याने आसिया कैल वन-भोजन ।
एइ-मत क्रीड़ा कैल प्रभु अष्ट-दिन ॥२४३॥

उद्याने आसिया कैल वन-भोजन ।
एइ-मत क्रीड़ा कैल प्रभु अष्ट-दिन ॥ २४३॥

उद्याने—उद्यान में; **आसिया**—आकर; **कैल**—किया; **वन-भोजन**—वन में भोजन; **एइ-मत**—इस प्रकार; **क्रीड़ा**—लीलाएँ; **कैल**—कीं; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **अष्ट-दिन**—लगातार आठ दिन तक।

अनुवाद

तत्पश्चात् फूल के बगीचे में आकर श्री चैतन्य महाप्रभु ने भोजन

किया। इस तरह आठ दिनों तक महाप्रभु सभी प्रकार की लीलाएँ लगातार करते रहे।

আর দিনে জগন্নাথের ভিতর-বিজয় ।
রথে চড়ি' জগন্নাথ চলে নিজালয় ॥২৪৪॥

আর দিনে জগন্নাথের ভিতর-বিজয় ।
রথে চড়ি' জগন্নাথ চলে নিজালয় ॥ ২৪৪॥

आर दिने—अगले दिन; **जगन्नाथेर**—भगवान् जगन्नाथ के; **भितर-विजय**—मन्दिर के अन्दर से बाहर आकर; **रथे चड़ि'**—रथ पर चढ़कर; **जगन्नाथ**—भगवान् जगन्नाथ; **चले**—लौट गये; **निज-आलय**—अपने घर को।

अनुवाद

अगले दिन भगवान् जगन्नाथ मन्दिर से बाहर निकले और रथ पर चढ़कर अपने धाम वापस चले गये।

পূর্ববত্কৈল প্রভু লঞা ভক্ত-গণ ।
পরম আনন্দে করেন নর্তন-কীর্তন ॥২৪৫॥

পূর্ববত্কৈল প্রভু লঞা ভক্ত-গণ ।
পরম আনন্দে করেন নর্তন-কীর্তন ॥ ২৪৫॥

पूर्व-वत्—पहले की तरह किया; **कैल**—किया; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **लञा**—लेकर; **भक्त-गण**—सभी भक्तों को; **परम आनन्दे**—परम आनन्द सहित; **करेन**—किया; **नर्तन-कीर्तन**—नर्तन कीर्तन।

अनुवाद

पहले की तरह श्री चैतन्य महाप्रभु तथा उनके भक्त पुनः परम आनन्दित होकर कीर्तन करने और नाचने लगे।

জগন্নাথের পুনঃ পাণ্ডু-বিজয় হইল ।
এক গুটি পট্ট-ডোরী তাঁহা টুটি' গেল ॥২৪৬॥

জগন্নাথের পুনঃ পাণ্ডু-বিজয় হইল ।
এক গুটি পট্ট-ডোরী তাঁহা টুটি' গেল ॥ ২৪৬॥

जगन्नाथेर—भगवान् जगन्नाथ; **पुनः**—का पुनः; **पाण्डु-विजय**—भगवान् को उठाने का उत्सव; **हइल**—था; **एक गुटि**—एक गुच्छा; **पट्ट-डोरी**—रेशमी रस्सियाँ; **ताँहा**—वहाँ; **टुटि' गेल**—टूट गईं।

अनुवाद

पाण्डुविजय के समय भगवान् जगन्नाथ को जब ले जाये जा रहे थे, तो रेशमी डोरियों का एक गुच्छा टूट गया।

पाण्ड-विजयेर तुलि फाटि-फुटि याय ।
जगन्नाथेर भरे तूला उड़िया पलाय ॥ २४७॥

पाण्डु-विजयेर तुलि फाटि-फुटि य्राय ।
जगन्नाथेर भरे तुला उड़िया पलाय ॥ २४७॥

पाण्डु-विजयेर—पाडुँ-विजय के उत्सव के; **तुलि**—रूई के गुच्छे; **फाटि-फुटि य्राय**—टूट फूट गये; **जगन्नाथेर भरे**—भगवान् जगन्नाथ के भार से; **तुला**—रूई; **उड़िया पलाय**—हवा में उड़ने लगी।

अनुवाद

जब जगन्नाथ के अर्चाविग्रह को ले जाया जाता है, तो उन्हें थोड़ी-थोड़ी दूरी पर रुई के गद्दों पर रखा जाता है। जब रस्सियाँ टूट गईं, तो जगन्नाथजी के भार से रुई के गद्दे भी टूट गये और उनकी रुई हवा में उड़ने लगी।

कुलीन-ग्रामी रामानन्द, सत्यराज खाँन ।
ताँरे आज्ञा दिल प्रभु करिया सम्मान ॥ २४८॥

कुलीन-ग्रामी रामानन्द, सत्यराज खाँन ।
ताँरे आज्ञा दिल प्रभु करिया सम्मान ॥ २४८॥

कुलीन-ग्रामी—कुलीन ग्राम के निवासी; **रामानन्द**—रामानन्द; **सत्यराज खाँन**—सत्यराज खान; **ताँरे**—उनको; **आज्ञा दिल**—आज्ञा दी; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **करिया सम्मान**—बहुत आदर सहित।

अनुवाद

उस शाम कुलीन ग्राम के रामानन्द वसु तथा सत्यराज खान उपस्थित थे, अतः श्री चैतन्य महाप्रभु ने बड़े आदर के साथ उन्हें यह आदेश दिया।

এই পট্ট-ডোরীর তুমি হও যজমান ।
প্রতি-বৎসর আনিবে 'ডোরী' করিয়া নির্মাণ ॥২৪৯॥

এइ पट्ट-डोरीर तुमि हओ यजमान ।
प्रति-वत्सर आनिबे 'डोरी' करिया निर्माण ॥ २४९ ॥

एइ पट्ट-डोरीर—इन रेशमी; **तुमि**—रस्सियों का तुम; **हओ**—हो जाओ; **यजमान**—पूजा करने वाले; **प्रति-वत्सर**—प्रति वर्ष; **आनिबे**—तुम्हें लानी चाहिए; **डोरी**—रस्सियाँ; **करिया निर्माण**—बनाकर।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने रामानन्द वसु और सत्यराज खान दोनों को आदेश दिया कि वे इन रस्सियों के पूजक बनें और अपने गाँव से प्रतिवर्ष रेशमी डोरियाँ लाया करें।

तात्पर्य

ऐसा प्रतीत होता है कि कुलीन ग्राम के स्थानीय निवासी रेशमी रस्सियाँ तैयार करते थे, अतएव श्री चैतन्य महाप्रभु ने रामानन्द वसु तथा सत्यराज खान से कहा कि वे प्रतिवर्ष जगन्नाथ की सेवा में रस्सियाँ लाया करें।

এত বলি' দিল তাঁরে ছিণ্ডা পট্ট-ডোরী ।
ইহা দেখি' করিবে ডোরী অতি দৃঢ় করি' ॥২৫০॥

एत बलि' दिल ताँरे छिण्डा पट्ट-डोरी ।
इहा देखि' करिबे डोरी अति दृढ़ करि' ॥ २५० ॥

एत बलि'—यह कहकर; **दिल**—दी; **ताँरे**—उनको; **छिण्डा**—टूटी हुई; **पट्ट-डोरी**—रेशमी रस्सियाँ; **इहा देखि'**—यह देखकर; **करिबे**—तुम्हें बनानी चाहिए; **डोरी**—रस्सियाँ; **अति**—बहुत; **दृढ़ करि'**—मज़बूत करके।

अनुवाद

यह कहकर श्री चैतन्य महाप्रभु ने उन्हें टूटी रेशमी डोरियाँ दिखलाईं और कहा, "इस नमूने को देखो। तुम इनसे अधिक मजबूत रस्सियाँ बनाना।"

এই পট্ট-ডোরীতে হয় 'শেষ'-অধিষ্ঠান ।
দশ-মূর্তি হঞা যেঁহো সেবে ভগবান্ ॥২৫১॥

एइ पट्ट-डोरीते हय 'शेष'-अधिष्ठान ।
दश-मूर्ति हञा येंहो सेवे भगवान् ॥ २५१ ॥

एइ पट्ट-डोरीते—इस रस्सी में; **हय**—हैं; **शेष-अधिष्ठान**—शेष नाग का निवास; **दश-मूर्ति हञा**—दस रूपों में विस्तार कर; **येंहो**—जो; **सेवे**—पूजा करते हैं; **भगवान्**—भगवान् की।

अनुवाद

फिर श्री चैतन्य महाप्रभु ने रामानन्द वसु और सत्यराज खान को बतलाया कि यह रस्सी उन भगवान् शेष का धाम है, जो दश रूपों में विस्तार करके पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् की सेवा करते हैं।

तात्पर्य

शेष नाग के वर्णन के लिए कृपया आदिलीला ५.१२३-१२४ देखें।

ভাগ্যবান্সত্যরাজ বসু রামানন্দ ।
সেবা-আজ্ঞা পাঞা হৈল পরম-আনন্দ ॥২৫২॥

भाग्यवान्सत्यराज वसु रामानन्द ।
सेवा-आज्ञा पाञा हैल परम-आनन्द ॥ २५२ ॥

भाग्यवान्—अत्यन्त भाग्यवान्; **सत्यराज**—सत्यराज; **वसु रामानन्द**—रामानन्द वसु; **सेवा-आज्ञा**—सेवा की आज्ञा ; **पाञा**—पाकर; **हैल**—हो गये; **परम**—परम; **आनन्द**—आनन्दित।

अनुवाद

महाप्रभु से सेवा करने का आदेश पाकर भाग्यशाली सत्यराज तथा रामानन्द वसु परम प्रसन्न हुए।

প্রতি বত্সর গুণ্ডিচাতে ভক্ত-গণ-সঙ্গে ।
পট্ট-ডোরী লঞা আইসে অতি বড় রঙ্গে ॥২৫৩॥

प्रति वत्सर गुण्डिचाते भक्त-गण-सङ्गे ।
पट्ट-डोरी लञा आइसे अति बड़ रङ्गे ॥ २५३ ॥

प्रति वत्सर—प्रति वर्ष; **गुण्डिचाते**—गुण्डिचा मन्दिर को साफ करने का उत्सव; **भक्त-गण-सङ्गे**—दूसरे भक्तों के साथ; **पट्ट-डोरी**—रेशमी रस्सियाँ; **लञा**—लेकर; **आइसे**—आये; **अति**—बहुत; **बड़**—बड़े; **रङ्गे**—हर्ष के साथ।

अनुवाद

उसके बाद वर्षानुवर्ष जब गुण्डिचा मन्दिर की सफाई होती, तो सत्यराज तथा रामानन्द वसु अन्य भक्तों के साथ आते और प्रसन्नतापूर्वक रेशमी डोरी लाते।

तबे जगन्नाथ याइ' बसिला सिंहासने ।
महाप्रभु घरे आइला लञा भक्त-गणे ॥२५४॥

तबे जगन्नाथ याइ' बसिला सिंहासने ।
महाप्रभु घरे आइला लञा भक्त-गणे ॥ २५४॥

तबे—उसके बाद; **जगन्नाथ**—भगवान् जगन्नाथ; **याइ'**—जाकर; **बसिला**—विराजमान हो गये; **सिंहासने**—अपने सिंहासन पर; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **घरे**—अपने निवासस्थान को; **आइला**—लौट गये; **लञा**—लेकर; **भक्त-गणे**—भक्तों को।

अनुवाद

इस तरह जगन्नाथजी अपने मन्दिर लौट आये और अपने सिंहासन पर आसीन हुए। श्री चैतन्य महाप्रभु भी अपने भक्तों सहित अपने निवासस्थान पर लौट आये।

एइ-मत भक्त-गणे यात्रा देखाइल ।
भक्त-गण लञा वृन्दावन-केलि कैल ॥२५५॥

एइ-मत भक्त-गणे यात्रा देखाइल ।
भक्त-गण लञा वृन्दावन-केलि कैल ॥ २५५॥

एइ-मत—इस प्रकार; **भक्त-गणे**—सभी भक्तों को; **यात्रा**—रथयात्रा उत्सव; **देखाइल**—दिखाया; **भक्त-गण**—भक्तों के; **लञा**—साथ; **वृन्दावन-केलि**—वृन्दावन की लीलाएँ; **कैल**—कीं।

अनुवाद

इस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपने भक्तों को रथयात्रा उत्सव दिखलाया और उनके साथ वृन्दावन लीला सम्पन्न की।

चैतन्य-गोसाञिर लीला—अनन्त, अपार ।
'सहस्र-वदन' यार नाहि पाय पार ॥२५६॥

चैतन्य-गोसाञिर लीला—अनन्त, अपार ।
'सहस्र-वदन' यार नाहि पाय पार ॥ २५६ ॥

चैतन्य-गोसाञिर—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **लीला**—लीलाएँ; **अनन्त**—अनन्त; **अपार**—असीम; **सहस्र-वदन**—भगवान् शेष जिनके हजारों मुख हैं; **यार**—जिनकी; **नाहि**—नहीं; **पाय**—मिलती; **पार**—सीमा।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाएँ अनन्त और अपार हैं। यहाँ तक कि सहस्र-वदन शेष नाग भी उनकी लीलाओं का पार नहीं पा सकते।

श्री-रूप-रघुनाथ-पदे यार आश ।
चैतन्य-चरितामृत कहे कृष्णदास ॥२५७॥

श्री-रूप-रघुनाथ-पदे यार आश ।
चैतन्य-चरितामृत कहे कृष्णदास ॥ २५७ ॥

श्री-रूप—श्रील रूप गोस्वामी; **रघुनाथ**—श्रील रघुनाथ दास गोस्वामी; **पदे**—चरणकमलों पर; **यार**—जिनकी; **आश**—आशा; **चैतन्य-चरितामृत**—*चैतन्य चरितामृत* नामक ग्रन्थ; **कहे**—वर्णन करता है; **कृष्णदास**—श्रील कृष्णदास गोस्वामी।

अनुवाद

श्री रूप तथा श्री रघुनाथ के चरणकमलों पर प्रार्थना करते हुए तथा उनकी कृपा की सदा कामना करते हुए मैं, कृष्णदास उन्हीं के चरणचिह्नों का अनुसरण करते हुए श्री चैतन्य-चरितामृत कह रहा हूँ।

इस तरह श्रीचैतन्य-चरितामृत मध्यलीला के चौदहवें अध्याय का भक्तिवेदान्त तात्पर्य पूर्ण हुआ जिसमें वृन्दावन-लीलाओं और हेरापञ्चमी यात्रा का वर्णन हुआ है ।